ISSN 2394-756X

एग्रोक्सी फसल क्रांति

मूल्य: एक प्रति 60 रुपये

वर्ष – 13 अंक – 06 | www.fasalkranti.in | हरियाणा | जून 2026

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस

जलवायु स्मार्ट खेती की ओर बढ़ रहा भारत का किसान- डॉ. बी. के. सिंह

सही तकनीक और जल प्रबंधन से मिल सकता है रिकॉर्ड मक्का उत्पादन- डॉ. एस.एल. जाट

+91-9625941688 | info@fasalkranti.in

AGRO VISION

Workshops, National Expo & Conference

November 27-30, 2026

Nagpur

JOIN THE FUTURE OF FARMING AT CENTRAL INDIA'S LARGEST AGRI SUMMIT

Why Exhibit at Agrovision 2026 ?

- Massive Farmer Outreach.
- High-Impact Networking.
- Product Launches.
- Specialised Pavilions.

As the premier platform for agricultural transformation, Agrovision offers an unparalleled opportunity for your brand to connect with the heart of India's farming community.

Following the record-breaking success of our 2025 edition, which welcomed over **3.25 lakh farmers** and **500+ participating organisations,** we invite you to be a part of the milestone **17th edition.**

Join 500+ Organisations Transforming Indian Agriculture.

Contact us to know about the Sponsorship and Exhibiting Opportunities.

| **Nagpur:** +91 97647 96709 | +91 88060 70903 | **New Delhi:** +91 98992 08916 | +91 83838 53534

| **Mumbai:** +91 98187 08445 | **Pune:** +91 99232 02884 | **Nashik:** +91 99580 36410

: agrovision@agrovisionindia.in : www.agrovisionindia.in

Scan For Enquiry

#Agrovision2026 Follow / @agrovisionindia **8383853534**

Organised By

AGROVISION FOUNDATION MM ACTIV Sci-Tech Communications

Supported by

NEW HOLLAND
स्कैन करें
और नजदीकी डीलरशिप
पर जाकर उपहार पाएं
हर काम का स्मार्ट साथी
खेती हो या व्यावसायिक उपयोग
3032 TX Smart
37 HP Cat.
27.59 kW (Cat.)
अब नए अवतार में
TX NEW HOLLAND SMART
3032
स्मार्ट गियर शिफ्टिंग
स्मार्ट माइलेज
स्मार्ट लुक
स्मार्ट स्ट्रैट एक्सल प्लैनेटरी ड्राइव
*दी गयी कीमत राज्य और चुने गए वैरिएंट के अनुसार बदल सकती है। RTO, बीमा, एक्सेसरीज एवं अन्य शुल्क अतिरिक्त होंगे।
अधिक जानकारी के लिए मिस्ड कॉल करें - 895 619 8608
www.newholland.com/in

उम्मीद से
ज़्यादा का वादा

ACE TRACTORS

50 HP Chetak DI 65 (4WD)

4 सिलिण्डर का 4088 CC दमदार इंजन

विशेषताएं

- पॉवर स्टीयरिंग
- 4088 cc का दमदार इंजन
- ड्यूल क्लच
- हैवी ड्यूटी फ्रंट एक्सल (करारो)
- लिफ्ट 2000 kg
- आगे के टायर 9.5x24
- पीछे के टायर 16.9x28
- MRF Tyre

दमदार ट्रैक्टर
शानदार परफॉर्मेंस

DI 350 NG | 40 HP

विशेषताएं

- पॉवर स्टीयरिंग
- लिफ्ट 1200 kg
- 2858 cc का दमदार इंजन
- ऑयल ब्रैक्स (तेल में डूबे)
- सिंगल / ड्यूल क्लच
- आगे के टायर 6x16
- पीछे के टायर 13.6x28
- इंजन रेटिड 1800 rpm

हर कदम हर डगर
ACE TRACTORS
हर किसान का हमसफर

100% Swadeshi

ACE ट्रैक्टर 15-90 HP में उपलब्ध

कस्टमर हेल्प लाइन
1800 1800 004

अग्रणी बैंकों एवं प्राईवेट फाइनेन्स कम्पनियों द्वारा आसान किश्तों में फाइनेंस उपलब्ध

रिक्त स्थानों में डीलरशिप के लिए सम्पर्क करें - संजय कुमार : 9540943883

ACTION CONSTRUCTION EQUIPMENT LTD.

Marketing Office :- Jajru Road, 25th Mile Stone, Mathura Road, Ballabgarh, Faridabad-121004, Haryana, India
Phone : 0129-2306111, Website : www.ace-cranes.com

Splendor+
Hero
5 करोड़~ सपनों की कहानी.
एक भरोसे की ज़ुबानी.
आज ही जुड़िए बढ़ते स्प्लेंडर परिवार के साथ और
मुस्कानों से भरे सफ़र की कीजिए शुरुआत.
Hero
Splendor+
नया Splendor+ XTEC 2.0
सेगमेंट में पहली बार ऐसे फ़ीचर्स
दाम बढ़ने से पहले ख़रीदें
आकर्षक EMI ₹99 प्रतिदिन
जल्दी करें! ऑफ़र सिर्फ़ जुलाई, 2026 तक.
हाई इंटेंसिटी पोज़िशन लैम्प के साथ LED हेडलाइट
हैज़र्ड लाइट स्विच
SMS और कॉल अलर्ट के साथ ब्लूटूथ
इको इंडिकेटर के साथ फुली डिजिटल मीटर
Splendor+ WORLD'S NO.1 MOTORCYCLE
GREEN BONUS OF ₹1000$ FOR VEHICLE SCRAPPING
pine labs PAY LATER
CASHBACK UPTO ₹7500*
TOLL FREE NO.
1800-266-0018
5 YEAR WARRANTY

विषयावली

एग्रोक्सी फसल क्रांति
मासिक कृषि पत्रिका

वर्ष 13 | जून 2026 | अंक 06

संपादकीय.....07
एग्री न्यूज.....10
कम्पनी न्यूज.....22
सही तकनीक और जल प्रबंधन से मिल सकता है रिकॉर्ड मक्का उत्पादन– डॉ. एस.एल. जाट.....31
जलवायु स्मार्ट खेती की ओर बढ़ रहा भारत का किसान– डॉ. बी. के. सिंह.....32
पोल्ट्री सेक्टर ग्रामीण भारत में रोजगार और आत्मनिर्भरता का बड़ा आधार–रणपाल धंदा.....34
नई तकनीक अपनाई, तरबूज की खेती से आर्थिक तंगी दूर भगाई.....35
आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस.....36
डॉ. नीतू शर्मा, तमन्ना एवं डॉ. संजय शर्मा
मृदा प्रबंधन से ही संभव सतत् फसल उत्पादन.....38
हनुमान प्रसाद परेवा, लक्ष्मी नारायण बैरवा, विजय सिंह मीणा, मनीष कुमार,
मूंगफली उत्पादन में बीज एवं भूमि उपचार.....40
संजय श्रीवास्तव
मृदा जांच– आवश्यकता, उद्देश्य एवं सही नमूना लेने की वैज्ञानिक विधि.....42
राहुल कुमार सिंह, श्रीप्रकाश सिंह, मनीष पाण्डेय, प्रतीक्षा सिंह, पूजा सिंह एवं नवीन कुमार सिंह
भारतीय कृषि– स्वर्णिम विरासत से विकसित भारत की ओर......44
मिथिलेश कुमार सिंह, सुधा नंदिनी, सुमीत कुमार सिंह, पुष्पा सिंह एवं सरिता कुमारी
डिजिटल क्रांति और उच्च मूल्य वाली खेती से समद्ध होता भारतीय किसान– केंद्रीय कृषि बजट–2026.............46
परदीप सिंह और लक्ष्मी रानी दुबे
जून महीने के कृषि कार्य.....48
राज सिंह – मंजेश कुमार गौतम
रसोई.....50
सेहत.....51
कुल पृष्ठ संख्या 56

इस पत्रिका में प्रकाशित लेख एवं विचार लेखकों के निजी हैं प्रकाशक/सम्पादक इसके लिए उत्तरदायी नहीं हैं।

प्रकाशक एवं मुद्रक राजबीर सिंह **द्वारा स्वामी** एग्रोक्सी क्रॉप्स सोल्यूशंस प्रा. लिमिटेड **के लिए** रावत प्रिंटर्स, सी –177, नारायणा औद्योगिक क्षेत्र, फेस –1, नई दिल्ली –110028 **से मुद्रित** तथा एक्स–96/1, गली न. 12, ब्रह्मपुरी, शाहदरा, दिल्ली–110053 **से प्रकाशित, सम्पादक** राजबीर सिंह।

सम्पर्क

ए–9, वेस्ट ज्योति नगर, दुर्गापुरी चौक, शाहदरा, दिल्ली – 110094
011–45062737
in.linkedin.com/in/fasal-kranti-972698129
info@fasalkranti.in
www.fasalkranti.in
facebook.com/fasalkranti
instagram.com/fasalkranti/
twitter.com/fasalkranti
+91 9625941688, 9811250220

सलाहकार मण्डल

डॉ. एम.एल. जाट, सचिव (डीएआरई) एवं महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली
डॉ. बलराज सिंह, पूर्व कुलपति, श्री करण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर, राजस्थान
डॉ. ए.एस. पंवार, पूर्व निदेशक, आई.आई.एफ.एस.आर., मेरठ
डॉ. आनंद शर्मा, उप–महानिदेशक, भारतीय मौसम विभाग
डॉ. सौमित्र दास, निदेशक–इंडिया इण्टरनेशनल जिंक एसोसिएशन
डॉ. एस. एन. भेंड़े, कन्ट्री एग्रोनोमिस्ट, मोजैक इंडिया प्रा.लि., गुड़गांव

सम्पादक मण्डल

डॉ. के. एन. तिवारी, वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक, लखनऊ
डॉ. जे.पी.एस. डबास, पूर्व प्रधान वैज्ञानिक, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा
डॉ. जे. पी. सिंह, पूर्व विभागाध्यक्ष, मृदा विज्ञान, चौ.च.सिं.ह.कृ.वि.वि., हिसार
डॉ. एस. एस. लठवाल, पूर्व प्रधान वैज्ञानिक, एन.डी.आर.आई., करनाल
डा. धीरज कुमार तिवारी, वैज्ञानिक शस्य विज्ञान, कृषि विज्ञान केंद्र, उन्नाव
डॉ. गजानन्द जाट, सहा. आचार्य (मृदा विज्ञान), म.प्र.कृ.प्रौ.वि.वि., उदयपुर
डॉ. आर. एच. मीणा, सहा. आचार्य (मृदा विज्ञान), म.प्र.कृ.प्रौ.वि.वि., उदयपुर
श्री राम निवास चौधरी, सहा. अनु. वैज्ञानिक, आनंद कृषि वि.वि., आनंद, गुजरात

संस्थापक	–	राजबीर सिंह
निदेशक	–	राजबीर सिंह
सम्पादक	–	राजबीर सिंह
कानूनी सलाहकार	–	संतोष प्रताप
वरिष्ठ पत्रकार	–	विपिन मिश्र
	–	इमरान इदरीसी
पत्रकार	–	फिजा काजमी
सोशल मीडिया मुखी	–	प्रदीप राणा
विडियो एडिटर	–	आयूष कुमार
निदेशक (मार्केटिंग)	–	रितिक कुमार
उपाध्यक्ष (मार्केटिंग)	–	फरहा खान
महाप्रबंधक (मार्केटिंग)	–	आरिफा खान
प्रबन्धक (विपणन)	–	तन्नू सिंह
सीनियर मार्केटिंग एक्जीक्यूटिव	–	निशा गुप्ता
मार्केटिंग एक्जीक्यूटिव	–	अंजली सिंह
		अंशिका वर्मा
		हिमांशी सैन
एकाउंट्स	–	एम सिद्दीकी
प्रसार सहायक	–	सनी चौधरी
		मोहित सिंह
सोशल मीडिया प्रबंधक	–	निशा शर्मा
		मनप्रीत कौर
डिजाइनिंग	–	धर्मेंद्र कुमार
कार्यालय सहायक	–	अंकित चौधरी
		ममता

बदलती सोच और नए भारत की उम्मीद हैं युवा किसान

सम्पादक की कलम से,

प्रिय किसान भाइयों, बहनों और युवा साथियों,

एक समय था जब गांव का हर युवा शहर की ओर भागना चाहता था। खेती को मजबूरी माना जाता था और नौकरी को सफलता का पर्याय। माता–पिता भी यही सपना देखते थे कि उनका बेटा खेत छोड़कर किसी बड़े शहर में नौकरी करे। लेकिन आज तस्वीर धीरे–धीरे बदल रही है। देश का युवा अब खेती को केवल हल और बैलों तक सीमित काम नहीं मान रहा, बल्कि इसे एक आधुनिक, सम्मानजनक और लाभकारी व्यवसाय के रूप में देखने लगा है। यह बदलाव केवल सोच का नहीं, बल्कि भारतीय कृषि के भविष्य का संकेत है।

पिछले कुछ वर्षों में हमने देखा है कि इंजीनियरिंग, मैनेजमेंट और तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वाले कई युवा खेती और एग्री–बिजनेस की ओर लौटे हैं। कोई जैविक खेती कर रहा है, कोई ड्रोन तकनीक से किसानों की मदद कर रहा है, तो कोई ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के जरिए सीधे ग्राहकों तक फल–सब्जियां पहुंचा रहा है। यह नया दौर बताता है कि खेती अब केवल परंपरा नहीं, बल्कि नवाचार और उद्यमिता का क्षेत्र बन चुकी है।

दरअसल, आज का युवा जोखिम लेने से नहीं डरता। वह नई तकनीक अपनाना चाहता है, बाजार को समझना चाहता है और खेती को मुनाफे से जोड़कर देख रहा है। यही कारण है कि पॉलीहाउस, हाइड्रोपोनिक्स, मशरूम उत्पादन, मधुमक्खी पालन, ड्रोन स्प्रेइंग और प्रोसेसिंग यूनिट जैसे क्षेत्रों में युवाओं की रुचि तेजी से बढ़ रही है। पहले जहां खेती केवल अनाज उत्पादन तक सीमित थी, वहीं अब कृषि को "एग्रीकल्चर प्लस बिजनेस" के रूप में देखा जा रहा है।

लेकिन हमें यह भी स्वीकार करना होगा कि खेती से युवाओं का जुड़ाव अभी उतना आसान नहीं है। गांवों में आज भी कई चुनौतियां मौजूद हैं। छोटी जोत, बढ़ती लागत, मौसम की अनिश्चितता और बाजार में सही दाम न मिलना युवाओं को हतोत्साहित करता है। कई बार पढ़ा–लिखा युवा खेती करना चाहता है, लेकिन परिवार और समाज उसे गंभीरता से नहीं लेते। यह सोच बदलनी होगी। जिस देश की आधी से अधिक आबादी कृषि पर निर्भर हो, वहां खेती को पिछड़ेपन का प्रतीक मानना सबसे बड़ी भूल है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि कृषि को तकनीक और शिक्षा से जोड़ा जाए। कृषि विश्वविद्यालयों और सरकारी संस्थानों को युवाओं के लिए ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम बढ़ाने होंगे, जिनसे वे खेती को व्यवसायिक दृष्टि से समझ सकें। गांवों में एग्री–स्टार्टअप को बढ़ावा देना होगा। यदि एक युवा मोबाइल ऐप बनाकर टैक्सी सेवा खड़ी कर सकता है, तो वही युवा कृषि क्षेत्र में भी बड़ा बदलाव ला सकता है।

प्रिय युवा साथियों, खेती केवल फसल उगाने का काम नहीं है। यह देश की खाद्य सुरक्षा, पर्यावरण और ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। आने वाले समय में दुनिया को सबसे अधिक जरूरत भोजन और पोषण की होगी। ऐसे में कृषि क्षेत्र में अवसर लगातार बढ़ेंगे। यदि युवा आधुनिक सोच के साथ खेती में उतरते हैं, तो वे केवल अपनी आय नहीं बढ़ाएंगे, बल्कि गांवों की तस्वीर भी बदल सकते हैं।

यह भी समझना होगा कि सोशल मीडिया के दौर में कृषि को नई पहचान मिली है। आज कई युवा किसान अपने अनुभव वीडियो और डिजिटल प्लेटफॉर्म पर साझा कर लाखों लोगों तक पहुंच रहे हैं। इससे खेती के प्रति सम्मान बढ़ा है। अब किसान केवल खेत तक सीमित नहीं, बल्कि "एग्री–इन्फ्लुएंसर" और "एग्री–उद्यमी" बन रहा है। यह बदलाव गांवों में नई ऊर्जा पैदा कर रहा है।

हालांकि, इस बदलाव को स्थायी बनाने के लिए सरकार, समाज और कृषि संस्थानों को मिलकर काम करना होगा। किसानों के बच्चों को खेती से जोड़ने के लिए आधुनिक कृषि शिक्षा, आसान ऋण, बेहतर बाजार और तकनीकी सहायता जरूरी है। यदि गांवों में इंटरनेट, कोल्ड स्टोरेज, प्रोसेसिंग यूनिट और कृषि आधारित उद्योग बढ़ेंगे, तो युवा खेती को छोड़कर नहीं भागेंगे। अंत में, यह कहना गलत नहीं होगा कि भारत की कृषि का भविष्य अब केवल अनुभवी किसानों के हाथों में नहीं, बल्कि युवा सोच और नई तकनीक के साथ आगे बढ़ रहा है। यह समय खेती को मजबूरी नहीं, अवसर मानने का है। जब देश का युवा खेतों की ओर लौटेगा, तभी गांव मजबूत होंगे और भारत आत्मनिर्भर कृषि की दिशा में तेजी से आगे बढ़ेगा।

आज जरूरत इस बात की है कि हम युवाओं को यह विश्वास दिलाएं कि खेती केवल जमीन से जुड़ा काम नहीं, बल्कि भविष्य बनाने का सबसे बड़ा माध्यम भी है।

राजबीर सिंह
संपादक

RMPCL
ZIRON
Committed to Quality
नया तरीका, नई उमंग,
मेरी फ़सले बढ़ेगी ZIRON के संग
फसल के हर पड़ाव पर मैग्नीशियम, ज़िंक, बोरॉन
से खरीफ में दिखेगा असली फर्क।
RMPCL
ZIRON POWER+
50 kg
यही है किसान के उन्नति का सही फॉर्मूला
www.rmphosphates.com
Toll free: 8956926412

Green Planet
SINCE 2002
INDIA'S NO.1 COMPANY
GREEN PLANET
Mission : Save The Mother Earth
Scan to Explore Our Products
जैविक खेती की शुरुआत, ग्रीन प्लैनेट के साथ।
24 सालों से लाखों किसानों का भरोसा!
बायो स्टिमुलेंट | ऑर्गेनिक फर्टिलाइज़र | कॉम्प्लेक्स फर्टिलाइज़र | माइक्रोन्यूट्रिएंट
BIO STIMULANT
ORGANIC FERTILIZER
COMPLEX FERTILIZER
MICRONUTRIENT FERTILIZER
Wide Network All Over
India & Abroad
POWER PLANT
Bhoomi
POWER
POTASH
PROM
ZINC SULPHATE 33% (Powder)
CALCIUM NITRATE
GROW
Bloom
Nitro King
Agriculture | Health Care | Home Care | Skin Care | Personal Care | Vet Care
Toll Free : 1800 137 4699
www.greenplanetindia.com
GP Tower, 1-Amar Garden Near Pathankot Chowk, NH-1 Jalandhar - 144004 Punjab, India

अब आधे समय में तैयार होंगी धान की नई उन्नत किस्में

तेजी से बदलते मौसम, बढ़ती आबादी और कृषि क्षेत्र की नई चुनौतियों के बीच आईसीएआर–भारतीय चावल अनुसंधान संस्थान ने अत्याधुनिक "स्पीड ब्रीडिंग" सुविधा पर काम शुरू किया है। हैदराबाद के राजेंद्रनगर स्थित यह संस्थान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के तहत देश का प्रमुख धान अनुसंधान केंद्र माना जाता है। इस नई तकनीक से धान सहित कई फसलों की उन्नत किस्में पहले की तुलना में बेहद कम समय में विकसित की जा सकेंगी।

वैज्ञानिकों के अनुसार, पारंपरिक ब्रीडिंग प्रक्रिया में किसी नई फसल किस्म को विकसित और स्थिर करने में लगभग 4 से 5 साल लगते हैं, जबकि स्पीड ब्रीडिंग तकनीक की मदद से यही काम करीब 2 साल में पूरा किया जा सकेगा। यह तकनीक नियंत्रित वातावरण पर आधारित है, जिसमें तापमान, रोशनी, प्रकाश अवधि और कार्बन डाइऑक्साइड के स्तर को वैज्ञानिक तरीके से नियंत्रित किया जाता है। इससे पौधों में फूल आने और नई पीढ़ी बनने की प्रक्रिया तेज हो जाती है। विशेषज्ञों का कहना है कि सामान्य परिस्थितियों में एक वर्ष में केवल 1 या 2 फसल चक्र पूरे हो पाते हैं, लेकिन इस तकनीक के जरिए 4 से 5 फसल चक्र पूरे किए जा सकेंगे। इससे नई किस्मों के विकास और शोध कार्यों में तेजी आएगी।

करीब 12 करोड़ रुपये की लागत से विकसित होने वाली इस परियोजना के तहत 12 अत्याधुनिक स्पीड ब्रीडिंग चौंबर बनाए जाएंगे। इनमें आधुनिक सेंसर, नियंत्रित तापमान प्रणाली और एडवांस लाइटिंग सिस्टम लगाए जाएंगे। इस परियोजना की आधारशिला एम. एल. जाट ने रखी। सुविधा पूरी होने के बाद इसे दक्षिण भारत की सबसे बड़ी स्पीड ब्रीडिंग यूनिट माना जाएगा। हालांकि यह केंद्र मुख्य रूप से धान अनुसंधान के लिए बनाया जा रहा है, लेकिन इसका लाभ गेहूं, दलहन, तिलहन और अन्य खाद्यान्न फसलों के अनुसंधान में भी मिलेगा। वैज्ञानिकों का मानना है कि यह तकनीक जीन एडिटिंग और जेनेटिक रिसर्च को भी नई गति देगी। स्पीड ब्रीडिंग तकनीक की मदद से ऐसे बीज विकसित किए जा सकेंगे जो कम पानी में अधिक उत्पादन दें, रोगों के प्रति अधिक प्रतिरोधी हों और जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों का बेहतर सामना कर सकें। इससे किसानों को कम समय में उन्नत किस्में उपलब्ध होंगी और खेती अधिक लाभकारी बन सकेगी।

असम के बाक्सा से पहली बार अमेरिका पहुंचा ओडीओपी शहद, किसानों को मिलेगा बड़ा लाभ

भारत के कृषि निर्यात और "एक जिला एक उत्पाद" (ओडीओपी) योजना को नई मजबूती देते हुए असम के बाक्सा जिले से पहली बार 20 मीट्रिक टन शहद की खेप अमेरिका के लिए रवाना की गई है। कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण की पहल पर हुआ यह निर्यात उत्तर–पूर्व भारत के कृषि उत्पादों को वैश्विक पहचान दिलाने की दिशा में अहम कदम माना जा रहा है। यह शहद असम की एपीडा–पंजीकृत कंपनी साल्ट रेंज फूड्स प्राइवेट लिमिटेड द्वारा निर्यात किया गया। इस पहल से स्थानीय मधुमक्खी पालकों और किसानों को अंतरराष्ट्रीय बाजार तक पहुंचने का अवसर मिला है, जिससे उनकी आय बढ़ने की उम्मीद है।

असम अपनी समृद्ध जैव विविधता, प्राकृतिक वन संपदा और पारंपरिक मधुमक्खी पालन संस्कृति के लिए जाना जाता है। कार्बी, मिशिंग और बोडो जैसी स्वदेशी जनजातियां लंबे समय से शहद उत्पादन और संग्रहण से जुड़ी रही हैं। यहां का शहद अपनी प्राकृतिक शुद्धता, विशिष्ट स्वाद और औषधीय गुणों के कारण खास पहचान रखता है। बोडोलैंड प्रादेशिक क्षेत्र के बाक्सा, कोकराझार, चिरांग, उदलगुरी और तामुलपुर जिले शहद उत्पादन के प्रमुख केंद्र हैं। राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड के अनुसार, वित्त वर्ष 2023–24 में असम में लगभग 1,650 मीट्रिक टन शहद का उत्पादन हुआ। इनमें बाक्सा जिले का शहद उच्च गुणवत्ता और लगभग जैविक विशेषताओं के कारण विशेष रूप से लोकप्रिय है।

विशेषज्ञों के मुताबिक, बाक्सा का वातावरण कीटनाशक मुक्त और जैव विविधता से भरपूर है, जिससे यहां उत्पादित शहद में प्राकृतिक पोषक तत्व अधिक पाए जाते हैं। इसी वजह से बाक्सा शहद को ओडीओपी योजना के तहत शामिल किया गया है। एपीडा ने इस निर्यात को सफल बनाने के लिए प्रसंस्करण इकाइयों में आधुनिक परीक्षण और प्रयोगशाला सुविधाएं उपलब्ध कराईं, ताकि अंतरराष्ट्रीय गुणवत्ता मानकों का पालन सुनिश्चित किया जा सके। जानकारी के अनुसार, निर्यात के जरिए उत्पादकों को स्थानीय बाजार की तुलना में लगभग 43 प्रतिशत अधिक कीमत मिलेगी। यह पहल उत्तर–पूर्व भारत के कृषि उत्पादों को वैश्विक बाजार से जोड़ने और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम साबित होगी।

अल नीनो (EL Nino) की स्थिति: किसान के लिए गंभीर चुनौती

चुनौतियाँ (Challenges)

औसत से कम बरसात; बारिश के बीच लंबा अंतराल (अनियमित बरसात); अत्यधिक गर्मी ; संभावित सूखा परिस्थितियाँ

समाधान ज़ायटॉनिक तकनीक – अल-नीनो मे भी बेहतर फसल

1. आधारीय प्रयोग

- ज़ायटॉनिक गोधन से जैव-पचित गोबर खाद का प्रयोग
  - मिट्टी की संरचना और कार्बन की मात्रा मे सुधार, रासायनिक खाद की कम आवश्यकता
- ज़ायटॉनिक मिनी किट का उपयोग – नर्म, हवादार मिट्टी और बेहतर जल धारण क्षमता
  - बेहतर एवं स्वस्थ अंकुरण
  - पौधों की मृत्यु दर में कमी
  - मिट्टी की जैविक उर्वरता में वृद्धि
  - कम पानी मे बेहतर फसल

2. खड़ी फसल मे प्रयोग

- ज़ायटॉनिक नर्सरी किट: खड़ी फसल मे प्रयोग
  - स्वस्थ विकास, लगातार जैविक पोषण की उपलब्धता
  - टिकाऊ फूल एवं बेहतर गुणवत्ता वाली उपज
- ज़ायटॉनिक सुरक्षा + नीम + बायो-बूस्टर : फसल को तनाव से बचाव के लिए
  - अधिक गर्मी, पानी की कमी मे वातावरण से पानी लेकर पौधों को नमी की उपलब्धता; फसल की प्राकृतिक प्रतिरोधक क्षमता मे वृद्धि
  - प्रकाश संश्लेषण मे वृद्धि से फसल का बेहतर विकास
- जैव-कीटनाशक किट : कीट एवं रोगों से प्रभावी संरक्षण और रासायनिक कीटनाशकों की बचत

For Trade And Product Enquiries Contact At
zytonic@zydexgroup.com
Toll free : 1800-12300-7666
Follow us :

किसानों की सिंचाई लागत घटाने के लिए सरकार की बड़ी तैयारी

केंद्र सरकार देश में खेती को सस्ता, आधुनिक और पर्यावरण के अनुकूल बनाने की दिशा में बड़ा कदम उठाने जा रही है। किसानों को महंगे डीजल और बढ़ती सिंचाई लागत से राहत देने के लिए सरकार जल्द ही "पीएम–कुसुम 2.0 योजना" शुरू कर सकती है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य खेतों में सौर ऊर्जा आधारित सिंचाई व्यवस्था को बढ़ावा देना और किसानों की लागत कम करना है।

सरकार का मानना है कि डीजल पंप किसानों की जेब पर अतिरिक्त बोझ डालने के साथ पर्यावरण को भी नुकसान पहुंचाते हैं। डीजल की बढ़ती कीमतों के कारण सिंचाई खर्च लगातार बढ़ रहा है, जिससे किसानों की आय प्रभावित होती है। ऐसे में पीएम–कुसुम 2.0 योजना किसानों के लिए राहत का बड़ा माध्यम बन सकती है। योजना के तहत किसानों को सोलर पंप लगाने के लिए आर्थिक सहायता और सब्सिडी दी जाएगी। खासतौर पर छोटे और सीमांत किसानों पर विशेष ध्यान दिया जाएगा, ताकि वे कम लागत में सौर सिंचाई सुविधा अपना सकें। इससे किसानों को लंबे समय तक लगभग मुफ्त बिजली जैसी सुविधा मिलेगी और खेती की लागत में कमी आएगी।

विशेषज्ञों के अनुसार, देश के कई हिस्सों में किसान अभी भी सिंचाई के लिए डीजल पंपों पर निर्भर हैं। इससे हर साल करोड़ों लीटर डीजल की खपत होती है। यदि सोलर पंपों का उपयोग बढ़ता है तो ईंधन की बचत होगी और कार्बन उत्सर्जन भी कम होगा। यही कारण है कि सरकार कृषि क्षेत्र में हरित ऊर्जा को बढ़ावा देने पर जोर दे रही है। पीएम–कुसुम योजना के पहले चरण में भी किसानों को सोलर पंप और खेतों में सोलर प्लांट लगाने के लिए सहायता दी गई थी। अब पीएम–कुसुम 2.0 में तकनीक को और आधुनिक बनाया जाएगा। माना जा रहा है कि नई योजना में स्मार्ट मॉनिटरिंग सिस्टम, अधिक क्षमता वाले सोलर पंप और आसान वित्तीय सुविधाएं शामिल की जा सकती हैं। इस योजना का एक बड़ा लाभ ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली संकट को कम करना भी होगा। जिन इलाकों में बिजली आपूर्ति कमजोर है, वहां सोलर पंप किसानों के लिए भरोसेमंद विकल्प साबित होंगे। यह योजना खेती को टिकाऊ, ऊर्जा सुरक्षित और आधुनिक बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम साबित होगी।

खरीफ 2026 के लिए उर्वरकों का रिकॉर्ड स्टॉक, किसानों को राहत

देशभर के किसानों के लिए खरीफ 2026 सीजन से पहले राहत भरी खबर सामने आई है। केंद्र सरकार ने साफ किया है कि आगामी खरीफ सीजन में उर्वरकों की कोई कमी नहीं होगी और किसानों को तय कीमतों पर ही खाद उपलब्ध कराई जाएगी। सरकार ने यह भी भरोसा दिलाया है कि उर्वरकों की अधिकतम खुदरा कीमत में कोई बढ़ोतरी नहीं की जाएगी।

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के मुताबिक, खरीफ 2026 सीजन के लिए देश में कुल 390.54 लाख मीट्रिक टन उर्वरकों की जरूरत का अनुमान लगाया गया है। इसके मुकाबले अभी देश के पास 199.65 लाख मीट्रिक टन उर्वरकों का स्टॉक मौजूद है, जो कुल मांग का 51 प्रतिशत से अधिक है। आमतौर पर 33 प्रतिशत स्टॉक पर्याप्त माना जाता है, लेकिन इस बार सरकार ने रिकॉर्ड भंडारण सुनिश्चित किया है। सरकार के अनुसार, घरेलू उत्पादन और समय पर आयात के कारण यह मजबूत स्थिति बनी है। देश में अब तक 76.78 लाख टन उर्वरकों का घरेलू उत्पादन हुआ है, जबकि 19.94 लाख टन उर्वरक आयात किए गए हैं। यूरिया का उत्पादन 46.28 लाख टन और आयात 12.51 लाख टन रहा। वहीं डीएपी, एनपीके और एमओपी जैसे उर्वरकों की भी पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित की गई है।

सरकार ने भविष्य की जरूरतों को देखते हुए वैश्विक स्तर पर खरीद प्रक्रिया भी तेज कर दी है। इसके तहत 12 लाख टन डीएपी, 4 लाख टन टीएसपी और 3 लाख टन अमोनियम सल्फेट की खरीद के लिए ग्लोबल टेंडर जारी किए गए हैं। मई और जून में अतिरिक्त 7 लाख टन एनपीके उर्वरक भारतीय बंदरगाहों पर पहुंचने की संभावना है।

केंद्र सरकार ने कहा कि किसानों को सस्ती दरों पर उर्वरक उपलब्ध कराने के लिए सब्सिडी व्यवस्था लगातार जारी रहेगी। रेलवे, बंदरगाह, उर्वरक कंपनियों और राज्य सरकारों के सहयोग से सप्लाई सिस्टम को भी मजबूत बनाया गया है, ताकि हर राज्य तक समय पर खाद पहुंच सके।

रिकॉर्ड उर्वरक स्टॉक, स्थिर कीमतें और मजबूत लॉजिस्टिक्स व्यवस्था खरीफ सीजन में बेहतर उत्पादन और किसानों की लागत कम करने में अहम भूमिका निभाएगी।

KAN BIOSYS
by DSG
स्वस्थ फसल की शुरुआत
शुभारंभ
डोज़ के साथ
TB-3
TABA-G
Granules
Organic Manure
SpeedKompost
COMPOST KINETIZER
टीबी – 3
3 किलो
नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटेशियम (NPK) उर्वरको की उपलब्धता बढ़ाने वाले जीवाणु
ताबा – जी
4 किलो
दानेदार जिंक घुलनशील जैव उर्वरक, रोगप्रतिकार क्षमता बढ़ाए
स्पीड कंपोस्ट
4 किलो
जैव विघटक जैविक कार्ब बढ़ाके, PH नियंत्रित करे
मायकोझुट्स – जी
2 किलो
जड़ों का बेहतर विकास और फास्फोरस उपलब्ध करे
मिट्टी की उपजाऊ क्षमता बढ़ाएं एवं रासायनिक खाद के साथ अनुकूल
आजही संपर्क करे -
+91 84840 06196 | +91 84840 06806
kanbiosys.com

खरीफ से पहले किसानों तक पहुंचेंगी उन्नत दलहन तकनीकें

आईसीएआर–भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान ने कर्नाटक में दलहन उत्पादन को मजबूत बनाने और किसानों तक उन्नत कृषि तकनीक पहुंचाने के उद्देश्य से एक महत्वपूर्ण प्री–खरीफ ऑनलाइन बैठक आयोजित की। यह कार्यक्रम आईसीएआर–कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान तथा कर्नाटक कृषि विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हुआ, जिसमें वैज्ञानिकों, कृषि अधिकारियों और कृषि विज्ञान केंद्रों के विशेषज्ञों ने भाग लिया। बैठक का उद्देश्य आगामी खरीफ सीजन से पहले किसानों तक नई तकनीकों, उन्नत बीजों और वैज्ञानिक खेती के तरीकों को प्रभावी रूप से पहुंचाना था, ताकि राज्य में दलहन उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाई जा सके। कार्यक्रम में करीब 100 प्रतिभागी शामिल हुए।

बैठक में गिरीश प्रसाद दीक्षित ने देश में दलहन उत्पादन की वर्तमान स्थिति पर चर्चा करते हुए कर्नाटक के योगदान को महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने कहा कि राज्य में उत्पादन बढ़ाने के लिए जिला–स्तरीय क्लस्टर आधारित रणनीति अपनाने की जरूरत है। साथ ही अरहर की नई उच्च उत्पादक किस्मों को तेजी से किसानों तक पहुंचाने और विल्ट रोग के वैज्ञानिक प्रबंधन पर जोर दिया।

वहीं रंजय सिंह ने कहा कि कृषि विज्ञान केंद्र उन्नत दलहन किस्मों और तकनीकों के प्रसार में अहम भूमिका निभा सकते हैं। उन्होंने सुझाव दिया कि प्रदर्शन आधारित तकनीक हस्तांतरण कार्यक्रमों को कृषि विभाग की वार्षिक योजनाओं में शामिल किया जाए, ताकि किसानों को नई तकनीकों का सीधा लाभ मिल सके। बैठक में वी. वेंकट सुब्रमण्यम ने संतुलित उर्वरक उपयोग और समेकित पोषक तत्व प्रबंधन पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन का असर दलहन उत्पादन पर साफ दिखाई दे रहा है, इसलिए किसानों को जलवायु–अनुकूल कृषि तकनीकों को अपनाने की जरूरत है। कर्नाटक में लगभग 34.50 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में दलहन की खेती होती है, लेकिन गुणवत्तापूर्ण बीजों की कमी बड़ी चुनौती बनी हुई है। बैठक में नई किस्मों, जैव–कीटनाशकों, सूखा प्रबंधन, रोग नियंत्रण और मिनी किट वितरण कार्यक्रम पर भी विस्तार से चर्चा हुई।

खेती और स्वास्थ्य को जोड़ने वाला 'सेहत मिशन' शुरू, पोषणयुक्त खेती पर जोर

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने खेती और स्वास्थ्य को जोड़ते हुए नई राष्ट्रीय पहल "सेहत मिशन" की शुरुआत की है। नई दिल्ली में केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री जे. पी. नड्डा और केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान की मौजूदगी में इस मिशन का शुभारंभ किया गया। यह पहल भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद और भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद की साझेदारी से शुरू हुई है।

"सेहत" यानी "कृषि परिवर्तन के माध्यम से स्वास्थ्य के लिए वैज्ञानिक उत्कृष्टता" का उद्देश्य खेती, पोषण और स्वास्थ्य के बीच वैज्ञानिक संबंध स्थापित करना है। कार्यक्रम में केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी, आईसीएमआर के महानिदेशक राजीव बहल और आईसीएआर के महानिदेशक एम. एल. जाट भी मौजूद रहे।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए जे.पी. नड्डा ने कहा कि भारत अब केवल बीमारी के इलाज पर नहीं, बल्कि रोगों की रोकथाम, समय पर पहचान और निरंतर स्वास्थ्य देखभाल पर ध्यान दे रहा है। उन्होंने कहा कि देश "प्रतिक्रियात्मक स्वास्थ्य व्यवस्था" से "सक्रिय स्वास्थ्य व्यवस्था" की ओर बढ़ रहा है। उनके अनुसार कुपोषण और मधुमेह, उच्च रक्तचाप जैसी जीवनशैली से जुड़ी बीमारियों से निपटने में यह मिशन अहम भूमिका निभाएगा।

वहीं शिवराज सिंह चौहान ने इसे ऐतिहासिक पहल बताते हुए कहा कि अब देश को केवल अधिक उत्पादन नहीं, बल्कि पोषणयुक्त और स्वास्थ्यवर्धक उत्पादन की जरूरत है। उन्होंने कहा, "जो खाना है, वही उगाना है, तभी बनेगा स्वस्थ भारत।"

मिशन के तहत पोषण से भरपूर फसलों, पौष्टिक खाद्य पदार्थों, मोटे अनाजों और एकीकृत खेती को बढ़ावा दिया जाएगा। जिंक और आयरन जैसे सूक्ष्म पोषक तत्वों से भरपूर फसलों के उत्पादन पर विशेष ध्यान रहेगा। साथ ही किसानों और खेतिहर मजदूरों के स्वास्थ्य संरक्षण, रसायनों के संतुलित उपयोग और वैज्ञानिक खेती पद्धतियों को भी मिशन में शामिल किया गया है। "सेहत मिशन" भारत की खाद्य और स्वास्थ्य नीति को नई दिशा देने के साथ किसानों, उपभोक्ताओं और पूरे स्वास्थ्य तंत्र को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

इफको (विश्व की सबसे बड़ी उर्वरक सहकारी संस्था) और जापान की मित्सुबिशी कॉर्पोरेशन के संयुक्त उद्यम के रूप में 2015 में इफको-एमसी की स्थापना हुई, जिसका उद्देश्य किसानों की आय बढ़ाने और उन्हें उच्च गुणवत्ता वाले फसल संरक्षण समाधान किफायती दामों पर उपलब्ध कराने के लिए समर्पित है। पिछले एक दशक में, इफको-एमसी ने शाकनाशी, कीटनाशी, कवकनाशी, पीजीआर और जैविक समाधानों की विस्तृत श्रृंखला विकसित की है, जो किसानों को बेहतर पैदावार, स्वस्थ फसलें और टिकाऊ खेती पद्धतियों का सहयोग देती है। हमारा सिंगल-टियर वितरण मॉडल पूरी प्रक्रिया में पारदर्शिता, दक्षता और किसान-हितैषी मूल्य सुनिश्चित करता है।

उच्च गुणवत्ता

किसानों की आय दोगुनी करने का संकल्प

सही दवा - सही दाम

किसान सुरक्षा बीमा योजना

10+ वर्षों का विश्वास

18+ राज्यों में व्यापक उपस्थिति

500+ सक्रिय प्रशिक्षित कार्यबल

350+ इफको बाज़ार आउटलेट्स

85+ उत्पादों की विस्तृत श्रृंखला

12,000+ मज़बूत वितरण नेटवर्क

75+ किसान सेवा केंद्र

4 अत्याधुनिक विनिर्माण सुविधाएं

किसान-प्रथम सोच को आगे बढ़ाते हुए, हम 'किसान सुरक्षा बीमा योजना' के अंतर्गत इफको-एमसी के उत्पाद की खरीद पर निःशुल्क व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा उपलब्ध कराते हैं। इफको-एमसी के लिए किसानों को सशक्त बनाना केवल व्यवसाय नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भारत की कृषि शक्ति को मजबूत करने की प्रतिबद्धता है।

www.iffcomc.in Toll-Free Number: 1800 309 2815 Follow Us On

खेती में AI की एंट्री, किसानों को मिलेगा मौसम और मंडी का सटीक अपडेट

भारत में खेती–किसानी तेजी से डिजिटल दौर में प्रवेश कर रही है और अब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) किसानों के लिए नई उम्मीद बनकर उभरा है। मौसम की सटीक जानकारी से लेकर मंडियों में फसलों के भाव तक, AI आधारित तकनीक खेती को आसान, सुरक्षित और ज्यादा लाभकारी बनाने में मदद कर रही है। विशेषज्ञों का मानना है कि आने वाले समय में AI खेती का सबसे बड़ा सहायक साबित हो सकता है।

देश में बदलते मौसम और अनिश्चित बारिश के कारण किसानों को हर साल भारी नुकसान झेलना पड़ता है। कभी बेमौसम बारिश तो कभी सूखा किसानों की मेहनत पर असर डालता है। ऐसे में AI आधारित प्लेटफॉर्म किसानों को पहले से मौसम की चेतावनी देने लगे हैं। यह तकनीक सैटेलाइट डेटा, मौसम विभाग की रिपोर्ट और स्थानीय आंकड़ों का विश्लेषण कर बताती है कि कब बारिश होने की संभावना है, तापमान कितना बढ़ सकता है और फसल को कब सिंचाई या दवा की जरूरत पड़ेगी।

AI तकनीक अब किसानों को मंडियों के भाव समझने में भी मदद कर रही है। नई डिजिटल प्रणालियां बाजार के पुराने रिकॉर्ड, मांग और आपूर्ति के आंकड़ों का विश्लेषण करके यह अनुमान लगाने में सक्षम हैं कि किस फसल का दाम बढ़ सकता है और कौन–सी फसल घाटे में जा सकती है। इससे किसान सही समय पर अपनी उपज बेचकर बेहतर मुनाफा कमा सकते हैं। देश के कई राज्यों में AI आधारित मोबाइल ऐप और डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग शुरू हो चुका है। किसान मोबाइल पर ही फसल रोग की पहचान, मिट्टी की जांच और उर्वरक की सही मात्रा की जानकारी प्राप्त कर रहे हैं। यदि फसल में कोई बीमारी दिखाई देती है तो किसान उसकी तस्वीर अपलोड कर तुरंत वैज्ञानिक सलाह भी ले सकते हैं। इससे कीटनाशकों का खर्च कम हो रहा है और उत्पादन बढ़ाने में मदद मिल रही है।कृषि विशेषज्ञों के अनुसार, AI तकनीक छोटे किसानों के लिए गेमचेंजर साबित हो सकती है। इससे खेती की लागत घटेगी, पानी और उर्वरकों का संतुलित उपयोग होगा और उत्पादन में सुधार आएगा। हालांकि विशेषज्ञों का कहना है कि गांवों में इंटरनेट, स्मार्टफोन और डिजिटल शिक्षा का विस्तार जरूरी है, ताकि हर किसान इस तकनीक का लाभ उठा सके।

जलवायु संकट के बीच किसानों का सहारा बन रहा राष्ट्रीय सतत् कृषि मिशन

जलवायु परिवर्तन की बढ़ती चुनौतियों के बीच केंद्र सरकार का "राष्ट्रीय सतत् कृषि मिशन" (एनएमएसए) किसानों के लिए मजबूत सुरक्षा कवच बनकर उभर रहा है। वर्षा आधारित खेती, जल संरक्षण, मृदा स्वास्थ्य सुधार और जलवायु–अनुकूल कृषि तकनीकों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से शुरू किया गया यह मिशन देश की खेती को अधिक टिकाऊ और भविष्य के अनुकूल बनाने में अहम भूमिका निभा रहा है।

भारत में करीब 60 प्रतिशत खेती वर्षा पर निर्भर है, जो कुल खाद्यान्न उत्पादन में लगभग 40 प्रतिशत योगदान देती है। बदलते मौसम, सूखा, बाढ़ और बढ़ती गर्मी जैसी चुनौतियों के कारण खेती पर गंभीर असर पड़ रहा है। इन्हीं समस्याओं से निपटने के लिए वर्ष 2014–15 में राष्ट्रीय सतत् कृषि मिशन शुरू किया गया था। मिशन के तहत वर्षा आधारित क्षेत्र विकास (आरएडी), प्रति बूंद अधिक फसल (पीडीएमसी) और मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन (एसएचएम) जैसी योजनाएं चलाई जा रही हैं। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, वर्षा आधारित क्षेत्र विकास योजना के तहत अब तक 8.50 लाख हेक्टेयर क्षेत्र को कवर किया गया है। इसके लिए 2119.84 करोड़ रुपये जारी किए गए, जिससे लगभग 14.35 लाख किसानों को लाभ मिला है। इस योजना में फसल उत्पादन के साथ पशुपालन, बागवानी और मत्स्य पालन को जोड़कर किसानों की आय बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है।

जल संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए "प्रति बूंद अधिक फसल" योजना के तहत ड्रिप और स्प्रिंकलर जैसी सूक्ष्म सिंचाई तकनीकों को अपनाया जा रहा है। वर्ष 2015–16 से अब तक लगभग 109 लाख हेक्टेयर भूमि को सूक्ष्म सिंचाई के दायरे में लाया गया है। केंद्र सरकार ने इसके लिए 26,325 करोड़ रुपये की सहायता दी है। सरकार ने अगले पांच वर्षों में 100 लाख हेक्टेयर अतिरिक्त भूमि को सूक्ष्म सिंचाई से जोड़ने का लक्ष्य रखा है।

मृदा स्वास्थ्य सुधार के लिए "मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना" भी प्रभावी साबित हो रही है। फरवरी 2026 तक देशभर में 25.79 करोड़ मृदा स्वास्थ्य कार्ड जारी किए जा चुके हैं। इन कार्डों के जरिए किसानों को मिट्टी की गुणवत्ता और पोषक तत्वों की जानकारी मिल रही है, जिससे उर्वरकों का संतुलित उपयोग संभव हो रहा है। यह मिशन किसानों की आय बढ़ाने, प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और देश की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में बड़ा कदम साबित हो रहा है।

VST
INDIA'S 1ST
MADE IN INDIA
POWER WEEDER
FINANCE AVAILABLE
VST RANGER 50
VST FT 35
VST RANGER 80
* T&C Apply
2 YEARS WARRANTY
LIFE ELECTRIFIED
1800 4190 136
www.vsttractors.com
FOR MORE DETAILS VISIT OUR NEAREST SHOWROOM

जूट खेती में तकनीक का नया दौर, JCIS से होगी रियल टाइम निगरानी

भारत का जूट क्षेत्र अब तकनीक आधारित निगरानी और वैज्ञानिक प्रबंधन के नए दौर में प्रवेश कर चुका है। राष्ट्रीय जूट बोर्ड द्वारा लागू की जा रही जूट फसल सूचना प्रणाली (JCIS) ने जूट खेती की निगरानी, उत्पादन आकलन और जोखिम प्रबंधन को अधिक आधुनिक और सटीक बना दिया है। यह प्रणाली उपग्रह तकनीक, मौसम विश्लेषण और जमीनी आंकड़ों को जोड़कर किसानों और नीति निर्माताओं को वास्तविक समय आधारित जानकारी उपलब्ध करा रही है।

राष्ट्रीय जूट बोर्ड ने भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन और भारतीय जूट निगम के सहयोग से वर्ष 2023 में इस परियोजना की शुरुआत की। इसके तहत "भुवन जंप" मोबाइल ऐप और "पीएटीएसएएन" वेब प्लेटफॉर्म विकसित किए गए हैं। "भुवन जंप" ऐप के जरिए खेतों से भू–टैग किए गए आंकड़े जुटाए जाते हैं, जबकि "पीएटीएसएएन" प्लेटफॉर्म जूट फसल की लगभग वास्तविक समय में निगरानी और विश्लेषण उपलब्ध कराता है। इस प्रणाली से पहले जूट क्षेत्र में उत्पादन और फसल क्षेत्र के आंकड़े अलग–अलग स्रोतों पर आधारित होते थे, जिनमें देरी और असमानता की समस्या रहती थी। बाढ़, सूखा, कीट प्रकोप और तापमान में बदलाव जैसी स्थितियों का समय पर आकलन नहीं हो पाता था, जिससे किसानों को नुकसान उठाना पड़ता था।

अब JCIS के जरिए उपग्रह आधारित मानचित्रण, मौसम डेटा, वनस्पति सूचकांक और मोबाइल आधारित फील्ड रिपोर्ट को एक प्लेटफॉर्म पर जोड़ा गया है। इससे फसल क्षेत्र और उत्पादन का सटीक अनुमान संभव हो पाया है। साथ ही यह प्रणाली संभावित जोखिमों की स्थिति में समय रहते चेतावनी भी जारी करती है। राष्ट्रीय जूट बोर्ड ने अपने "आई–केयर" फील्ड नेटवर्क के जरिए बड़े पैमाने पर भू–टैग किए गए डेटा का संग्रह किया है। वैज्ञानिक सैंपलिंग और उपग्रह आधारित फसल मानचित्रों की मदद से फसल कटाई प्रयोगों को भी अधिक सटीक बनाया गया है।

यह पहल जूट क्षेत्र को अधिक पारदर्शी, डेटा आधारित और वैज्ञानिक बना रही है। आने वाले समय में इस प्रणाली का विस्तार अन्य जूट उत्पादक जिलों तक किया जाएगा। साथ ही किसानों के लिए मोबाइल और एसएमएस आधारित अलर्ट सिस्टम को भी मजबूत बनाया जाएगा, ताकि वे मौसम और फसल संबंधी जोखिमों की जानकारी समय पर प्राप्त कर सकें।

दूध उत्पादन बढ़ाने के लिए सरकार का बड़ा मिशन

भारत को दूध उत्पादन में दुनिया का अग्रणी देश बनाने में ऑपरेशन फ्लड की बड़ी भूमिका रही है। अब इसी सफलता को आगे बढ़ाने के लिए "व्हाइट रेवोल्यूशन–2" को तेजी से आगे बढ़ाया जा रहा है। डेयरी और पशुपालन क्षेत्र की मौजूदा चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए यह पहल किसानों के लिए नए अवसर लेकर आई है। विशेषज्ञों का मानना है कि यह मिशन दूध उत्पादन बढ़ाने के साथ किसानों की आय, तकनीकी क्षमता और पर्यावरण संतुलन को भी मजबूत करेगा।

व्हाइट रेवोल्यूशन–2 पांच प्रमुख स्तरों पर काम करेगा। इसमें दूध उत्पादन बढ़ाने, आधुनिक तकनीक अपनाने, पर्यावरण संरक्षण, डेयरी विकास और किसानों को सशक्त बनाने पर विशेष जोर दिया गया है। यह पहल ग्रामीण महिलाओं के लिए भी लाभकारी मानी जा रही है, क्योंकि डेयरी क्षेत्र में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका है।

इस मिशन का मुख्य उद्देश्य डेयरी पशुओं की उत्पादकता बढ़ाना है। भारत में डेयरी पशुओं की उत्पादकता अभी भी बड़ी चुनौती बनी हुई है। इसे सुधारने के लिए कृत्रिम गर्भाधान, जीनोमिक चयन और आधुनिक पशुपालन तकनीकों को बढ़ावा दिया जा रहा है। साथ ही पशुओं के लिए बेहतर पोषण और उच्च गुणवत्ता वाले चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करने पर भी ध्यान दिया जा रहा है, जिससे दूध की मात्रा और गुणवत्ता दोनों में सुधार हो सके।

व्हाइट रेवोल्यूशन–2 में डिजिटल तकनीकों को भी अहम स्थान दिया गया है। डेटा एनालिटिक्स, मोबाइल हेल्थ मॉनिटरिंग ऐप्स और एआई आधारित फार्म मैनेजमेंट सिस्टम किसानों को बेहतर निर्णय लेने में मदद करेंगे। इससे उत्पादन लागत घटेगी और मुनाफा बढ़ेगा। पर्यावरण संरक्षण भी इस मिशन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। मीथेन गैस उत्सर्जन कम करने, पानी बचाने और जैविक चारा उत्पादन को बढ़ावा देने पर जोर दिया जा रहा है। इसके अलावा वेस्ट मैनेजमेंट सिस्टम को मजबूत बनाकर अतिरिक्त आय के अवसर भी तैयार किए जाएंगे।

SEEDS OF SUCCESS

SOMANI SEEDZ®

HYB BITTER GOURD - 2543

HYB BOTTLE GOURD- GOLU

HYB RADISH - CROSS X-35

HYB PUMPKIN - MAHIMA

Farmers First Choice

SOMANI KANAK SEEDZ PVT. LTD.

HEAD OFFICE: C-91/7, 2nd FLOOR, WAZIRPUR INDUSTRIAL AREA, NEW DELHI - 110052, PHONE: (+91) 47505228, 47503925, 47053926, 8587987987, EMAIL: CONTACT@SOMANISEEDZ.COM, WEBSITE: WWW.SOMANISEEDZ.COM

भारत में नैतिक और पारदर्शी वैज्ञानिक अनुसंधान को मिलेगा बढ़ावा

भारत सरकार के पशुपालन और डेयरी विभाग के अंतर्गत पशुओं पर प्रयोगों के नियंत्रण और पर्यवेक्षण के लिए समिति (CCSEA) ने नई दिल्ली में "प्रयोगशाला पशु कल्याण– नीतियां और सर्वोत्तम प्रथाएं" विषय पर राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया। सम्मेलन का उद्देश्य प्रयोगशाला पशु कल्याण मानकों को मजबूत करना, नैतिक एवं जिम्मेदार अनुसंधान को बढ़ावा देना और वैज्ञानिकों, नीति निर्माताओं व संस्थागत प्रतिनिधियों के बीच सहयोग बढ़ाना था। कार्यक्रम में देशभर के अनुसंधान संस्थानों, विश्वविद्यालयों, संस्थागत पशु आचार समितियों (IAEC), पशु चिकित्सा विशेषज्ञों और सरकारी एजेंसियों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सम्मेलन ने प्रयोगशाला पशुओं के मानवीय और नैतिक उपयोग पर चर्चा के लिए महत्वपूर्ण मंच प्रदान किया। सम्मेलन के मुख्य अतिथि केंद्रीय मत्स्यपालन, पशुपालन एवं डेयरी तथा पंचायती राज मंत्री राजीव रंजन सिंह रहे। उनके साथ केंद्रीय राज्य मंत्री एस. पी. सिंह बघेल, जॉर्ज कुरियन तथा पशुपालन एवं डेयरी विभाग के सचिव नरेश पाल गंगवार भी मौजूद रहे।

अपने संबोधन में राजीव रंजन सिंह ने कहा कि वैक्सीन विकास, नई दवाओं की खोज और वैज्ञानिक अनुसंधान में पशु–आधारित शोध की अहम भूमिका है, लेकिन इसके साथ पशुओं के प्रति संवेदनशीलता और मानवीय व्यवहार सुनिश्चित करना भी जरूरी है। उन्होंने कहा कि अनुसंधान के दौरान पशुओं की पीड़ा को न्यूनतम रखना वैज्ञानिक समुदाय की नैतिक जिम्मेदारी है।

उन्होंने देशभर के अनुसंधान संस्थानों और एनिमल हाउस में पशु कल्याण मानकों को लागू करने में CCSEA की भूमिका की सराहना की। मंत्री ने कहा कि भारत को अनुसंधान और नवाचार के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप आगे बढ़ते हुए पशु कल्याण संबंधी दिशानिर्देशों का कड़ाई से पालन करना चाहिए। सम्मेलन में वैज्ञानिकों और विशेषज्ञों ने प्रयोगशाला पशुओं की देखभाल, नैतिक प्रयोग पद्धतियों, नियामक ढांचे और संस्थागत अनुपालन जैसे विषयों पर तकनीकी सत्र में चर्चा की। कार्यक्रम के अंत में आयोजित इंटरैक्टिव सत्र में प्रतिभागियों ने संस्थागत स्तर की चुनौतियों और उनके समाधान पर विचार साझा किए। विशेषज्ञों के अनुसार यह सम्मेलन जिम्मेदार, पारदर्शी और नैतिक वैज्ञानिक अनुसंधान को बढ़ावा देने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है, जो भारत को वैश्विक मानकों के अनुरूप आगे बढ़ाने में मदद करेगा।

श्री अन्न मिशन को नई ताकत देगी अत्याधुनिक अनुसंधान लैब

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने देश में मिलेट अनुसंधान को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने की दिशा में बड़ा कदम उठाया है। जलवायु परिवर्तन, पोषण सुरक्षा और टिकाऊ कृषि के बीच "श्री अन्न" यानी मोटे अनाज को भविष्य की फसल माना जा रहा है। इसी कड़ी में आईसीएआर–भारतीय कदन्न अनुसंधान संस्थान में स्थापित एडवांस्ड न्यूट्रिजेनोमिक्स प्रयोगशाला देश के मिलेट अनुसंधान तंत्र को और मजबूत करेगी।

एम. एल. जाट ने इस अत्याधुनिक प्रयोगशाला का निरीक्षण किया। उन्होंने कहा कि मिलेट्स पोषण सुरक्षा, जलवायु–अनुकूल खेती और किसानों की टिकाऊ आजीविका के लिए मजबूत समाधान बनकर उभर रहे हैं। उन्होंने बताया कि आईसीएआर अगली पीढ़ी के अनुसंधान और वैज्ञानिक अवसंरचना को मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध है, ताकि "श्री अन्न" को वैश्विक स्तर पर नई पहचान मिल सके। यह प्रयोगशाला ग्लोबल सेंटर ऑफ एक्सीलेंस ऑन मिलेट्स के तहत विकसित की गई है। इनकी मदद से वैज्ञानिक ऐसे मिलेट्स विकसित कर सकेंगे, जो जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों को सहन करने में सक्षम हों, पोषण से भरपूर हों और अधिक उत्पादन दें। विशेषज्ञों के अनुसार, सूखा, बढ़ता तापमान और जल संकट जैसी समस्याओं के बीच बाजरा, ज्वार, रागी और कोदो जैसे मोटे अनाज कम पानी में बेहतर उत्पादन देने के कारण किसानों के लिए फायदेमंद साबित हो सकते हैं। नई प्रयोगशाला इन फसलों की पोषण गुणवत्ता और उत्पादन क्षमता बढ़ाने में अहम भूमिका निभाएगी।

प्रयोगशाला में कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित प्रेडिक्टिव ब्रीडिंग, मार्कर–असिस्टेड ब्रीडिंग और जीन एडिटिंग जैसी आधुनिक तकनीकों का भी उपयोग किया जाएगा। इससे कम समय में नई उन्नत किस्में विकसित करना संभव होगा। विशेषज्ञों का मानना है कि यह पहल किसानों की आय बढ़ाने के साथ देश में कुपोषण की समस्या से निपटने में भी मदद करेगी। इस अवसर पर सी. तारा सत्यवती ने बताया कि संस्थान किसानों, महिला समूहों और किसान उत्पादक संगठनों के बीच मिलेट आधारित आजीविका, मूल्य संवर्धन और उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए लगातार काम कर रहा है।

मज़बूत शुरुआत,
जड़ों के साथ।
KRISHAJ
KRI-SS
Mycorrhizal Bio Fertilizer
UPT
KRISHI RASAYAN EXPORTS PVT. LTD.
AGMA
Energy Pvt.Ltd.
KRISHAJ

RMPCL की नॉर्थ जोन वार्षिक कॉन्फ्रेंस संपन्न, किसानों के लिए नई रणनीतियों पर जोर

फर्टिलाइजर सेक्टर में अपनी मजबूत पहचान बना चुकी RMPCL ने अपनी नॉर्थ जोन टीम (अपेक्स टीम) की वार्षिक कॉन्फ्रेंस का आयोजन 24 से 26 अप्रैल 2026 तक Hotel Clarks Shiraz में किया। इस तीन दिवसीय कॉन्फ्रेंस में कंपनी की सेल्स, मार्केटिंग और मैनेजमेंट टीम ने हिस्सा लिया, जहां बिजनेस ग्रोथ, नई रणनीतियों और आने वाले सीजन की तैयारियों पर विस्तार से चर्चा की गई।

RMPCL कंपनी मल्टी–माइक्रोन्यूट्रिएंट से भरपूर महावीरा जिरोन पावर प्लस, सिंगल सुपर फॉस्फेट (SSP), NPK फर्टिलाइजर की विस्तृत रेंज, मिट्टी को मुलायम बनाने वाले उत्पाद, वॉटर सॉल्युबल फर्टिलाइजर, वॉटर सॉल्युबल माइक्रोन्यूट्रिएंट, प्लांट ग्रोथ रेगुलेटर (PGRs), बायो–स्टिमुलेंट और ऑर्गेनिक फर्टिलाइजर की रीपैकिंग के क्षेत्र में विशेष विशेषज्ञता रखती है। कंपनी किसानों को आधुनिक और संतुलित पोषण समाधान उपलब्ध कराने पर लगातार काम कर रही है।

कॉन्फ्रेंस के दौरान कंपनी के मैनेजिंग डायरेक्टर विनीत जैन ने नॉर्थ जोन टीम को संबोधित करते हुए कहा कि कृषि क्षेत्र तेजी से बदल रहा है और किसानों की जरूरतों के अनुसार इनोवेटिव एवं गुणवत्तापूर्ण उत्पाद उपलब्ध कराना समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। उन्होंने टीम को मार्केट में मजबूत उपस्थिति बनाए रखने, किसानों से सीधा संवाद बढ़ाने और टिकाऊ कृषि समाधान को बढ़ावा देने पर जोर दिया।

कंपनी का मानना है कि संतुलित पोषण और आधुनिक फर्टिलाइजर तकनीक के जरिए खेती की उत्पादकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया जा सकता है। इसी उद्देश्य के साथ RMPCL लगातार अपने उत्पाद पोर्टफोलियो और नेटवर्क का विस्तार कर रही है।

ICHIBAN GROUP

ichiban CROP SCIENCE LTD. (Powered by Japanese Technology)

ichicare FOUNDATION

CONGRATS AGROPACK PVT. LTD.

10 Years OF GROWTH & INNOVATION

Proud Manufacturer of 9(3) & 9(4) Technicals

Strategic Alliance Welcome

Empowering Indian Farmers through Advanced Chemistry and Cutting-Edge Technology.

INSECTICIDE

- Cyantraniliprole
- Ethiprole
- Etoxazole
- Flonicamid
- Hexythiazox
- Methoxyfenozide
- Nitenpyram
- Spirotetramat

HERBICIDE

- Clethodim
- Metamifop
- Metolachlor
- Pinoxaden
- Saflufenacil
- Carfentrazone-ethyl

FUNGICIDE

- Fluxapyroxad
- Mandipropamid
- Penconazole
- Prochloraz
- Fluopyram
- Trifloxystrobin

Ichiban Crop Science Ltd.

708-712, Best Sky Tower, Netaji Subhash Place, Pitampura, Delhi-110034

info@ichiban.net.in 011-45271800 (100 lines) www.ichiban.net.in

@ichibancrop @ichibancrop @ichibancrop @ichibancrop

भारत की एग्रोकेमिकल कंपनी एग्रो एलाइड में आईसीआईसीआई वेंचर की बड़ी हिस्सेदारी

भारत की तेजी से उभरती एग्रोकेमिकल कंपनी एग्रो एलाइड वेंचर्स को बड़ा निवेश मिला है। कंपनी ने बताया कि आईसीआईसीआई वेंचर ने अपने इंडिया एडवांटेज फंड के जरिए एग्रो एलाइड में करीब 20 मिलियन अमेरिकी डॉलर का इक्विटी निवेश किया है। इस निवेश से कंपनी अपने घरेलू और वैश्विक कारोबार को और मजबूत करने की तैयारी में है।

कंपनी के अनुसार, इस फंडिंग का उपयोग मैन्युफैक्चरिंग क्षमता बढ़ाने, स्पेशलिटी मॉलिक्यूल्स की रिसर्च एंड डेवलपमेंट को तेज करने, वैश्विक प्रोडक्ट रजिस्ट्रेशन हासिल करने और ऑपरेशनल सिस्टम को मजबूत बनाने में किया जाएगा। एग्रो एलाइड राजस्थान के कोटपुतली में अपनी मैन्युफैक्चरिंग यूनिट संचालित करती है, जिसकी सालाना उत्पादन क्षमता लगभग 30,000 मीट्रिक टन है।

एग्रो एलाइड हर्बिसाइड, इंसेक्टिसाइड और फंगीसाइड श्रेणी के एग्रोकेमिकल उत्पाद बनाती और निर्यात करती है। कंपनी के पास 15 से अधिक टेक्निकल प्रोडक्ट्स और 300 से ज्यादा फॉर्मूलेशन का पोर्टफोलियो है। इसके प्रमुख उत्पादों में 2,4–D सीरीज, मेट्रिब्यूजिन, क्लोरेंट्रानिलिप्रोएल, टोप्रामेजोन, टेम्बोट्रियोन, पायरोक्सासल्फोन और पाइमेट्रोजीन जैसे महत्वपूर्ण मॉलिक्यूल शामिल हैं।

कंपनी की कुल आय में निर्यात की हिस्सेदारी करीब 40 प्रतिशत है, जो उसकी मजबूत वैश्विक मौजूदगी को दर्शाती है। एग्रो एलाइड के पास वर्तमान में लगभग 400 ग्लोबल प्रोडक्ट रजिस्ट्रेशन हैं, जबकि 500 से अधिक नए रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया में हैं। कंपनी के उत्पाद अमेरिका, ब्राजील, यूरोप, लैटिन अमेरिका, अफ्रीका और एशिया समेत 80 से अधिक देशों में पहुंच चुके हैं।

एग्रो एलाइड के प्रमोटर और मैनेजिंग डायरेक्टर रक्षित सहगल ने कहा कि ICICI वेंचर का निवेश कंपनी की विकास रणनीति और वैश्विक विस्तार पर भरोसे का प्रतीक है। वहीं, निखिल मोहोता ने कहा कि भारत के एग्रोकेमिकल सेक्टर में वैश्विक स्तर पर बड़ी संभावनाएं हैं और एग्रो एलाइड जैसी कंपनियां इस अवसर का लाभ उठाने की मजबूत स्थिति में हैं।

रोहित शर्मा बने धर्मराज क्रॉप गार्ड लिमिटेड के ब्रांड एंबेसडर

भारत की प्रमुख एग्रोकेमिकल कंपनियों में शामिल धर्मराज क्रॉप गार्ड लिमिटेड (DCGL) ने भारतीय क्रिकेट टीम के स्टार बल्लेबाज रोहित शर्मा को अपना आधिकारिक ब्रांड एंबेसडर नियुक्त किया है। कंपनी और रोहित शर्मा के बीच यह रणनीतिक साझेदारी अगले दो वर्षों के लिए की गई है। कंपनी का कहना है कि यह सहयोग किसानों तक भरोसेमंद, आधुनिक और बेहतर प्रदर्शन वाले फसल सुरक्षा समाधान पहुंचाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। धर्मज क्रॉप गार्ड का मानना है कि रोहित शर्मा की लगातार शानदार प्रदर्शन, नेतृत्व क्षमता और भरोसेमंद छवि कंपनी के मूल्यों से पूरी तरह मेल खाती है।

कंपनी के अनुसार, यह साझेदारी किसानों के साथ कंपनी के रिश्तों को और मजबूत करेगी तथा खेती में उत्पादकता बढ़ाने और टिकाऊ विकास को बढ़ावा देने में मदद करेगी। कंपनी लंबे समय से किसानों को बेहतर फसल सुरक्षा उत्पाद उपलब्ध कराने पर काम कर रही है और अब ब्रांड की पहुंच को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर और विस्तार देने की योजना बना रही है।

इस मौके पर कंपनी के वाइस प्रेसिडेंट (मार्केटिंग) हितेश पटेल ने कहा कि रोहित शर्मा निरंतर प्रदर्शन और चौंपियन मानसिकता के प्रतीक हैं। उन्होंने कहा कि ये वही मूल्य हैं जिन पर धर्मज क्रॉप गार्ड किसानों के लिए भरोसेमंद और असरदार समाधान तैयार करता है।

वहीं, कंपनी का मानना है कि इस नई साझेदारी से ब्रांड की पहचान मजबूत होगी और किसानों तक आधुनिक कृषि समाधान अधिक प्रभावी तरीके से पहुंचाए जा सकेंगे। धर्मज क्रॉप गार्ड आने वाले समय में नए इनोवेटिव कृषि उत्पादों के जरिए किसानों की पैदावार और आय बढ़ाने पर फोकस बनाए रखेगी।

Organized By
Radeecal communications
In Association with
INTERNATIONAL YEAR OF THE WOMAN FARMER 2026
नई तकनीक के लिए
विशाल कृषि प्रदर्शन
15th Agri Asia®
Asia's Prime Exhibition On Agriculture Technology
गुजरात का नंबर 1 कृषि-प्रदर्शन
11 12 13
सितंबर 2026
हेलीपैड
एग्जिबिसन सेन्टर,
गांधीनगर, गुजरात
स्पेशल हॉल पोल्ट्री पेवेलियन
हमारा विश्लेषणात्मक सारांश
275+ प्रदर्शक
1,50,000+ विजिटरो की कुल संख्या
5000+ डीलर्स भारत भर में
500+ प्रतिनिधि
20+ सम्मेलन वक्ता
50+ अंतर्राष्ट्रीय खरीदार
Concurrent Events
DLP EXPO ASIA
DAIRY LIVESTOCK AND POULTRY EXPO
AGRI COMPONENTS
EXPO ON AGRICULTURE COMPONENTS ASIA
Supported by
GPDFA
GAMMA
IGMA
FLOWER COUNCIL OF INDIA
अपना स्टॉल अभी बुक करें
+91 91738 26807
E: agriasia@agriasia.in
W: www.agriasia.in

मेघमणि ऑर्गेनिक्स नैनो डीएपी, नैनो एनपीके और नैनो जिंक बनाएगी

मेघमनी ऑर्गेनिक्स लिमिटेड, एक पूरी तरह से इंटीग्रेटेड डायवर्सिफाइड केमिकल कंपनी है, जिसने घोषणा की है कि उसकी पूरी तरह से मालिकाना हक वाली सब्सिडियरी, मेघमनी क्रॉप न्यूट्रिशन लिमिटेड (MCNL) को नैनो फर्टिलाइजर प्रोडक्ट्स दृ नैनो डीएपी, नैनो एनपीके और नैनो जिंक बनाने के लिए मिनिस्ट्री ऑफ एग्रीकल्चर एंड फार्मर्स वेलफेयर से मंजूरी मिल गई है।

यह मंजूरी कंपनी के नेक्स्ट जेनरेशन क्रॉप न्यूट्रिशन सॉल्यूशंस के साथ भारतीय खेती को सपोर्ट करने पर लगातार फोकस को दिखाती है। ये नए प्रोडक्ट्स मेघमनी के क्रॉप न्यूट्रिशन पोर्टफोलियो को और मजबूत करेंगे और कई न्यूट्रिएंट कैटेगरी में किसानों की बदलती जरूरतों को पूरा करने की उसकी क्षमता को बढ़ाएंगे। ये प्रोडक्ट्स कंपनी की गुजरात में साणंद मैन्युफैक्चरिंग फैसिलिटी में बनाए जाएंगे, जिसमें बिना किसी एक्स्ट्रा कैपिटल खर्च के मौजूदा इंफ्रास्ट्रक्चर का इस्तेमाल किया जाएगा। इस साल खरीफ सीजन के दौरान कमर्शियल प्रोडक्शन शुरू होने की उम्मीद है।

इस डेवलपमेंट पर कमेंट करते हुए, चेयरमैन और मैनेजिंग डायरेक्टर, श्री अंकित पटेल ने कहा, यह मंजूरी मेघमनी के लिए एक अहम मील का पत्थर है क्योंकि हम क्रॉप न्यूट्रिशन सेगमेंट में अपनी मौजूदगी को मजबूत करना जारी रखे हुए हैं।

नैनो फर्टिलाइजर सस्टेनेबल खेती का भविष्य दिखाते हैं, जो बेहतर न्यूट्रिएंट्स लेते हैं, कम बर्बादी करते हैं, और फसल की बेहतर पैदावार देते हैं। हमारे पोर्टफोलियो में इन चीजों को शामिल करके, हम अपनी मार्केट पोजीशन को और मजबूत करते हैं और भारतीय किसानों के लिए कुशल और सस्टेनेबल फसल न्यूट्रिशन सॉल्यूशन देने के अपने कमिटमेंट को और पक्का करते हैं।

दिलीप संघानी बने इफको–एमसी क्रॉप साइंस प्राइवेट लिमिटेड के नए चेयरमैन

भारत की अग्रणी क्रॉप प्रोटेक्शन कंपनी इफको–एमसी क्रॉप साइंस प्राइवेट लिमिटेड ने अपनी 47वीं बोर्ड मीटिंग में बड़ा नेतृत्व परिवर्तन करते हुए दिलीप संघानी को कंपनी का नया चेयरमैन नियुक्त किया है। इस नियुक्ति को इफको सदन में बोर्ड सदस्यों और वरिष्ठ नेतृत्व की मौजूदगी में आधिकारिक मंजूरी दी गई।

कंपनी के अनुसार, यह नियुक्ति इफको–एमसी की विकास यात्रा में एक महत्वपूर्ण कदम है और कृषि क्षेत्र में नवाचार, उत्कृष्टता तथा किसान–केंद्रित सोच को और मजबूत करेगी। ऐसे समय में जब भारतीय कृषि तकनीक, उत्पादकता और टिकाऊ खेती की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रही है, कंपनी को श्री संघानी के नेतृत्व से नई दिशा मिलने की उम्मीद है। दिलीप संघानी वर्तमान में इंडियन फार्मर्स फर्टिलाइजर कोऑपरेटिव लिमिटेड के चेयरमैन भी हैं और देश के सहकारी आंदोलन के प्रमुख चेहरों में गिने जाते हैं। वे नेफेड, एनसीयूआई और गुजकोमासोल जैसे कई राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय सहकारी संगठनों में अहम जिम्मेदारियां निभा चुके हैं। इसके अलावा वे 1991 से 2004 तक चार बार अमरेली लोकसभा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं और गुजरात सरकार में कृषि, सहकारिता तथा पशुपालन जैसे महत्वपूर्ण मंत्रालयों की जिम्मेदारी भी संभाल चुके हैं।

कंपनी का मानना है कि श्री संघानी की रणनीतिक सोच और लंबे अनुभव से इफको–एमसी को देशभर में आधुनिक फसल सुरक्षा समाधान पहुंचाने और टिकाऊ कृषि को बढ़ावा देने में मदद मिलेगी। उनके नेतृत्व में कंपनी अपने इनोवेटिव प्रोडक्ट पोर्टफोलियो का विस्तार, किसानों तक पहुंच बढ़ाने और ज्ञान आधारित पहल को मजबूत करने पर फोकस करेगी।

इस अवसर पर कंपनी के उपाध्यक्ष हाजीमे कीटो, डायरेक्टर नाओहिरो योशिदा, योगेंद्र कुमार, एमडी एवं सीईओ मनोज वार्ष्णेय, ज्वाइंट सीईओ रोहित चोपड़ा और सीईओ संतोष शुक्ला सहित नेतृत्व टीम ने उन्हें बधाई दी और कंपनी को अगले विकास चरण तक पहुंचाने में उनके नेतृत्व पर भरोसा जताया।

सिंजेन्टा एआई से बढ़ा रही किसानों की ताकत

सिंजेन्टा पारंपरिक खेती को आधुनिक तकनीक से जोड़कर कृषि क्षेत्र में बड़ा बदलाव ला रही है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई), डेटा और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स के जरिए खेती को अधिक स्मार्ट और प्रभावी बनाया जा रहा है। कंपनी के चीफ इंफॉर्मेशन और डिजिटल ऑफिसर फिरोज शेख के नेतृत्व में यह डिजिटल परिवर्तन तेजी से आगे बढ़ रहा है, जहां तकनीक को सीधे किसानों के फैसलों से जोड़ा जा रहा है।

सिंजेन्टा फसल सुरक्षा उत्पादों के साथ–साथ मक्का, सोयाबीन और टमाटर जैसे बीजों के विकास में अग्रणी कंपनी है। 100 से अधिक देशों में मौजूदगी और लगभग 60,000 कर्मचारियों के साथ कंपनी ने 2025 में करीब 28.5 अरब डॉलर का कारोबार दर्ज किया। इतने बड़े स्तर पर काम करने के कारण इसका प्रभाव वैश्विक और स्थानीय दोनों कृषि व्यवस्थाओं पर साफ दिखाई देता है। कंपनी की रणनीति का केंद्र एआई और डेटा आधारित खेती है। इसके तहत वैज्ञानिक, डेटा विशेषज्ञ, इंजीनियर और कृषि विशेषज्ञ मिलकर "कम्प्यूटेशनल एग्रोनॉमी" जैसे क्षेत्रों में काम कर रहे हैं। इस तकनीक के जरिए मिट्टी, मौसम और फसल से जुड़े आंकड़ों का विश्लेषण कर किसानों को सटीक सलाह दी जाती है, जिससे उत्पादन बढ़ाने में मदद मिलती है।

एआई का सबसे बड़ा फायदा यह है कि अब विशेषज्ञों की जानकारी सीधे किसानों तक पहुंच रही है। किसान अपने स्मार्टफोन से फसल की तस्वीर लेकर तुरंत समस्या का समाधान पा सकते हैं। एआई मॉडल उस समस्या की पहचान कर स्थानीय भाषा में सुझाव देते हैं, जिससे छोटे और सीमांत किसानों को भी उन्नत तकनीक का लाभ मिल रहा है। सिंजेन्टा की एआई रणनीति चार प्रमुख हिस्सोंकृरिसर्च, सप्लाई चेन, आंतरिक सिस्टम और खेतों में उपयोगकृपर आधारित है। कंपनी के डिजिटल प्लेटफॉर्म्स 150 मिलियन एकड़ से अधिक भूमि पर काम कर रहे हैं, जिससे बड़े पैमाने पर डेटा इकट्ठा कर खेती के नए पैटर्न समझे जा रहे हैं। विशेषज्ञों के अनुसार, 2050 तक बढ़ती आबादी के बीच खाद्य उत्पादन बढ़ाना बड़ी चुनौती होगी। ऐसे में एआई, रोबोटिक्स और ऑटोमेशन का उपयोग खेती को अधिक टिकाऊ और उत्पादक बना सकता है। सिंजेन्टा का यह प्रयास भविष्य की स्मार्ट खेती की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

पेस्ट रेजिस्टेंस के बढ़ते खतरे के बीच बेस्ट एग्रोलाइफ ने अपनाई ग्लोबल MoA लेबलिंग

बेस्ट एग्रोलाइफ लिमिटेड ने अपने एग्रोकेमिकल पोर्टफोलियो में मोड ऑफ एक्शन (MoA) कोडिंग शुरू की है, क्योंकि कंपनियां फसल सुरक्षा में पेस्ट रेजिस्टेंस और सस्टेनेबिलिटी को लेकर बढ़ती चिंताओं पर ध्यान दे रही हैं। यह कदम BAL के प्रोडक्ट लेबलिंग को ग्लोबल क्लासिफिकेशन सिस्टम के साथ जोड़ता है और ऐसे समय में आया है जब एग्रीकल्चर सेक्टर में एक जैसी केमिस्ट्री के बार–बार इस्तेमाल और उनके लंबे समय तक असर को लेकर ज्यादा जांच हो रही है। MoA कोडिंग यह पहचानने में मदद करती है कि कोई प्रोडक्ट बायोलॉजिकल लेवल पर कैसे काम करता है, जिससे किसान और एग्री–एडवाइजर प्रोडक्ट रोटेशन के बारे में ज्यादा जानकारी वाले फैसले ले पाते हैं– यह एक ऐसा तरीका है जिसे एक्टिव इंग्रीडिएंट्स का असर बनाए रखने के लिए बहुत जरूरी माना जाता है। BAL के मैनेजिंग डायरेक्टर विमल कुमार ने कहा, " MoA कोडिंग एक स्टैंडर्ड रेफरेंस देती है जो खेत में ज्यादा स्ट्रक्चर्ड इस्तेमाल के फैसलों में मदद कर सकती है।"

इंडस्ट्री पार्टिसिपेंट्स तेजी से स्टीवर्डशिप प्रैक्टिस और क्लासिफिकेशन–बेस्ड इस्तेमाल के फ्रेमवर्क पर फोकस कर रहे हैं, खासकर उन खास फसलों में जहां रेजिस्टेंस की दिक्कतों ने प्रोडक्टिविटी पर असर डालना शुरू कर दिया है। लेबलिंग की पहल के साथ–साथ, कंपनी ने क्रॉप प्रोटेक्शन और बायोस्टिमुलेंट्स में अपने पोर्टफोलियो को बढ़ाया है, जो इंटीग्रेटेड सॉल्यूशंस की ओर एक बड़े कदम का संकेत है।

बेस्ट एग्रोलाइफ लिमिटेड के बारे में

बेस्ट एग्रोलाइफ लिमिटेड (BAL) एक रिसर्च–बेस्ड एग्रोकेमिकल कंपनी है जो क्रॉप प्रोटेक्शन और प्लांट न्यूट्रिशन सॉल्यूशंस पर फोकस करती है। कंपनी 530 से ज्यादा फॉर्मूलेशन देती है और उसके पास 130 से ज्यादा टेक्निकल मैन्युफैक्चरिंग लाइसेंस हैं।

यह गजरौला, ग्रेटर नोएडा और जम्मू और कश्मीर में मैन्युफैक्चरिंग फैसिलिटी चलाती है, जिसमें टेक्निकल्स के लिए 7,000 MTPA और फॉर्मूलेशन के लिए 35,000 MTPA की कुल कैपेसिटी है। कंपनी का पूरे भारत में 7,000 से ज्यादा पार्टनर्स का डिस्ट्रीब्यूशन नेटवर्क है और यह गजरौला, नोएडा और मुंबई में रिसर्च सेंटर चलाती है।

सब से मोटा दाना, दमदार उत्पादन –बायोसीड अल्टिमैक्स गजराज का वादा!

श्रीराम बायोसीड जेनेटिक्स ने भारतीय किसानों के लिए एक और बड़ी उपलब्धि हासिल करते हुए अपने हाइब्रिड मोटा धान सेगमेंट में पेश किया है — **बायोसीड अल्टिमैक्स गजराज**। लगभग 7 वर्षों की लगातार रिसर्च और डेवलपमेंट के बाद तैयार किया गया यह हाइब्रिड धान आज किसानों के बीच तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। खास बात यह है कि बाजार में लॉन्च होने के सिर्फ एक साल के भीतर ही यह मोटा हाइब्रिड धान सेगमेंट में "सबसे मोटा धान" के रूप में अपनी पहचान बना चुका है।

देशभर के किसान इस हाइब्रिड को लेकर बेहद उत्साहित हैं, क्योंकि यह केवल नाम से ही नहीं बल्कि अपने प्रदर्शन से भी "गजराज" साबित हो रहा है। जिस तरह गजराज हाथी अपनी ताकत, विशालता और मजबूती के लिए जाना जाता है, उसी तरह **अल्टिमैक्स गजराज** किसानों को देता है दमदार उत्पादन और भरोसेमंद परिणाम।

इस हाइब्रिड की सबसे बड़ी खासियत है इसके भारी और मोटे दाने, जो किसानों को बेहतर उत्पादन के साथ अधिक लाभ दिलाने में मदद करते हैं। मजबूत पौधे होने के कारण यह गिरने के प्रति सहनशील है और विभिन्न परिस्थितियों में अच्छा प्रदर्शन करता है।

इस हाइब्रिड की अवधि लगभग **110 से 115 दिन** है तथा इसके **1000 दानों** का वजन करीब **34.8 ग्राम** तक पहुंचता है, जो इसे मोटा धान सेगमेंट में बेहद दमदार और आकर्षक बनाता है।

आज कई राज्यों के किसान इस हाइब्रिड को अपनाकर बेहतर उत्पादन और अधिक मुनाफे का अनुभव कर रहे हैं। यही वजह है कि **बायोसीड अल्टिमैक्स गजराज** बहुत कम समय में किसानों की पहली पसंद बनता जा रहा है और मोटा धान सेगमेंट में नई पहचान स्थापित कर रहा है।

किसानों के लिए उन्नत पोषण समाधान लेकर आया ठाकर केमिकल्स

Feel Secure with Pure
THAKAR CHEMICALS LIMITED®

भारतीय एग्रीकल्चरल इनपुट इंडस्ट्री की प्रमुख कंपनी ठाकर केमिकल्स लिमिटेड ने भारतीय बाजार में पेटेंट प्राप्त फसल पोषण समाधान लॉन्च करने के लिए एक प्रतिष्ठित अमेरिकी |हज्मबी इनोवेशन कंपनी के साथ रणनीतिक साझेदारी की घोषणा की है। कंपनी का कहना है कि यह सहयोग भारतीय किसानों तक विश्वस्तरीय कृषि तकनीक पहुंचाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगा। इस साझेदारी का मुख्य उद्देश्य भारतीय खेती की मौजूदा चुनौतियों का समाधान करते हुए किसानों को आधुनिक और वैज्ञानिक न्यूट्रिशन सॉल्यूशंस उपलब्ध कराना है। कंपनी के अनुसार, इन एडवांस्ड प्रोडक्ट्स के जरिए प्रति एकड़ फसल उत्पादन बढ़ाने, मिट्टी की गुणवत्ता सुधारने और टिकाऊ खेती को बढ़ावा देने में मदद मिलेगी। ठाकर केमिकल्स लिमिटेड के मैनेजिंग डायरेक्टर राज कुमार गुप्ता ने कहा कि यह पार्टनरशिप कंपनी के प्रोडक्ट पोर्टफोलियो को और अधिक मजबूत बनाएगी। उन्होंने कहा, "हमारा लक्ष्य भारतीय किसानों को ऐसी आधुनिक तकनीक उपलब्ध कराना है, जिससे उनकी उत्पादकता बढ़े और खेती अधिक लाभकारी बन सके। यह सहयोग उसी दिशा में एक बड़ा कदम है।" कंपनी के प्रोजेक्ट्स डायरेक्टर सुमित गुप्ता ने भी इस साझेदारी को लेकर उत्साह जताया। उन्होंने कहा कि इस नए सहयोग से कंपनी के डीलर नेटवर्क को नई ताकत मिलेगी और भविष्य में अन्य पेटेंटेड कृषि तकनीकों को भारत में लाने के अवसर भी खुलेंगे। वहीं, सेल्स एंड मार्केटिंग डायरेक्टर विवेक मित्तल ने कहा कि कंपनी के पोर्टफोलियो में इस नए उत्पाद के शामिल होने से एक बड़ी कमी पूरी हुई है। उनके अनुसार, यह तकनीक भारतीय खेती के लिए "गेम–चेंजर" साबित हो सकती है और किसानों को बेहतर परिणाम देने में मदद करेगी।

कंपनी का मानना है कि इन पेटेंटेड क्रॉप न्यूट्रिशन सॉल्यूशंस के आने से घरेलू फसल पोषण बाजार में नई संभावनाएं पैदा होंगी। साथ ही किसानों को बेहतर उत्पादन, उच्च गुणवत्ता वाली फसल और टिकाऊ कृषि पद्धतियों का लाभ मिलेगा। ठाकर केमिकल्स लिमिटेड भारत में उच्च गुणवत्ता वाले कृषि इनपुट्स के निर्माण और मार्केटिंग के लिए जानी जाती है। कंपनी अपने व्यापक डीलर नेटवर्क के माध्यम से किसानों को फसल सुरक्षा और न्यूट्रिशन से जुड़े समाधान उपलब्ध कराती है।

महाराष्ट्र के 16 ACE डीलर्स ने देखा भारत की आधुनिक ट्रैक्टर निर्माण क्षमता का उत्कृष्ट उदाहरण

Action Construction Equipment Limited द्वारा महाराष्ट्र के 16 प्रमुख ट्रैक्टर डीलर्स के लिए 18 मई 2026 को दो दिवसीय प्लांट विजिट एवं डीलर इंटरैक्शन कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य डीलर्स को ACE की आधुनिक ट्रैक्टर निर्माण क्षमता, तकनीकी मजबूती, गुणवत्ता मानकों एवं भविष्य की विकास रणनीति से प्रत्यक्ष रूप से अवगत कराना था। इस दौरान डीलर्स ने ACE के प्लांट 1, प्लांट 2, प्लांट 5, प्लांट 6 एवं प्लांट 8 का विस्तृत भ्रमण किया। साथ ही इंजन मैन्युफैक्चरिंग यूनिट, ट्रांसमिशन असेंबली सेक्शन, अत्याधुनिक मशीन शॉप एवं हाई–टेक पेंट शॉप का भी अवलोकन किया। डीलर्स ने उत्पादन प्रक्रिया के प्रत्येक चरण को नजदीक से देखा, जिसमें आधुनिक CNC मशीनिंग, रोबोटिक एवं प्रिसिजन आधारित कंपोनेंट प्रोसेसिंग, इंजन टेस्टिंग, ट्रांसमिशन क्वालिटी चेक, डिजिटल निरीक्षण प्रणाली एवं एडवांस पेंटिंग टेक्नोलॉजी प्रमुख आकर्षण रहे। आधुनिक मशीनरी एवं व्यवस्थित उत्पादन प्रणाली को देखकर डीलर्स ने ACE की तकनीकी क्षमता एवं गुणवत्ता प्रतिबद्धता की सराहना की।

डीलर्स ने कहा कि ACE केवल ट्रैक्टर निर्माण नहीं कर रहा, बल्कि भारतीय किसानों की जरूरतों के अनुसार मजबूत, विश्वसनीय एवं तकनीकी रूप से उन्नत मशीनें तैयार कर रहा है। कई डीलर्स ने यह भी कहा कि इस विजिट के बाद ACE ब्रांड के प्रति उनका विश्वास और अधिक मजबूत हुआ है। इस अवसर पर ACE के चेयरमैन श्री विजय अग्रवाल ने डीलर्स से संवाद करते हुए कंपनी की दीर्घकालिक विकास योजनाओं, नए उत्पाद विकास, गुणवत्ता सुधार एवं ग्रामीण बाजार विस्तार रणनीति की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि ACE अपने डीलर्स को कंपनी की विकास यात्रा का अभिन्न हिस्सा मानता है। कार्यक्रम में ACE के सीजीएम (कृषि व्यवसाय इकाई) श्री रविंद्र सिंह खनेजा ने किसानों तक उच्च गुणवत्ता वाले ट्रैक्टर एवं बेहतर सर्विस अनुभव पहुंचाने पर जोर दिया। उन्होंने डीलर्स से बाजार में आक्रामक गतिविधियों, ग्राहक संपर्क एवं मजबूत रिटेल नेटवर्क निर्माण का आग्रह किया। इस अवसर पर महाराष्ट्र के स्टेट हेड श्री जुगल किशोर पांडे, श्री पंकज अयाचित, सर्विस हेड श्री हरीश अग्रे, रिटेल हेड श्री शैलेंद्र सिंह तथा ट्रैक्टर ट्रेनिंग एवं एक्सचेंज प्रमुख श्री मनीष भी उपस्थित रहे। दो दिवसीय इस दौरे के दौरान डीलर्स में उत्साह देखने को मिला। कई डीलर्स ने महाराष्ट्र में ACE की बाजार हिस्सेदारी बढ़ाने, किसान संपर्क कार्यक्रम आयोजित करने एवं रिटेल सेल्स को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने का संकल्प व्यक्त किया। कार्यक्रम का समापन सकारात्मक संवाद एवं भविष्य में महाराष्ट्र के ट्रैक्टर बाजार में ACE को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने के सामूहिक संकल्प के साथ हुआ।

अतुल ने भारतीय किसानों के लिए तीन नए फसल सुरक्षा उत्पाद लॉन्च किए

अतुल लिमिटेड ने भारत में फसल की पैदावार बढ़ाने और टिकाऊ खेती के तरीकों को आगे बढ़ाने के लिए तीन खास फसल सुरक्षा प्रोडक्ट दृ मायलोनिस, सैलिक्स गोल्ड और टिकाडिस– पेश किए हैं। नए लॉन्च किए गए प्रोडक्ट पोर्टफोलियो में तिलहन और सोयाबीन के लिए एक बीज ट्रीटमेंट सॉल्यूशन, चावल के लिए एक एडवांस्ड फंगीसाइड फॉर्मूलेशन और चावल की खेती के लिए एक प्रीमियम टेक्निकल–ग्रेड हर्बिसाइड शामिल है। ये इनोवेशन मुख्य फसलों के लिए बीमारी मैनेजमेंट, पेस्ट कंट्रोल और खरपतवार मैनेजमेंट में बड़ी कमियों को दूर करते हैं– ये ऐसे फैक्टर हैं जो सीधे खेती की पैदावार और किसानों के मुनाफे पर असर डालते हैं। मायलोनिस, एजोक्सीस्ट्रोबिन, आइसोप्रोथिओलेन और मैन्कोजेब को मिलाकर बनाया गया एक पेटेंटेड फंगीसाइड है, जो चावल में सबसे मुश्किल बीमारियों– शीथ ब्लाइट, ब्लास्ट (कई स्ट्रेन सहित), और अनाज का रंग बदलने– से निपटने के लिए है। बीमारी को दबाने के अलावा, मायलोनिस पौधे की सेहत को मजबूत करता है, अनाज की क्वालिटी बढ़ाता है और रेजिस्टेंस मैनेजमेंट स्ट्रेटेजी में मदद करता है, जिससे यह पूरे भारत में चावल उगाने वाले किसानों के लिए एक बहुत अच्छा ऑप्शन बन जाता है।

सैलिक्स गोल्ड, हाई–प्योरिटी टेक्निकल ग्रेड प्रोडक्शन में अतुल की एडवांस्ड मैन्युफैक्चरिंग क्षमता को दिखाता है। यह 2,4–D सोडियम सॉल्ट–बेस्ड पानी में घुलने वाले ग्रेन्यूल्स फॉर्मूलेशन, पूरे भारत में चावल प्रोडक्शन सिस्टम में चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार और सेज को असरदार तरीके से टारगेट करते हुए, उगने के बाद खरपतवार कंट्रोल करता है। अभी घरेलू मार्केट पर फोकस करते हुए, कंपनी कुछ खास इंटरनेशनल इलाकों में कमर्शियल मौके तलाश रही है। टिकाडिस, एक पेटेंटेड बीज ट्रीटमेंट फॉर्मूलेशन है, जो एजोक्सीस्ट्रोबिन, कार्बेन्डाजिम और थियामेथोक्सम को मिलाकर मूंगफली और सोयाबीन में मिट्टी से पैदा होने वाले कीड़ों और पैथोजन्स से पहले दिन ही बचाव करता है। फील्ड ट्रायल्स से पता चलता है कि टिकाडिस बीज के अच्छे अंकुरण को बढ़ावा देता है, पौधे की ताकत बढ़ाने के लिए जड़ों की गांठों के विकास को मजबूत करता है और फलियों का एक जैसा विकास सुनिश्चित करता है।

एटमग्रिड ने बेंगलुरु में खोला नया R&D सेंटर, एग्रोकेमिकल इनोवेशन पर रहेगा फोकस

स्पेशियलिटी केमिकल्स और एग्रोकेमिकल्स सेक्टर की उभरती कंपनी एटमग्रिड ने बेंगलुरु के जिगानी इंडस्ट्रियल एरिया में अपना नया रिसर्च एंड डेवलपमेंट (R&D) सेंटर शुरू किया है। कंपनी के अनुसार, यह अत्याधुनिक सेंटर ग्लोबल मार्केट के लिए प्रोप्राइटरी मॉलिक्यूल्स और एडवांस फॉर्मूलेशन विकसित करने पर काम करेगा। केआईएडीबी इंडस्ट्रियल एरिया में स्थित इस फैसिलिटी में फिलहाल 15 वैज्ञानिक और रिसर्चर कार्यरत हैं। कंपनी अगले 12 महीनों में इस संख्या को बढ़ाकर 25 करने की योजना बना रही है। यह कदम ऐसे समय में उठाया गया है जब वैश्विक केमिकल सप्लाई चेन चीन से बाहर विकल्प तलाश रही हैं, जिससे भारतीय स्पेशियलिटी केमिकल कंपनियों के लिए नए अवसर पैदा हो रहे हैं।

कंपनी ने बताया कि नया R&D सेंटर पूरे प्रोडक्ट डेवलपमेंट साइकिल पर काम करेगा। इसमें रूट स्काउटिंग, प्रोसेस डेवलपमेंट और टेक ट्रांसफर जैसी प्रक्रियाएं शामिल होंगी। इसका उद्देश्य लैब में विकसित तकनीकों को बड़े स्तर की कमर्शियल मैन्युफैक्चरिंग तक सफलतापूर्वक पहुंचाना है। सिद्धार्थ गुप्ता ने कहा कि भारत का स्पेशियलिटी केमिकल सेक्टर एक महत्वपूर्ण मोड़ पर है। उन्होंने कहा कि वैश्विक ग्राहक अब केवल मैन्युफैक्चरिंग नहीं, बल्कि इनोवेशन और भरोसेमंद एग्जीक्यूशन देने वाले पार्टनर तलाश रहे हैं। उन्होंने बताया कि कंपनी वर्तमान में 10 से अधिक देशों में निर्यात करती है और उसकी आधे से ज्यादा आय अंतरराष्ट्रीय बाजारों से आती है।

R&D टीम एक्टिव इंग्रीडिएंट्स और पेटेंटेड फॉर्मूलेशन विकसित करने पर फोकस करेगी, जिनका उपयोग पेस्टिसाइड और हर्बिसाइड जैसे एग्रोकेमिकल उत्पादों में किया जाता है। इन प्रोडक्ट्स को वैश्विक बाजारों में रेगुलेटरी अप्रूवल के लिए उच्च गुणवत्ता और शुद्धता मानकों को पूरा करना होगा। कंपनी के R&D डायरेक्टर प्रभु धर्मलिंगम ने कहा कि भारत में केमिस्ट्री टैलेंट की कोई कमी नहीं है, लेकिन अब जरूरत इनोवेशन को वैश्विक स्तर तक ले जाने के लिए मजबूत प्रोसेस और क्वालिटी इंफ्रास्ट्रक्चर की है। यह सेंटर कंपनी के ग्लोबल रजिस्ट्रेशन प्रोग्राम को भी सपोर्ट करेगा। हाल ही में एटमग्रिड ने 7 मिलियन डॉलर की प्री–सीरीज A फंडिंग जुटाई थी, जिसका उपयोग रिसर्च क्षमता और अंतरराष्ट्रीय विस्तार को मजबूत करने में किया जाएगा।

ग्लोबल एग्रोकेमिकल कंपनी एल्बॉ का भारत में विस्तार, 'संवर्धन 2026' बना बड़ा मंच

हैदराबाद में आयोजित एल्बॉ इंडिया के प्रीमियर हाई–स्टेक डिस्ट्रीब्यूटर (HSD) मीट 'संवर्धन 2026' ने भारतीय एग्रीकल्चर सेक्टर में कंपनी के आधिकारिक लॉन्च के साथ नई शुरुआत का संकेत दिया। इस भव्य आयोजन में ग्लोबल लीडरशिप, रीजनल एक्सपर्ट्स और 100 से अधिक बिजनेस पार्टनर्स ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य भारत की खेती को आधुनिक तकनीकों और इनोवेटिव क्रॉप सॉल्यूशंस के जरिए नई दिशा देना था।

इवेंट की शुरुआत एल्बॉ इंडिया के डायरेक्टर डेनिस डायस और कमर्शियल सेल्स हेड धनेश कुमार के स्वागत संबोधन से हुई। इसके बाद एल्बॉ ग्रुप के चीफ एग्जीक्यूटिव ऑफिसर कर्ट पेडरसन कालुंड ने कंपनी का औपचारिक उद्घाटन करते हुए ग्लोबल एग्रोकेमिकल इंडस्ट्री, एल्बॉ के बिजनेस नेटवर्क और भविष्य की रणनीतियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कंपनी के विजन, मिशन और वैल्यूज को भविष्य की ग्रोथ का मजबूत आधार बताया। एल्बॉ ग्रुप के चीफ मार्केटिंग ऑफिसर जेन्स थोरसन ने कंपनी की नई टेक्नोलॉजी पहल और आने वाले प्रोडक्ट्स की पाइपलाइन पेश की। उन्होंने भारतीय किसानों के लिए HiBio और ROXY® Rice Technology जैसी आधुनिक तकनीकों को महत्वपूर्ण बताया, जिनसे उत्पादकता और फसल सुरक्षा को बढ़ावा मिलेगा। वहीं, एल्बॉ चाइना/एशिया/पैसिफिक की प्रेसिडेंट क्रिस्टीना वू ने अगले पांच वर्षों के लिए कंपनी की रणनीतिक योजनाओं और ग्रोथ इनिशिएटिव्स की जानकारी दी।

डेनिस डायस ने एल्बॉ इंडिया के भविष्य के इंफ्रास्ट्रक्चर विजन को साझा करते हुए नई R&D फैसिलिटी और एल्बॉ इनोवेटिव टेक्नोलॉजी सेंटर (AITC) की घोषणा की। धनेश कुमार ने कंपनी की कमर्शियल रणनीति और नए स्ट्रक्चर की जानकारी देते हुए 'एल्बॉ गोल्डन ईगल क्लब' लॉन्च किया, जो डिस्ट्रीब्यूटर पार्टनर्स को सम्मानित और प्रोत्साहित करने के लिए बनाया गया है। कार्यक्रम में एल्बॉ इंडिया ने आठ नए प्रोडक्ट्स भी लॉन्च किए। इनमें TANDEM® फंगीसाइड सबसे खास रहा, जो कंपनी का पहला पेटेंटेड फंगीसाइड है। कंपनी का मानना है कि यह इनोवेशन भारतीय किसानों को हाई–वैल्यू और एडवांस्ड क्रॉप प्रोटेक्शन सॉल्यूशन उपलब्ध कराएगा।

साक्षात्कार

सही तकनीक और जल प्रबंधन से मिल सकता है रिकॉर्ड मक्का उत्पादन- डॉ. एस.एल. जाट

भारत में मक्का की खेती तेजी से पारंपरिक खाद्यान्न फसल से निकलकर एक मजबूत औद्योगिक और नकदी फसल के रूप में उभर रही है। पशु आहार, स्टार्च उद्योग, एथेनॉल उत्पादन और खाद्य प्रसंस्करण उद्योग में बढ़ती मांग ने किसानों के लिए मक्का को लाभकारी विकल्प बना दिया है। आधुनिक तकनीकों, उन्नत बीजों और वैज्ञानिक प्रबंधन के कारण इसकी खेती में बड़ा बदलाव देखने को मिल रहा है। इन्हीं विषयों पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् में कृषि वैज्ञानिक एवं मक्का विशेषज्ञ डॉ. एस.एल. जाट से विशेष बातचीत की गई। उन्होंने मक्का की बुवाई, जल प्रबंधन, उन्नत किस्मों, कीट नियंत्रण और अधिक उत्पादन प्राप्त करने के वैज्ञानिक तरीकों पर विस्तार से जानकारी दी। प्रस्तुत हैं बातचीत के प्रमुख अंश–

किसानों को मक्का की बुवाई के समय किन महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना चाहिए?

पिछले एक दशक में मक्का एक औद्योगिक फसल के रूप में तेजी से उभरी है। आज देश में उत्पादित लगभग 85 प्रतिशत मक्का का उपयोग उद्योगों में हो रहा है, जबकि शेष अन्य आवश्यकताओं में प्रयोग होता है। यही कारण है कि किसान अब इसे नकदी फसल के रूप में देख रहे हैं। तकनीकी प्रगति के कारण मक्का की खेती पहले की तुलना में अधिक वैज्ञानिक और लाभकारी हुई है। संस्थानों में विकसित नई तकनीकों और नवाचारों को किसानों तक पहुंचाया जा रहा है, जिससे उनकी लागत कम हो रही है और उत्पादन बढ़ रहा है। विशेष रूप से आलू की कटाई के बाद मक्का की खेती का प्रचलन तेजी से बढ़ा है। आलू के बाद खेत की मिट्टी अच्छी स्थिति में रहती है, इसलिए इसमें बिना जुताई के भी मक्का की बुवाई की जा सकती है। यदि किसान वैज्ञानिक तकनीकों के साथ खेती करें, तो उन्हें काफी अच्छा लाभ मिल सकता है।

मक्का की बुवाई के लिए कौन–सी विधि और दूरी सबसे उपयुक्त मानी जाती है?

अधिकांश किसान लाइन से लाइन की दूरी लगभग 2 फीट तथा पौधे से पौधे की दूरी करीब 20 सेंटीमीटर रखते हैं, जो काफी उपयुक्त है। आजकल न्यूमेटिक प्लांटर मशीन का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है, जिससे निर्धारित मात्रा में बीज की सटीक बुवाई संभव हो पाती है। इसके अलावा रोलर प्लांटर से भी बुवाई की जा सकती है। जिन किसानों के पास मशीन उपलब्ध नहीं है, वे मेड बनाकर हाथ से भी बीज की बुवाई कर सकते हैं। मक्का के बीज का उत्पादन और भंडारण महंगा होता है, इसलिए इसकी लागत थोड़ी अधिक रहती है। किसानों को चाहिए कि फरवरी माह में जल्द से जल्द बुवाई करें, ताकि फसल समय पर तैयार हो जाए और बारिश आने से पहले कटाई पूरी की जा सके। इसके लिए ऐसी किस्मों का चयन करना आवश्यक है जो कम अवधि में पककर तैयार हो जाएं।

वर्ष में कितनी बार मक्का की खेती की जा सकती है?

भारत में लगभग पूरे वर्ष मक्का की खेती संभव है। सरल शब्दों में कहें तो देश में हर दिन कहीं न कहीं मक्का की बुवाई और कटाई होती है। किसानों को केवल तापमान संबंधी कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए–

- बुवाई के समय तापमान 10 डिग्री सेल्सियस से नीचे नहीं होना चाहिए।
- नर मंजरी (टैसलिंग) आने के समय तापमान 35 डिग्री सेल्सियस से अधिक नहीं होना चाहिए, अन्यथा भुट्टों में दाने नहीं पड़ते।
- इसी चरण में तापमान 15 डिग्री सेल्सियस से कम भी नहीं होना चाहिए।

मक्का का मुख्य सीजन वर्षा ऋतु माना जाता है, लेकिन इस मौसम में खरपतवार और बीमारियों का प्रकोप अधिक रहता है। इसके विपरीत रबी सीजन में फसल की अवधि अधिक होने के कारण उत्पादन भी बेहतर मिलता है। कई किसान सर्दी के मौसम में 130 से 140 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक उत्पादन प्राप्त कर रहे हैं। फरवरी में बोई गई फसल मई–जून में तैयार हो जाती है। इस मौसम में कीट और खरपतवार की समस्या बहुत कम रहती है तथा उत्पादकता भी अधिक मिलती है।

मक्का की खेती में जल प्रबंधन कितना महत्वपूर्ण है?

मक्का की अच्छी पैदावार के लिए जल प्रबंधन सबसे महत्वपूर्ण कारकों में से एक है। विशेष रूप से फरवरी से जून के मौसम में सिंचाई का सही प्रबंधन आवश्यक है। किसानों को 5 से 7 हल्की सिंचाइयां करनी चाहिए। भारी सिंचाई से पौधे गिर सकते हैं, खासकर नर मंजरी आने के समय। इसलिए हल्की और नियंत्रित सिंचाई सबसे बेहतर रहती है। आज के समय में ड्रिप इरीगेशन प्रणाली मक्का की खेती के लिए काफी लाभकारी साबित हो रही है। इससे पानी की बचत होती है और पौधों को आवश्यक मात्रा में नमी मिलती रहती है। जितना बेहतर जल प्रबंधन होगा, उतना ही बेहतर उत्पादन प्राप्त होगा।

इस मौसम में मक्का की फसल में कौन–कौन से कीटों का खतरा रहता है?

फरवरी से जून के मौसम में सामान्यतः कीट और खरपतवार की समस्या कम रहती है। हालांकि फॉल आर्मीवर्म एक प्रमुख कीट है, जिस पर विशेष ध्यान देना जरूरी है। यदि किसान बीज उपचार करके बुवाई करते हैं, तो इस कीट से होने वाला नुकसान काफी हद तक कम किया जा सकता है। इसके नियंत्रण के लिए पूरे पौधे पर स्प्रे करने की आवश्यकता नहीं होती। केवल दो पत्तियों के बीच वाले हिस्से में दवा का छिड़काव करने से यह कीट प्रभावी रूप से नियंत्रित किया जा सकता है। इससे लागत भी कम आती है और दवा का सही उपयोग होता है।

किसान किन उन्नत किस्मों की बुवाई करके बेहतर उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं?

इस मौसम के लिए कई उन्नत और अधिक उत्पादन देने वाली किस्में उपलब्ध हैं। इनमें प्रमुख रूप से आईएमएच 222, आईएमएच 223, आईएमएच 227, आईएमएच 228, आईएमएच 224, आईएमएच 23, एलकेएमएच–1, 9108, 9208, पी–1899 जैसी किस्में शामिल हैं। इन उन्नत किस्मों की वैज्ञानिक तरीके से खेती करके किसान बेहतर उत्पादन और अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं। विशेष रूप से मई–जून के मौसम में आईएमएच 224, आईएमएच 231, और एलकेएमएच–1 जैसी किस्में काफी अच्छा प्रदर्शन करती हैं।

इमरान इदरीसी
वरिष्ठ पत्रकार, फसल क्रांति
Email: emran@fasalkranti.in

जलवायु स्मार्ट खेती की ओर बढ़ रहा भारत का किसान- डॉ. बी. के. सिंह

भारत में खेती तेजी से बदल रही है। जलवायु परिवर्तन, बेमौसम बारिश, ओलावृष्टि और बढ़ते मौसम जोखिमों के बीच अब किसानों के लिए वैज्ञानिक और तकनीकी खेती की जरूरत पहले से कहीं ज्यादा बढ़ गई है। ऐसे समय में बीकेसी वेदरसिस किसानों तक मौसम आधारित सटीक जानकारी और आधुनिक कृषि सलाह पहुंचाने का काम कर रही है। इस कड़ी में फसल क्रांति की पत्रकार फिजा काजमी ने बात की बीकेसी वेदरसिस के डायरेक्टर डॉ. बी. के. सिंह से, पेश है उनसे बातचीत के प्रमुख अंश............

बीकेसी वेदरसिस किसानों के लिए कैसे कार्य कर रही है?

बीकेसी वेदरसिस किसानों के लिए मौसम आधारित समाधान विकसित करने वाली एक महत्वपूर्ण कंपनी के रूप में काम कर रही है। हमारा मुख्य उद्देश्य किसानों तक सही समय पर सटीक मौसम जानकारी पहुंचाना है, ताकि वे खेती से जुड़े फैसले बेहतर तरीके से ले सकें। आज खेती पूरी तरह मौसम पर निर्भर है और जलवायु परिवर्तन के कारण किसानों को अनिश्चित बारिश, तापमान में बदलाव, ओलावृष्टि और तेज हवाओं जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। ऐसे समय में वैज्ञानिक मौसम पूर्वानुमान किसानों के लिए बेहद जरूरी हो गया है। हम किसानों को स्थानीय स्तर पर मौसम की जानकारी उपलब्ध कराते हैं। आधुनिक ऑटोमेटिक वेदर स्टेशन, डेटा एनालिटिक्स और एडवाइजरी सिस्टम के जरिए किसानों को यह बताया जाता है कि बुवाई, सिंचाई, खाद प्रबंधन और फसल सुरक्षा के लिए कौन सा समय सबसे उपयुक्त रहेगा। इससे किसानों की लागत कम होती है और उत्पादन बेहतर होता है। हमारी कोशिश केवल मौसम बताने तक सीमित नहीं है, बल्कि मौसम को खेती के फायदे में बदलना है। उदाहरण के तौर पर, यदि किसी क्षेत्र में बारिश की संभावना है तो किसान पहले से सिंचाई रोक सकता है। इसी तरह तेज हवा या रोग फैलने वाले मौसम की जानकारी मिलने पर किसान समय रहते फसल सुरक्षा के उपाय कर सकता है। इससे नुकसान कम होता है और आय बढ़ाने में मदद मिलती है।

बेमौसम बारिश और ओलावृष्टि से फसल को बचाने के लिए किसान किन बातों का ध्यान रखें?

बेमौसम बारिश और ओलावृष्टि आज किसानों के लिए बड़ी चुनौती बन चुकी है। जलवायु परिवर्तन के कारण मौसम का स्वरूप तेजी से बदल रहा है, इसलिए किसानों को पहले से अधिक सतर्क और वैज्ञानिक खेती की ओर बढ़ना होगा। सबसे जरूरी बात यह है कि किसान नियमित रूप से मौसम पूर्वानुमान पर नजर रखें। यदि समय रहते बारिश या ओलावृष्टि की जानकारी मिल जाए, तो काफी हद तक फसल नुकसान को कम किया जा सकता है। गेहूं, सरसों, फल और सब्जियों जैसी फसलों में जलभराव सबसे बड़ा खतरा बनता है। ऐसे में खेत में पानी निकासी की उचित व्यवस्था बेहद जरूरी है। किसान खेतों की मेड़ों और नालियों को पहले से तैयार रखें ताकि अतिरिक्त पानी जल्दी बाहर निकल सके। जिन क्षेत्रों में ओलावृष्टि की संभावना अधिक रहती है, वहां फल बागानों में एंटी–हेल नेट का उपयोग काफी लाभकारी साबित हो सकता है। तेज बारिश और हवा के दौरान फसलों में रोग और फंगस का खतरा भी बढ़ जाता है। इसलिए किसानों को कृषि विशेषज्ञों की सलाह के अनुसार समय पर फफूंदनाशी और जैविक सुरक्षा उपाय अपनाने चाहिए। आज मोबाइल आधारित मौसम जानकारी और रियल टाइम एडवाइजरी सिस्टम किसानों को सही समय पर सही निर्णय लेने में मदद कर रहे हैं। किसानों को इन तकनीकों का अधिक से अधिक उपयोग करना चाहिए।

किसानों के लिए फसल सलाह ऐप कैसे कार्य कर रहा है?

आज के दौर में खेती केवल अनुभव के आधार पर नहीं बल्कि डेटा और तकनीक के आधार पर भी की जा रही है। फसल सलाह ऐप किसानों के लिए एक डिजिटल साथी की तरह काम कर रहा है, जो उन्हें समय–समय पर खेती से जुड़ी जरूरी जानकारी उपलब्ध कराता है। बीकेसी वेदरसिस द्वारा विकसित फसल सलाह प्रणाली किसानों को स्थानीय मौसम पूर्वानुमान, सिंचाई प्रबंधन, रोग एवं कीट नियंत्रण, खाद

प्रबंधन और फसल सुरक्षा जैसी महत्वपूर्ण जानकारियां मोबाइल के माध्यम से उपलब्ध कराती है। यह ऐप क्षेत्र विशेष के मौसम डेटा और कृषि वैज्ञानिकों की सलाह के आधार पर काम करता है। यदि किसी क्षेत्र में बारिश की संभावना होती है तो ऐप किसानों को पहले से अलर्ट देता है, जिससे किसान सिंचाई रोक सकते हैं या फसल कटाई का समय बदल सकते हैं। इसी तरह तापमान और नमी के आधार पर रोग फैलने की संभावना होने पर किसानों को पहले ही सावधान कर दिया जाता है। इससे फसल नुकसान कम होता है और लागत में भी बचत होती है।

मौसम पूर्वानुमान को लेकर क्या बड़े बदलाव आए हैं?

पिछले कुछ वर्षों में मौसम पुर्वानुमान तकनीक में बहुत बड़े बदलाव देखने को मिले हैं। पहले मौसम पूर्वानुमान केवल सामान्य जानकारी तक सीमित रहता था, लेकिन अब तकनीक की मदद से यह काफी अधिक सटीक, तेज और क्षेत्र विशेष आधारित हो गया है। आज किसान गांव और खेत स्तर तक मौसम की जानकारी प्राप्त कर पा रहे हैं। अब एआई, मशीन लर्निंग, सैटेलाइट डेटा और ऑटोमेटिक वेदर स्टेशन की मदद से मौसम का विश्लेषण पहले की तुलना में कहीं अधिक बेहतर तरीके से किया जा रहा है। इससे बारिश, तापमान, हवा की गति, आर्द्रता और ओलावृष्टि जैसी घटनाओं का पूर्वानुमान अधिक सटीक हो पाया है। सबसे बड़ा बदलाव अति–स्थानीय पूर्वानुमान में आया है। पहले एक पूरे जिले के लिए एक जैसा मौसम पूर्वानुमान जारी होता था, लेकिन अब अलग–अलग ब्लॉक और गांव स्तर पर जानकारी उपलब्ध कराई जा रही है। मोबाइल ऐप, एसएमएस अलर्ट और डिजिटल प्लेटफॉर्म ने भी मौसम पूर्वानुमान को किसानों तक पहुंचाने में बड़ी भूमिका निभाई है।

फसल क्रांति के माध्यम से आप किसान भाईयों को क्या संदेश देना चाहेंगे?

मैं फसल क्रांति के माध्यम से देश के किसान भाईयों को यही संदेश देना चाहूंगा कि आज खेती तेजी से बदल रही है और समय के साथ किसानों को भी नई तकनीकों और वैज्ञानिक तरीकों को अपनाना बेहद जरूरी है। खेती केवल मेहनत का काम नहीं रह गया है, बल्कि अब यह जानकारी, तकनीक और सही निर्णय पर आधारित व्यवसाय बनती जा रही है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि किसान मौसम की जानकारी, मिट्टी की जांच, जल प्रबंधन और आधुनिक कृषि तकनीकों का अधिक से अधिक उपयोग करें। बदलते मौसम और जलवायु चुनौतियों के दौर में वैज्ञानिक खेती ही किसानों को सुरक्षित और लाभकारी बना सकती है। मैं किसानों से यह भी कहना चाहूंगा कि वे डिजिटल तकनीकों से जुड़ें। मोबाइल ऐप, मौसम पूर्वानुमान सेवाएं, कृषि सलाह प्लेटफॉर्म और सरकारी योजनाओं की जानकारी आज खेती को नई दिशा दे रही हैं। आने वाला समय स्मार्ट और क्लाइमेट–स्मार्ट एग्रीकल्चर का है, और भारत का किसान इस बदलाव का सबसे मजबूत हिस्सा बन सकता है।

फिजा काजमी
पत्रकार, फसल क्रांति
Email: fiza@fasalkranti.in

AGROXY CROPS SOLUTIONS PVT. LTD.
A-9, West Jyoti Nagar, Durgapuri Chowk Shahdara, Delhi -94
Phone: 011 - 2281 5345, 9625941688
Email: info@fasalkranti.in, Website: www.fasalkranti.in

Fasal Kranti
New Vision for Agriculture

सदस्यता फॉर्म

नाम..

पिता का नाम..

पता..

जिला/शहर.. राज्य..

पिनकोड.......................... मोबाईल.......................... ईमेल ....

Year	Issue	Price (Rs.)	Discount (Rs.)	Total Amount
☐ 1	12	720	0	720
☐ 2	24	1440	140	1320
☐ 3	36	2160	360	1800
☐ 5	60	3600	600	3000

तिथि

हस्ताक्षर

पोल्ट्री सेक्टर ग्रामीण भारत में रोजगार और आत्मनिर्भरता का बड़ा आधार-रणपाल धंदा

भारत का पोल्ट्री सेक्टर आज कृषि आधारित अर्थव्यवस्था का एक मजबूत स्तंभ बनकर उभर रहा है। ग्रामीण रोजगार, पोषण सुरक्षा और किसानों की अतिरिक्त आय बढ़ाने में इस उद्योग की महत्वपूर्ण भूमिका है। पिछले तीन दशकों में पोल्ट्री उद्योग ने जिस तेजी से विकास किया है, उसने इसे देश के सबसे तेजी से बढ़ते एग्री–बिजनेस सेक्टरों में शामिल कर दिया है। पोल्ट्री उद्योग की वर्तमान स्थिति, चुनौतियों, निर्यात संभावनाओं, वैक्सीन नीति, कच्चे माल की बढ़ती लागत और युवाओं के लिए इसमें मौजूद अवसरों को लेकर हमारी विशेष बातचीत हुई त्दचंस वींदकं से। उन्होंने बताया कि कैसे पोल्ट्री फेडरेशन ऑफ इंडिया पिछले कई वर्षों से किसानों, उद्योग और सरकार के बीच एक मजबूत सेतु बनकर काम कर रही है तथा किस प्रकार यह क्षेत्र आने वाले समय में ग्रामीण भारत की अर्थव्यवस्था को नई दिशा दे सकता है। पोल्ट्री सेक्टर की चुनौतियों, संभावनाओं और भविष्य की दिशा को लेकर हमारी विशेष बातचीत हुई त्दचंस वींदकं से। प्रस्तुत हैं इस विशेष साक्षात्कार के प्रमुख अंश।

पोल्ट्री फेडरेशन ऑफ इंडिया की शुरुआत कैसे हुई और आज इसकी क्या भूमिका है?

पोल्ट्री फेडरेशन ऑफ इंडिया की स्थापना वर्ष 1988 में कुछ किसानों द्वारा छोटे स्तर पर की गई थी। उस समय उद्देश्य केवल पोल्ट्री किसानों की समस्याओं को एक मंच पर लाना था। धीरे–धीरे यह संस्था मजबूत होती गई और आज देशभर की पूरी पोल्ट्री इंडस्ट्री इससे जुड़ी हुई है। आज फेडरेशन के साथ पोल्ट्री किसान, फीड निर्माता, दवा कंपनियां, इक्विपमेंट कंपनियां, वैज्ञानिक, डॉक्टर, शोधकर्ता और कई प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों के कुलपति भी जुड़े हुए हैं। हम यह कह सकते हैं कि पोल्ट्री फेडरेशन ऑफ इंडिया देश की सबसे मजबूत और सक्रिय पोल्ट्री संस्था है, जो पूरे सेक्टर के हितों के लिए लगातार कार्य कर रही है।

वर्तमान में फेडरेशन से कितने सदस्य जुड़े हुए हैं?

हमारे आधिकारिक रिकॉर्ड के अनुसार आज लगभग 4500 सदस्य सीधे तौर पर फेडरेशन से जुड़े हुए हैं। ये सदस्य चुनाव और संगठन की गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। लेकिन यदि व्यापक रूप से देखें तो पोल्ट्री से जुड़ा हर किसान इस फेडरेशन का हिस्सा है। जब भी हम कोई कार्यक्रम या बैठक आयोजित करते हैं, तो सभी किसानों को आमंत्रित किया जाता है। कोई भी किसान अपनी समस्या हमारे सामने रख सकता है। फेडरेशन उनकी समस्याओं को सरकार तक पहुंचाने और समाधान निकालने का प्रयास करता है।

पोल्ट्री फेडरेशन किन राज्यों में कार्य कर रही है और किन मुद्दों पर सरकार के साथ काम करती है?

यह फेडरेशन केवल किसी एक राज्य तक सीमित नहीं है, बल्कि देश के हर राज्य में सक्रिय रूप से कार्य कर रही है। हमारा उद्देश्य पूरे भारतीय पोल्ट्री सेक्टर को मजबूत करना है। हाल के वर्षों में हमने कई महत्वपूर्ण मुद्दों को सरकार के सामने रखा है। उदाहरण के लिए केजमेंट, प्रदूषण नीति, वैक्सीन और पोल्ट्री रोगों से जुड़े विषयों पर फेडरेशन ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। एलपीआई वैक्सीन को भारत में बनाने की अनुमति दिलाने में भी फेडरेशन ने भारत सरकार के साथ मिलकर काम किया। इससे पोल्ट्री उद्योग को बड़े नुकसान से बचाया जा सका। अब हम एसपीआई वैक्सीन को भी देश में बनाने की मांग कर रहे हैं ताकि किसानों को राहत मिल सके।

वर्तमान समय में भारत का पोल्ट्री सेक्टर किस स्थिति में है?

आज भारत का पोल्ट्री उद्योग लगभग 4 लाख करोड़ रुपये का सेक्टर बन चुका है। ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के लिहाज से यह सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में से एक है। यदि पिछले 30–35 वर्षों का आंकलन करें तो यह उद्योग हर साल लगभग 10–12 प्रतिशत की दर से बढ़ रहा है। आने वाले समय में इसकी संभावनाएं और अधिक बढ़ने वाली हैं क्योंकि देश में चिकन और अंडों की मांग लगातार बढ़ रही है। यह सेक्टर युवाओं के लिए भी बड़ा अवसर बन सकता है। कम निवेश से शुरू होकर इसे बड़े स्तर तक ले जाया जा सकता है। यही वजह है कि पोल्ट्री उद्योग ग्रामीण उद्यमिता को मजबूत करने में अहम भूमिका निभा रहा है।

पोल्ट्री एक्सपोर्ट और उद्योग की प्रमुख चुनौतियां क्या हैं?

भारत से अंडों का निर्यात काफी अच्छा हो रहा है, लेकिन चिकन का निर्यात अभी अपेक्षाकृत कम है। इसका सबसे बड़ा कारण कच्चे माल की ऊंची कीमतें हैं। हमारे यहां मक्का, सोयाबीन और अन्य फीड सामग्री की कीमतें अंतरराष्ट्रीय बाजार की तुलना में काफी अधिक हैं। उदाहरण के लिए भारत में सोयाबीन लगभग 57–58 रुपये प्रति किलो तक पहुंच जाता है, जबकि अमेरिका में यही कीमत करीब 40 रुपये प्रति किलो है। यदि किसानों को उचित दर पर पर्याप्त मात्रा में कच्चा माल उपलब्ध कराया जाए, तो भारत पोल्ट्री निर्यात में दुनिया के बड़े देशों को चुनौती दे सकता है। इसके लिए जरूरी है कि किसानों को मक्का और सोयाबीन की खेती के लिए अधिक प्रोत्साहित किया जाए।

युवाओं और किसानों के लिए आपका क्या संदेश है?

मैं युवाओं और किसानों से यही कहना चाहूंगा कि पोल्ट्री सेक्टर भविष्य का एक मजबूत और लाभकारी क्षेत्र है। इसमें रोजगार और स्वरोजगार की अपार संभावनाएं हैं। कोई भी युवा छोटे स्तर से शुरुआत करके धीरे–धीरे बड़े व्यवसाय तक पहुंच सकता है। आज तकनीक और वैज्ञानिक प्रबंधन के कारण पोल्ट्री उद्योग पहले से अधिक संगठित और आधुनिक हो चुका है। साथ ही, हम यह भी मानते हैं कि पर्यावरण संरक्षण हमारी जिम्मेदारी है। इसलिए सरकार और उद्योग को मिलकर ऐसी नीतियां बनानी चाहिए, जिससे उद्योग का विकास भी हो और पर्यावरण संतुलन भी बना रहे। यदि सही नीति और सहयोग मिले तो भारत का पोल्ट्री सेक्टर दुनिया के सबसे मजबूत उद्योगों में शामिल हो सकता है।

इमरान इदरीसी
वरिष्ठ पत्रकार, फसल क्रांति
Email: emran@fasalkranti.in

नई तकनीक अपनाई, तरबूज की खेती से आर्थिक तंगी दूर भगाई

मध्य प्रदेश आदिवासी बहुल अलीराजपुर जिले के कट्ठीवाड़ा विकासखंड के छोटे से गांव मोरधी के किसान निहालसिंह बाथु आज उन किसानों के लिए मिसाल बन चुके हैं, जो सीमित संसाधनों और पानी की कमी के कारण खेती में लगातार नुकसान झेल रहे हैं। कभी पारंपरिक खेती पर निर्भर रहने वाले निहालसिंह की आर्थिक स्थिति बेहद कमजोर थी, लेकिन प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के तहत ड्रिप सिंचाई अपनाने के बाद उनकी खेती ही नहीं, पूरी जिंदगी बदल गई। आज वही किसान मक्का की कम आमदनी वाली खेती छोड़कर तरबूज की उन्नत खेती से लाखों रुपए की कमाई कर रहे हैं।

निहालसिंह बताते हैं कि कुछ साल पहले तक उनकी खेती पूरी तरह बारिश पर निर्भर थी। उनके पास करीब 0.80 हेक्टेयर जमीन है, जिसमें वे पारंपरिक तरीके से मक्का की खेती करते थे। हर साल मौसम की मार, पानी की कमी और आधुनिक तकनीकों के अभाव के कारण उत्पादन बहुत कम होता था। कई बार फसल अच्छी दिखती थी, लेकिन बारिश समय पर न होने से उत्पादन घट जाता था। मेहनत और लागत अधिक लगती थी, लेकिन आमदनी बेहद कम होती थी।

उन्होंने बताया कि पूरे सीजन की मेहनत के बाद लगभग 20 क्विंटल मक्का का उत्पादन ही मिल पाता था। इससे कुल आय करीब 32 हजार रुपए होती थी, जबकि खेती में बीज, खाद, मजदूरी और अन्य खर्च निकालने के बाद मुश्किल से 7 हजार रुपए की बचत हो पाती थी। इतनी कम आमदनी में परिवार का खर्च चलाना आसान नहीं था। कई बार उन्हें खेती छोड़ने तक का विचार आया, लेकिन परिवार और बच्चों की जिम्मेदारियों ने उन्हें संघर्ष जारी रखने के लिए प्रेरित किया।

इसी दौरान उद्यानिकी विभाग के अधिकारियों की गांव में बैठक हुई, जिसमें किसानों को प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के बारे में जानकारी दी गई। अधिकारियों ने "पर ड्रॉप मोर क्रॉप" अभियान के तहत ड्रिप सिंचाई प्रणाली की विशेषताएं समझाईं। शुरुआत में निहालसिंह को विश्वास नहीं हुआ कि कम पानी में भी अच्छी खेती संभव है। उन्हें लगा कि यह तकनीक बड़े किसानों के लिए होगी और इसे अपनाना महंगा पड़ेगा।

हालांकि विभागीय अधिकारियों ने उन्हें योजना के लाभ, अनुदान और आधुनिक खेती के फायदे विस्तार से बताए। इसके बाद उन्होंने हिम्मत जुटाकर योजना में आवेदन किया। उनके खेत में ड्रिप सिंचाई सिस्टम लगाया गया, जिसकी कुल लागत 1 लाख 14 हजार 277 रुपए आई। इसमें से सरकार की ओर से उन्हें 56 हजार 60 रुपए का अनुदान मिला। इससे उनकी आर्थिक चिंता काफी कम हो गई और वे नई तकनीक अपनाने के लिए तैयार हुए।

ड्रिप सिंचाई लगने के बाद उन्होंने खेती को नए तरीके से समझना शुरू किया। उन्हें एहसास हुआ कि पानी की हर बूंद का सही उपयोग करके उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। इसके बाद उन्होंने पारंपरिक मक्का की खेती छोड़कर नकदी फसल के रूप में तरबूज की खेती करने का फैसला लिया। शुरुआत में यह फैसला जोखिम भरा लग रहा था, लेकिन उन्होंने विभाग के अधिकारियों से लगातार मार्गदर्शन लिया और आधुनिक तकनीकों को अपनाया।

तरबूज की खेती में ड्रिप सिंचाई ने बड़ा बदलाव किया। पहले जहां खेतों में पानी की भारी बर्बादी होती थी, वहीं अब पौधों की जड़ों तक सीधे जरूरत के अनुसार पानी पहुंचने लगा। इससे पानी की बचत हुई, फसल की गुणवत्ता सुधरी और उत्पादन में जबरदस्त बढ़ोतरी हुई।

आज निहालसिंह अपनी 0.80 हेक्टेयर जमीन से करीब 200 क्विंटल तरबूज का उत्पादन कर रहे हैं। बाजार में अच्छी कीमत मिलने से उनकी कुल आय लगभग 2 लाख 40 हजार रुपए तक पहुंच गई है। सबसे बड़ी बात यह है कि खर्च निकालने के बाद उन्हें करीब 1 लाख 65 हजार रुपए का शुद्ध लाभ हो रहा है। यह आमदनी पहले की तुलना में कई गुना अधिक है। खेती में हुए इस बदलाव का असर उनके परिवार की जिंदगी पर भी साफ दिखाई दे रहा है। पहले जहां घर चलाना मुश्किल था, वहीं अब बच्चों की पढ़ाई बेहतर तरीके से हो रही है। परिवार की जरूरतें आसानी से पूरी हो रही हैं और आर्थिक स्थिति मजबूत हुई है। निहालसिंह अब दूसरे किसानों को भी आधुनिक तकनीक अपनाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

वे कहते हैं कि यदि किसान सही जानकारी और सरकारी योजनाओं का लाभ लें, तो खेती को फायदे का व्यवसाय बनाया जा सकता है। उनके अनुसार पहले वे सिर्फ मेहनत करते थे, लेकिन अब तकनीक और सही योजना के साथ खेती कर रहे हैं। इससे कम पानी में ज्यादा उत्पादन मिल रहा है और आय भी बढ़ रही है।

उद्यानिकी विभाग के अधिकारियों का कहना है कि प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना किसानों के लिए बेहद लाभकारी साबित हो रही है। खासकर उन इलाकों में, जहां पानी की कमी बड़ी समस्या है, वहां ड्रिप सिंचाई किसानों की आय बढ़ाने में मदद कर रही है। विभाग लगातार किसानों को जागरूक करने और आधुनिक खेती से जोड़ने का काम कर रहा है।

निहालसिंह बाथु की सफलता यह साबित करती है कि यदि किसान पारंपरिक खेती के साथ आधुनिक तकनीकों को अपनाएं और सरकारी योजनाओं का सही लाभ लें, तो कम जमीन और सीमित संसाधनों में भी बेहतर आय हासिल की जा सकती है। उनकी कहानी आज क्षेत्र के कई किसानों के लिए प्रेरणा बन चुकी है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस

क्या है आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ?

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस मशीनों और रोबोट की बुद्धिमत्ता है और कंप्यूटर विज्ञान की शाखा है। इसमें समस्याओं को हल करने, उचितरूप से कार्य करने, मनुष्य की तरह कार्य करने की क्षमता होती है। यह एक ऐसी मशीन है जिसमे सोचने, समझने या निर्णय लेने की क्षमता का विकास किया जाता है। सरल भाषा में कहें तो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) का अर्थ है–बनावटी (कृत्रिम) तरीके से विकसित की गई बौधिक क्षमता। इसमें एक ऐसा दिमाग बनाया जाता है, जिसमें कंप्यूटर सोच सके। कंप्यूटर का एक ऐसा दिमाग, जो इंसानों की तरह सोच सके। सही इनपुट और आउटपुट के साथ उचित रूप से प्रोग्राम किए गए कंप्यूटर में ठीक उसी तरह दिमाग होता है, जिस तरह से मनुष्य के पास दिमाग होता है। मस्तिष्क का अनुकरण किया जा सकता है। मस्तिष्क को सीधे हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर में कॉपी करना तकनीकी रूप से संभव है, और ऐसा अनुकरण मूलतः मूल के समान होगा। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की शुरुआत 1950 के दशक में हुई थी।

प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण : एआई में ऐसे सॉफ़्टवेयर को डिज़ाइन और निर्मित किया जाता है जो मानव द्वारा स्वाभाविक रूप से उपयोग की जाने वाली भाषाओं का विश्लेषण करेगा, समझेगा और उत्पन्न करेगा।

एआई में संचार के तरीके:टेक्स्ट आधारित, संवाद आधारित।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के फायदेः–

1. **मानवीय त्रुटि/गलतियों में कमी**– आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का सबसे बड़ा फ़ायदा यह है कि यह गलतियों को काफी कम कर सकता है और सटीकता बढ़ा सकता है। प्रत्येक चरण में एआई द्वारा लिए गए निर्णय पहले से इकक्ठी की गई जानकारी और एल्गोरिदम के एक निश्चित सेट द्वारा तय किए जाते हैं। जब ठीक से प्रोग्राम किया जाता है, तो ये गलतियाँ नहीं होती हैं
2. **शून्य जोखिम**– एआई का एक और बड़ा फ़ायदा यह है कि एआई रोबोट को हमारे लिए काम करने की अनुमति देकर मनुष्य कई जोखिमों को दूर कर सकते हैं। चाहे वह अंतरिक्ष में जाना हो, महासागरों के सबसे गहरे हिस्सों की खोज करना होद्ययह प्रतिकूल वातावरण में भी जीवित रह सकती हैं ।
3. **24 X7 उपलब्धता**– ऐसे कई अध्ययन हैं जो बताते हैं कि मनुष्य एक दिन में केवल 3 से 4 घंटे ही उत्पादक होता है। इंसानों को भी अपने कामकाजी जीवन और निजी जीवन को संतुलित करने के लिए खाली समय की आवश्यकता होती है। लेकिन एआई बिना ब्रेक के अनगिनत काम कर सकता है। वे इंसानों की तुलना में बहुत तेजी से सोचते हैं और सटीक परिणामों के साथ एक समय में कई कार्य करते हैं। वे उसके साथ कठिन दोहराव वाले कार्यों को भी आसानी से संभाल सकते हैं।

4. **नये आविष्कार**— व्यावहारिक रूप से हर क्षेत्र में, एआई कई नवाचारों के पीछे प्रेरक शक्ति है जो मनुष्यों की बहुत से चुनौती पूर्ण मुद्दों को हल करने में सहायता करेगी।

5. **तेजी से निर्णय लेना**— तेजी से निर्णय लेना एआई का एक और लाभ है। कुछ कार्यों को स्वचालित करके और वास्तविक समय की जानकारी प्रदान करके, एआई संगठनों को तेज़ और अधिक सूचित निर्णय लेने में मदद कर सकता है।

6. **बारम्बार किये जाने वाले कार्यों में सहायता**— हम अपने दैनिक कार्य में बहुत सारे दोहराए जाने वाले कार्य करते हैं, जैसे कि त्रुटियों/गलतियों के लिए दस्तावेज़ों की जाँच करना और अन्य चीजों के अलावा धन्यवाद नोट भेजना। हम इन छोटे—मोटे कामों को कुशलता से स्वचालित करने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग कर सकते हैं और यहां तक कि लोगों के लिए "उबाऊ" कार्यों को खत्म कर सकते हैं, जिससे उन्हें अधिक रचनात्मक होने पर ध्यान केंद्रित करने कामौका मिल सकेगा ।

7. **जोखिम भरी स्थितियों में ए.आई**— एक एआई रोबोट बनाकर जो हमारी ओर से खतरनाक कार्य कर सकता है, हम कई खतरनाक बाधाओं को पार कर सकते हैं। इसका उपयोग किसी भी प्रकार की प्राकृतिक या मानव निर्मित आपदा में प्रभावी ढंग से किया जा सकता है, चाहे वह मंगल ग्रह पर जाना हो, महासागरों के सबसे गहरे क्षेत्रों की खोज करना हो, या कोयले और तेल के लिए खनन करना हो।

8. **चिकित्सा अनुप्रयोग**— एआई ने चिकित्सा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है, जिसमें निदान और उपचार से लेकर दवा की खोज और नैदानिक परीक्षण तक के अनुप्रयोग शामिल हैं। एआई—संचालित उपकरण डॉक्टरों और शोधकर्ताओं को रोगी डेटा का विश्लेषण करने, संभावित स्वास्थ्य जोखिमों की पहचान करने और व्यक्तिगत उपचार योजनाएं विकसित करने में मदद कर सकते हैं। इससे मरीजों को बेहतर स्वास्थ्य परिणाम मिल सकते हैं।

9. **पैटर्न की पहचान**— पैटर्न पहचान एक अन्य क्षेत्र है जहां एआई उत्कृष्ट है। बड़ी मात्रा में डेटा का विश्लेषण करने और पैटर्न और रुझानों की पहचान करने की अपनी क्षमता के साथ, एआई व्यवसायों और संगठन की मदद कर सकता है। इस जानकारी का उपयोग बेहतर निर्णय लेने और व्यावसायिक परिणामों को बेहतर बनाने के लिए किया जा सकता है।

10. **निष्पक्ष निर्णय**— मनुष्य भावनाओं से प्रेरित होता है, चाहे हम इसे पसंद करें या नहीं। दूसरी ओर, एआई भावनाओं से रहित है और अपने दृष्टिकोण में अत्यधिक व्यावहारिक और तर्कसंगत है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का एक बड़ा फायदा यह है कि इसमें कोई पक्षपात पूर्ण विचार नहीं है, जो अधिक सटीक निर्णय लेना सुनिश्चित करता है।

कृषि क्षेत्र में एआई का उपयोग : भारतीय कृषि को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जैसे उच्च मानसून पर निर्भरता, संसाधन गहनता, संसाधनों का भारी उपयोग (पानी, अकार्बनिक उर्वरक और कीटनाशक), भूमि का निम्नीकरण और अन्य बातों के अलावा, मिट्टी की उर्वरता में कमी, और प्रति हेक्टेयर कम उपज।

इस संदर्भ में, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) जलवायु परिवर्तन, जनसंख्या वृद्धि, रोजगार के मुद्दे और खाद्य सुरक्षा समस्या जैसे विभिन्न कारकों से फसल की उपज में सुधार करने में उत्प्रेरक भूमिका निभा सकती है।

कृषि में एआई का उपयोगः—

एआई कृषि डेटा का विश्लेषण करने में मदद करता है —फ़ार्म प्रतिदिन ज़मीन पर सैकड़ों—हजारों डेटा पॉइंट उत्पन्न करते है। एआई की मदद से किसान अब वास्तविक समय में कृषि सम्बंधित विभिन्न प्रकार के विश्लेषण कर सकते हैं जैसे कि मौसम की स्थिति, तापमान, पानी का उपयोग, मिट्टी की स्थिति का संग्रह, ताकि वह अपने फार्म सम्बंधित निर्णय को बेहतर ढंग से ले सके।

किसान कृषि सटीकता में सुधार और उत्पादकता बढ़ाने के लिए मौसमी पूर्वानुमान मॉडल बनाने के लिए एआई का भी उपयोग कर रहे हैं।

सटीक कृषि (Precision farming)— स्टीक कृषि पौधों में बीमारियों, कीटों और खेतों में खराब पौधों के पोषण की जांच करने के लिए एआई तकनीक का उपयोग करते हैं।

सटीक कृषि में सेंसर की मदद से फसल, मिट्टी, खरपतवार, कटी या पौंधों में होने वाली बीमारियों के बारे में पता करके किसान भाई अपनी फसलों को बचा सकते हैं।

यह हमारे भोजन में पाए जाने वाले शाकनाशियों और अत्यधिक विषाक्त पदार्थों के अत्यधिक उपयोग को रोकने में मदद करता हैं।

श्रम चुनौती से निपटने के लिए — खेती के पेशे में कम लोगों के आने से,अधिकांश खेतों को कार्यबल की कमी की चुनौती का सामना करना पड़ रहा है।

श्रमिकों की इस कमी को पूरा करने का एक समाधान एआई कृषि बॉट है। बॉट— रोबोट का संक्षिप्त रूप जोकि एक कंप्यूटर प्रोग्राम है जो उपयोगकर्ता या अन्य प्रोग्राम के लिए एजेंट के रूप में या मानव गतिविधि का अनुकरण करने के लिए काम करता है द्य ये बॉट मानव श्रम कार्यबल को बढ़ाते हैं और विभिन्न रूपों में उपयोग किए जाते हैं। जैसे कीः—

ये बॉट मानव मजदूरों की तुलना में अधिक मात्रा में और तेज गति से फसलों की कटाई कर सकते हैं, अधिक सटीक पहचान कर सकते हैं और खरपतवारों को खत्म कर सकते हैं, और चौबीसों घंटे श्रम शक्ति के कारण खेतों की लागत कम कर सकते हैं।

इसके अतिरिक्त, किसान, सहायता के लिए चैटबॉट्स की ओर रुख करने लगे हैं।

चैटबॉटः चैटबॉट कंप्यूटर प्रोग्राम होता है, जो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का इस्तेमाल इंसानों से बातचीत में करता है। इसका इस्तेमाल वॉयस कमांड या टेक्स्ट दोनों ही तरीकों से किया जा सकता है। चैटबॉट विभिन्न प्रकार के सवालों के जवाब देने और विशिष्ट फार्म पर सलाह और सिफारिशें प्रदान करने में मदद करते हैं। चैटबॉट का उपयोग करना उतना ही सरल है जितना किसी के साथ बातचीत करना। आप उससे सवाल पूछ सकते हैं या उसे आदेश दे सकते हैं, और वह जवाब देगा और कार्रवाई करेगा।

डॉ. नीतू शर्मा, तमन्ना एवं डॉ. संजय शर्मा
चौधरी सरवण कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय
कृषि विज्ञान केंद्र, काँगड़ा (हि.प्र.)—176 001

मृदा प्रबंधन से ही संभव सतत् फसल उत्पादन

मृदा पृथ्वी पर जीवन का मूल आधार है, क्योंकि यह पौधों की वृद्धि हेतु आवश्यक पोषक तत्व, जल तथा सूक्ष्मजीवों की क्रियाशीलता बढाकर कृषि उत्पादन में सहायता करती है। स्वस्थ मृदा ही खाद्य सुरक्षा, पर्यावरणीय संतुलन और ग्रामीण अर्थव्यवस्था की स्थिरता सुनिश्चित करती है। यह वर्षा जल का संचयन, भू–जल पुनर्भरण और प्रदूषकों का प्राकृतिक फिल्टरेशन करती है। मृदा में विविध प्रकार के सूक्ष्मजीव, केंचुए और अन्य जीव रहते हैं, जो जैविक गतिविधियों के माध्यम से उपजाऊपन बढ़ाते हैं। साथ ही, मृदा पृथ्वी का सबसे बड़ा कार्बन भंडार होने के कारण जलवायु परिवर्तन नियंत्रण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अतः मृदा केवल कृषि का आधार नहीं, बल्कि संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र, पर्यावरण सुरक्षा और मानव जीवन का अनिवार्य सहारा है। कृषि मानव सभ्यता की आधारशिला है, और कृषि का आधार है। मृदा। लेकिन बढ़ती जनसंख्या, रासायनिक उर्वरकों का अत्यधिक उपयोग, गहरी जुताई, कीटनाशकों पर निर्भरता तथा जलवायु परिवर्तन के कारण मिट्टी की उर्वरता लगातार घटती जा रही है।

वर्ममान में मृदा जांच परीक्षण प्रयोगशालों के आंकडों के अनुसार भारत की मिट्टीयों में कई प्रकार के पोषक तत्वों की कमी पाई गई है साथ ही मिट्टी की जैविक कार्बन पदार्थ में भी भारी गिरावट आई है। अतः ऐसे समय में सतत् फसल उत्पादन तभी संभव है, जब मृदा का संरक्षण और वैज्ञानिक प्रबंधन किया जाए। इसलिए यह कथन पूर्णतः सत्य है कि – "मृदा प्रबंधन से ही संभव सतत् फसल उत्पादन।" मृदा में उपस्थित भौतिक, रासायनिक और जैविक गुणों को बनाए रखना, सुधारना और फसलों की आवश्यकताओं के अनुसार उनका उपयोग करना ही मृदा प्रबंधन कहलाता है। इसका मुख्य उद्देश्य है– मिट्टी की उर्वरता बनाए रखना, मिट्टी के क्षरण को रोकना, मिट्टी में जल एवं पोषक–तत्वों के संतुलन को सुनिश्चित करना एवं दीर्घकाल तक सतत् उत्पादन प्राप्त करना।

सतत् फसल उत्पादन के लिए मृदा प्रबंधन की आवश्यकता

सतत् फसल उत्पादन के लिए मृदा प्रबंधन आवश्यक है क्योंकि निरंतर खेती, रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग, फसल अवशेष जलाने और मिट्टी कटाव जैसी समस्याओं से मृदा की उर्वरता, संरचना, नमी धारण क्षमता और जैविक सक्रियता धीरे–धीरे घटती जाती है। बिना उचित प्रबंधन के मिट्टी में पोषक तत्वों का संतुलन बिगड़ जाता है, जिससे उत्पादन कम होता है और लागत बढ़ती है। वैज्ञानिक मृदा परीक्षण, कार्बनिक पदार्थों का उपयोग, फसल चक्र, जल संरक्षण और जैविक उर्वरकों जैसी तकनीकों से मिट्टी की गुणवत्ता सुधरती है, पोषक तत्वों की उपलब्धता बनी रहती है और पर्यावरण प्रदूषण भी घटता है। इसलिए स्वस्थ, उपजाऊ और स्थायी मिट्टी ही दीर्घकालिक, स्थिर और सतत् फसल उत्पादन का वास्तविक आधार है। लगातार एक ही प्रकार की फसल उगाने, सिंथेटिक उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग तथा कार्बनिक पदार्थों की कमी से मिट्टी की उपज घटती है। वर्षा और हवा से उपरी उपजाऊ भाग नष्ट होता है। वर्तमान में मृदाओं में जैविक पदार्थों की कमी भी बढ़ रही है जिससे मिट्टी की जल धारण क्षमता भी कम हो

रही है। इन समस्याओं का समाधान प्रभावी मृदा प्रबंधन ही है।

मृदा प्रबंधन के लाभ

1. मिट्टी की उर्वरता और स्वास्थ्य दीर्घकाल तक कायम रहता है
2. उत्पादन लागत कम होती है
3. रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता घटती है
4. फसल की गुणवत्ता और उत्पादन दोनों बढ़ते हैं
5. पर्यावरण प्रदूषण कम होता है
6. जल संरक्षण एवं नमी संरक्षण में सुधार
7. कार्बन संचयन से जलवायु परिवर्तन के प्रभाव कम होते हैं

सतत् फसल उत्पादन हेतु प्रबंधन रणनितियाँ

सतत् फसल उत्पादन के लिए ऐसी प्रबंधन रणनीतियाँ आवश्यक हैं जो मिट्टी की उर्वरता, जल संरक्षण, पोषक तत्वों का संतुलन, पर्यावरणीय गुणवत्ता और किसान की आय को लंबे समय तक सुरक्षित रखें। इसमें मृदा परीक्षण आधारित उर्वरक प्रबंधन, फसल चक्र अपनाना, जैविक खादों का उपयोग, संरक्षण कृषि तकनीकें, जल एवं सिंचाई का वैज्ञानिक प्रबंधन, कीट–रोग नियंत्रण पादप पौषण के लिए के लिए एकीकृत प्रबंधन जैसे उपाय शामिल हैं, जो न केवल मिट्टी को स्वस्थ बनाते हैं, बल्कि उत्पादन को स्थिर और टिकाऊ रखते हैं। सतत् फसल उत्पादन हेतु कुछ प्रबंधन रणनितियाँ इस प्रकार है–

1. **मृदा परीक्षण आधारित उर्वरक प्रबंधनः**– फसल बोने से पहले मिट्टी की जांच कर उसकी वास्तविक स्थिति का पता लगाने के लिए भारत सरकार ने किसान कल्याण के लिए मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना की सुविधा दे रखी है। अतः किसान अपने खेत कि मृदा की जांच करवाकर मृदा परीक्षण आधारित उर्वरकों एवं अन्य सिफारशों के अनुसार अनुशंसा की पालना करके मृदा को स्वस्थ रखते हुए सतत् फसल उत्पादन ले सकते है।
2. **पोषक–तत्वों का संतुलित प्रबंधनः**– समन्वित पोषक तत्व प्रबंधन के अंतर्गत जैविक, रासायनिक उर्वरकों एवं जैव–उर्वरकों का संतुलित उपयोग किया जाता है। इससे न केवल फसल की पैदावार बढ़ती है बल्कि मिट्टी की दीर्घकालिक स्वास्थ्य सुरक्षित रहता है।
3. **मृदा अपरदन नियंत्रणः**– हवा और पानी द्वारा मृदा का कटाव उपजाऊ सतह को नष्ट करता है। कंटूर खेती, ढलान पर सीढ़ीदार खेती, चेक–डैम, मेड़बंदी आदि तकनीकें मिट्टी को बहने से बचाती हैं, जिससे उत्पादकता बनी रहती है।
4. **जल प्रबंधन में सुधारः**– ड्रिप और स्प्रिंकलर सिंचाई से पानी सीधे पौधों की जड़ों तक पहुँचता है। इससे मिट्टी में नमी संतुलित रहती है और फसलें तनाव मुक्त रहती हैं। अधिक सिंचाई से मिट्टी की संरचना खराब होती है, जिससे उत्पादन घट सकता है।
5. **जैविक गतिविधि को बढ़ावाः**– मिट्टी में सूक्ष्मजीव, केंचुए और अन्य जीव प्राकृतिक उर्वरता बढ़ाते हैं। जैविक पदार्थ और हरी खाद उनके लिए भोजन का कार्य करती हैं। अधिक रासायनिक पदार्थ इन जीवों को नुकसान पहुँचाते हैं, इसलिए संतुलित उर्वरक प्रबंधन के साथ–साथ कुछ पारिस्थितिकी के अनुसार तकनिकों का उपयोग करना चाहिए जिससे जैविक गतिविधि मृदा में बढ़ सके जैसे रासायनिक उर्वरको के साथ जैविक खादों को शामिल करना चाहिए एवं जैव उर्वरको, मल्चिंग, फसल विविधिकरण, बायोचार आदि का प्रयोग करना चाहिए।
6. **मृदा उर्वरता में वृद्धिः**– मृदा उर्वरता में वृद्धि के लिए जैविक खाद, गोबर खाद, कम्पोस्ट, वर्मी कम्पोस्ट, हरी खाद आदि का उपयोग करना चाहिए जिससे मृदा में जैविक पदार्थ बढ़ाता है। इससे मिट्टी की संरचना सुधरती है, पोषक–तत्वों की उपलब्धता बढ़ती है और फसलें स्वस्थ पनपती हैं। दीर्घकालीन उत्पादकता के लिए यह अत्यंत आवश्यक है।
7. **मिश्रित और अंतर–फसल प्रणालीः**– मिश्रित और अंतर–फसल प्रणाली मिट्टी का स्वास्थ्य सही रखने में सहयोग करती है क्योंकि इसमें एक ही खेत में अलग–अलग प्रकार की फसलें साथ–साथ उगाई जाती हैं, जिससे मिट्टी की सतह ढकी रहती है और वर्षा या हवा से होने वाला कटाव कम हो जाता है। अलग–अलग फसलों की जड़ें मिट्टी को मजबूती देती हैं और पोषक तत्वों के संतुलित उपयोग से मिट्टी की उर्वरता बनी रहती है। इसके अलावा, कुछ फसलें नाइट्रोजन स्थिरीकरण जैसी प्रक्रियाओं से मिट्टी को पोषित भी करती हैं। अतः मिश्रित एवं अंतर–फसल प्रणाली मिट्टी के स्वास्थ्य संतृलित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
8. **फसल चक्र अपनानाः**– फसल चक्र सतत् फसल उत्पादन की एक अत्यंत प्रभावी प्रबंधन रणनीति है, जिसमें एक ही खेत में हर मौसम या वर्ष में अलग–अलग प्रकार की फसलें उगाई जाती हैं। इससे मिट्टी में पोषक तत्वों का प्राकृतिक संतुलन बना रहता है, क्योंकि विभिन्न फसलों की पोषण आवश्यकताएँ भिन्न होती हैं। उदाहरण के लिए, दलहनी फसलें मिट्टी में नाइट्रोजन स्थिर करती हैं, जिससे अगली फसलों के लिए नाइट्रोजन उपलब्ध हो जाता है। फसल चक्र अपनाने से कीट और रोगों का प्रकोप कम होता है, मिट्टी की उर्वरता और संरचना सुधरती है तथा उत्पादन स्थिर रहता है। यह न केवल मृदा स्वास्थ्य को दीर्घकालिक रूप से सुरक्षित करता है बल्कि रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता भी कम करता है, जिससे कृषि पर्यावरण अनुकूल और आर्थिक रूप से लाभकारी बनती है।
9. **जैविक खाद एवं हरी खाद का उपयोगः**– जैविक खाद और हरी खाद के उपयोग से मिट्टी की भौतिक, रासायनिक और जैविक उर्वरता में स्वाभाविक रूप से बढ़ात्तरी होती हैं। जैविक खाद जैसे गोबर की सड़ी खाद, कम्पोस्ट, वर्मी कम्पोस्ट आदि मिट्टी में कार्बनिक पदार्थों की मात्रा बढ़ाती है, जिससे मिट्टी की संरचना सुधरती है, नमी धारण क्षमता बढ़ती है और लाभकारी सूक्ष्मजीवों की सक्रियता में वृद्धि होती है। वहीं, हरी खाद जैसे सनई, ढैंचा, मूँग और बरसीम को फूल आने से पहले खेत में पलटने से मिट्टी में नाइट्रोजन सहित कई पोषक तत्व प्राकृतिक रूप से उपलब्ध हो जाते हैं। इससे रासायनिक उर्वरकों की आवश्यकता कम होती है, उत्पादन लागत घटती है और मिट्टी वर्षों तक उपजाऊ बनी रहती है। जैविक एवं हरी खादें पर्यावरण प्रदूषण को रोकने, कार्बन संचयन बढ़ाने और फसलों की गुणवत्ता सुधारने में भी महत्वपूर्ण

भूमिका निभाती हैं। इस प्रकार इनका उपयोग सतत् सुरक्षित और पर्यावरण–अनुकूल कृषि उत्पादन के लिए अत्यंत आवश्यक है।

10. **न्यूनतम जुताई एवं संरक्षण कृषिः**– अधिक जुताई से मिट्टी कड़ी हो जाती है, जिससे जड़ें सही प्रकार विकसित नहीं होतीं है। संरक्षण कृषि तथा न्यूनतम जुताई जैसी तकनीकों से मिट्टी की प्राकृतिक संरचना और जैविक गुणों को सुरक्षित रखकर उत्पादन को स्थिर बनाया जा सकता हैं। न्यूनतम जुताई में खेत को बार–बार गहराई से नहीं जोता जाता, जिससे मिट्टी की ऊपरी उपजाऊ परत सुरक्षित रहती है, नमी का संरक्षण होता है और सूक्ष्मजीवों का प्राकृतिक संतुलन बना रहता है। संरक्षण कृषि में फसल अवशेषों को खेत में ही छोड़ना, कवर फसलें उगाना और जुताई को कम से कम रखना शामिल है। इससे किसानों की लागत घटती है, उत्पादन क्षमता बढ़ती है और खेती जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के प्रति अधिक सहनशील बनती है। इस प्रकार न्यूनतम जुताई एवं संरक्षण कृषि, दीर्घकालिक रूप से टिकाऊ और पर्यावरण–अनुकूल फसल उत्पादन की मुख्य आधारशिला हैं।

11. **जल और नमी संरक्षण तकनीकेंः**– मल्चिंग, रेनवॉटर हार्वेस्टिंग, सूक्ष्म सिंचाई से मिट्टी की नमी दीर्घकाल रहती है।

12. **मृदा सुधारकों का उपयोगः**– सतत् फसल उत्पादन प्राप्त करने के लिए मिट्टी की भौतिक, रासायनिक और जैविक गुणवत्ता को सुधारना चाहिए जिसे लिए कई प्रकार के मृदा सुधारक जैस चुना (लाइम) का उपयोग अम्लीय मिट्टी को संतुलित करने के लिए, जिप्सम का उपयोग क्षारीय मिट्टी को सुधारने के लिए, तथा जैविक पदार्थों जैसे कम्पोस्ट, वर्मी कम्पोस्ट और फसल अवशेषकृ का उपयोग मिट्टी में कार्बन बढ़ाने के लिए किया जाता है। इस तरह मृदा संशोधक दीर्घकालिक रूप से मिट्टी के स्वास्थ्य को सुरक्षित रखते हुए सतत् और पर्यावरण–अनुकूल फसल उत्पादन को सुनिश्चित करता है।

13. **फसल अवशेष प्रबंधनः**– फसल अवशेष प्रबंधन सतत् फसल उत्पादन की एक महत्वपूर्ण रणनीति है, जिसमें कटाई के बाद खेत में बचने वाले तनों, पत्तियों और भूसे को नष्ट करने के बजाय कई रूपों में उपयोग में लिया जा सकता है। अवशेषों को खेत में ही सड़ाकर प्राकृतिक खाद बना सकते है जिससे मृदा स्वस्थ होती है। फसल अवशेषों को मल्च के रूप में उपयोग करने से भी कई प्रकार से मृदा स्वास्थ्य में सहायता करती है। इसलिए फसल अवशेष प्रबंधन आधुनिक और पर्यावरण–अनुकूल कृषि व्यवस्था का आधार है, जो उत्पादन को स्थिर और टिकाऊ बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

निष्कर्षः– स्पष्ट है कि मृदा प्रबंधन के बिना सतत् फसल उत्पादन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। स्वस्थ मिट्टी ही स्वस्थ और अधिक उत्पादन देने वाली फसलें पैदा कर सकती है। सतत् कृषि का मूल मंत्र है "स्वस्थ मृदा, समृद्ध किसान"। मृदा प्रबंधन केवल फसल उत्पादन बढ़ाने की तकनीक नहीं, बल्कि भविष्य की खाद्य सुरक्षा का आधार है। यदि किसान वैज्ञानिक तरीकों से मृदा का संरक्षण और पोषण करेंगे, तो देश की कृषि दीर्घकालीन रूप से समृद्ध और टिकाऊ बन पाएगी।

हनुमान प्रसाद परेवा[1], लक्ष्मी नारायण बैरवा[1],
विजय सिंह मीणा[3], मनीष कुमार[1],

[1]उद्यानिकी महाविद्यालय (श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर), दुर्गापुरा–जयपुर, राजस्थान

[2]आईसीएआर–महात्मा गांधी एकीकृत कृषि अनुसंधान संस्थान, मोतिहारी, बिहार

मूंगफली उत्पादन में बीज एवं भूमि उपचार

किसी भी फसल के अधिकतम उत्पादन में फसल के बीज का अच्छा जमाव, स्वस्थ पौधे एवं फसल की अच्छी बढ़वार बहुत ही आवश्यक है। मूंगफली के उत्पादन में ये बातें और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती हैं क्यों की यह नकदी फसल है साथ ही इसमें बीज एवं मृदा जनित रोगों का प्रभाव अधिक पाया जाता है। मूंगफली अच्छे उत्पादन के लिए बीज एवं मृदा दोनों उपचार जरूरी है। मूंगफली के बीज उपचार में पोषक तत्वों की उत्तम उपलब्धता के लिए सूक्ष्म जीवाणु खाद अथवा बायोफर्टिलाइजर एवं रोगों से बचाव के लिए बायोपेस्टिसाइड से बीज उपचार करते हैं। जो निम्नवत है–

बीज उपचार की विधि

सर्वप्रथम बीज उपचार करने के लिए 50 ग्राम गुड को 1 लीटर पानी में भली प्रकार उबालकर ठंडा कर लेते हैं यह घोल इतना बनाते हैं कि आवश्यक बीज के ऊपर हल्का छिटक कर उसे चिपचिपा बनाया जा सके। उबले हुए गुड़ के पानी को बीज के ऊपर हल्का छिटक कर हल्के हाथों से मिला देते हैं इसके पश्चात बायोफर्टिलाइजर राइजोडॉन–सीपी की 2 ग्राम मात्रा प्रति किलोग्राम मूंगफली के ऊपर छिटक कर हल्के हाथों से मिलते हैं। बायोफर्टिलाइजर राइजोडॉन–सीपी की कोटिंग होने के बाद ट्राईडॉन–वी की 4 से 5 ग्राम और स्यूडॉन –एफ 4 से 5 ग्राम मात्रा प्रति किलोग्राम बीज की दर से मूंगफली के बीज ऊपर छिटक कर मिला देते हैं। इससे बायोपेस्टिसाइड की एक कोटिंग (परत) चढ़ जाती है और बीज आपस में चिपकते भी नहीं है।

मृदा उपचार की विधि

1. मृदा उपचार के लिए ट्राईडॉन–वी 2 किलोग्राम प्रति एकड़ तथा स्यूडॉन –एफ 2 किलोग्राम किलोग्राम प्रति एकड़ लेते हैं।इन दोनों को 200 किलोग्राम सड़ी हुई गोबर की खाद में अलग–अलग मिलते हैं इसके पश्चात अलग–अलग प्लास्टिक की बोरियों में भरकर मुंह बांधकर एक सप्ताह के लिए रख देते हैं। बायोपेस्टिसाइड गोबर की खाद में मिलते समय उसमें नमी इतनी होनी चाहिए कि लड्डू बनाने पर लड्डू बन जाए और हाथ में चिपके भी भी नहीं ।बुवाई से पूर्व अंतिम जुताई में अथवा बुवाई के के साथ–साथ ट्राईडॉन–वी और सूडान– एफ मिले हुए इस गोबर के खाद को खेत में छिटक कर मिला देते हैं।
2. मेटाडॉन 2 किलोग्राम प्रति एकड़ तथा वर्टिडॉन–सी 2 किलोग्राम प्रति एकड़ लेते हैं। इन दोनों को 200 किलोग्राम सड़ी हुई गोबर की खाद में अलग–अलग मिलते हैं इसके पश्चात अलग–अलग प्लास्टिक की बोरियों में भरकर मुंह बांधकर एक सप्ताह के लिए रख देते हैं। बायोपेस्टिसाइड गोबर की खाद में मिलते समय उसमें नमी इतनी होनी चाहिए कि लड्डू बनाने पर लड्डू बन जाए और हाथ में चिपके भी भी नहीं बुवाई से पूर्व अंतिम जुताई में अथवा बुवाई के के साथ–साथ मेटाडॉन और वर्टिडॉन –सी मिले हुए इस गोबर के खाद को खेत में छिटक कर मिला देते हैं।

बीज एवं भूमि उपचार से लाभ

1. बीज का अंकुरण अच्छा होता है तथा पौधे स्वास्थ बनते हैं।
2. बायोफर्टिलाइजर राइजोडॉन–सीपी की के प्रयोग से जड़ में गांठों का विकास अच्छा होता है। जिससे नाइट्रोजन की उपलब्धता बढ़ती है साथ में फास्फोरस और पोटाश घुलनशील होकर पौधे को पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं।
3. मूँगफली में तना सड़न एवं कालर रॉट रोग से बचाव होता है।
4. सफेद मुंडा या वाइट ग्रब तथा नेमाटोड्स से बचाव होता है।
5. मूंगफली में टिक्का रोग की दोनों अवस्था प्रारंभिक पत्ती धब्बा एवं देर से पत्ती धब्बा रोग से बचाव होता है।
6. उत्पादन लागत में कमी आती है एवं अच्छा उत्पादन प्राप्त होता है।

बीज एवं भूमि उपचार से लाभ

1. गुड और पानी को भली प्रकार उबालना चाहिए और खूब ठंडा करके ही इस्तेमाल करें।
2. गुड़ के घोल को मूंगफली के बीज पर बहुत हल्का छिटकना चाहिए और बताई गई विधि के क्रम में ही उपचार करना चाहिए।
3. उपचारित बीज की बुवाई जल्द से जल्द कर देना चाहिए।
4. बायोपेस्टिसाइड के बहुलीकरण में प्रयोग किए जाने वाली गोबर खाद पूर्ण रूप से सड़ी होनी चाहिए।
5. गोबर खाद में नमी आदर्श मात्रा होनी चाहिए।
6. बायोपेस्टिसाइड म मिश्रित गोबर खाद को खेत में डालने के तुरंत बाद मिट्टी में मिला देना चाहिए किसी भी दशा में इसे खुल न छोड़ें।

Sanjay Srivastava
FTC Organic
Mobile: 9821818004
Email: info@ftcorganic.com

मृदा जांच– आवश्यकता, उद्देश्य एवं सही नमूना लेने की वैज्ञानिक विधि

भारत कृषि प्रधान देश है, जहाँ किसानों की आजीविका का मुख्य आधार भूमि है। भूमि केवल उत्पादन का साधन नहीं, बल्कि खेती की आत्मा है। यदि मृदा स्वस्थ है तो फसल भी स्वस्थ होगी, उत्पादन अधिक होगा और किसान की आय में वृद्धि होगी। आज लगातार खेती, एक ही प्रकार की फसलें उगाना, असंतुलित उर्वरकों का प्रयोग तथा जैविक पदार्थों की कमी के कारण मिट्टी की उर्वरता घटती जा रही है। ऐसी स्थिति में मृदा जांच (Soil Testing) अत्यंत आवश्यक हो गई है। मृदा जांच वह वैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से मिट्टी में उपलब्ध पोषक तत्वों, pH मान, जैविक कार्बन, लवणता तथा अन्य गुणों का परीक्षण किया जाता है। इसके आधार पर यह तय किया जाता है कि खेत में कौन–कौन से पोषक तत्वों की कमी है और फसल के लिए कितनी मात्रा में उर्वरक देना उचित होगा।

किसानों को वैज्ञानिक खेती से जोड़ने तथा मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने के उद्देश्य से भारत सरकार द्वारा मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना प्रारंभ की गई। इस योजना का शुभारंभ 19 फरवरी 2015 को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा सूरतगढ़, राजस्थान से किया गया था। इस योजना का मुख्य उद्देश्य किसानों को उनकी भूमि की वास्तविक स्थिति बताना तथा संतुलित उर्वरक उपयोग के लिए वैज्ञानिक सलाह प्रदान करना है। इस योजना के अंतर्गत किसानों के खेतों से मिट्टी का नमूना लेकर प्रयोगशाला में जांच की जाती है और उसके आधार पर किसान को मृदा स्वास्थ्य कार्ड दिया जाता है। इस कार्ड में मिट्टी का pH मान, जैविक कार्बन, नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश तथा सूक्ष्म पोषक तत्वों की उपलब्धता का विवरण दिया जाता है। साथ ही यह भी बताया जाता है कि किसान को किस फसल में कौन–सा उर्वरक कितनी मात्रा में देना चाहिए।

सरकारी आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2025 तक देशभर में 24.74 करोड़ से अधिक मृदा स्वास्थ्य कार्ड जारी किए जा चुके हैं। वर्ष 2026 तक यह संख्या 25 करोड़ से अधिक पहुँच चुकी है। यह योजना देश के करोड़ों किसानों तक पहुँचकर उन्हें वैज्ञानिक खेती अपनाने में सहायता कर रही है ।

मृदा जांच की आवश्यकता

आज किसान अधिक उत्पादन के लिए रासायनिक उर्वरकों का अंधाधुंध उपयोग कर रहे हैं। प्रारंभ में इससे उत्पादन बढ़ा, लेकिन धीरे–धीरे मिट्टी की गुणवत्ता प्रभावित होने लगी। अब अधिक खाद डालने पर भी उत्पादन अपेक्षित रूप से नहीं बढ़ता। लागत बढ़ रही है और लाभ घट रहा है। ऐसी परिस्थिति में मृदा जांच किसानों के लिए लाभकारी उपाय है।

मृदा जांच से किसान यह जान सकता है कि उसके खेत में नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश, सल्फर, जिंक, बोरॉन आदि तत्व पर्याप्त हैं या नहीं। इससे अनावश्यक खाद खर्च कम होता है तथा संतुलित पोषण मिलने से फसल अच्छी होती है।

मृदा जांच के प्रमुख उद्देश्य

1. मिट्टी में पोषक तत्वों की उपलब्धता का पता लगाना।
2. खेत की उर्वरता स्थिति जानना।
3. फसलवार उर्वरक की सही मात्रा निर्धारित करना।
4. मिट्टी की अम्लीयता, क्षारीयता एवं लवणता की जानकारी प्राप्त करना।
5. उत्पादन लागत कम करना तथा लाभ बढ़ाना।
6. भूमि की दीर्घकालीन उर्वरता बनाए रखना।
7. टिकाऊ एवं वैज्ञानिक खेती को बढ़ावा देना।

मृदा नमूना लेने की सही विधि

सही एवं विश्वसनीय मृदा परीक्षण रिपोर्ट प्राप्त करने के लिए मिट्टी का नमूना वैज्ञानिक विधि से लेना अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए लगभग एक एकड़ खेत में 8 से 10 अलग–अलग स्थानों का चयन करें। प्रत्येक स्थान पर "V" आकार का लगभग 6 इंच गहरा गड्ढा बनाएं और गड्ढे की दोनों किनारों से समान मोटाई की मिट्टी निकालें। सभी स्थानों से प्राप्त मिट्टी को एक साफ प्लास्टिक की बाल्टी या तिरपाल पर एकत्र कर अच्छी तरह मिला लें। इसके बाद उसमें से कंकड़, घास, पत्तियाँ एवं अन्य अवांछित पदार्थ अलग कर दें। मिश्रित मिट्टी को समतल स्थान पर फैलाकर चार बराबर भाग करें तथा दो विपरीत भागों को हटा दें। शेष मिट्टी को फिर से मिलाकर यही प्रक्रिया दोहराते रहें, जब तक लगभग 500 ग्राम प्रतिनिधि नमूना न बच जाए। इस नमूने को छाया में सुखाकर साफ कपड़े या प्लास्टिक की थैली में भरें तथा उस पर किसान का नाम, गाँव, खेत संख्या, पिछली फसल, प्रस्तावित फसल एवं नमूना लेने की तिथि लिखकर मृदा परीक्षण प्रयोगशाला में भेज दें।

मृदा नमूना लेते समय कुछ आवश्यक सावधानियों का पालन करना अत्यंत जरूरी है, क्योंकि सही नमूना ही सही परीक्षण रिपोर्ट का आधार होता है। नमूना लेते समय यह ध्यान रखें कि मिट्टी अधिक गीली न हो, क्योंकि गीली मिट्टी से परीक्षण परिणाम प्रभावित हो सकते हैं। जिस स्थान पर हाल ही में खाद, गोबर की खाद या रासायनिक उर्वरक डाला गया हो, वहाँ से नमूना नहीं लेना चाहिए। इसी प्रकार पेड़ों के नीचे, मेड़ के पास, नाली किनारे या जहाँ पानी जमा रहता हो, वहाँ की मिट्टी खेत की वास्तविक स्थिति नहीं दर्शाती, इसलिए ऐसे स्थानों से नमूना लेने से बचें। यदि खेत में खड़ी फसल हो तो उस समय नमूना न लें, बल्कि खेत खाली होने पर ही नमूना लेना अधिक उपयुक्त रहता है। सामान्य फसलों के लिए लगभग 6 इंच गहराई तक मिट्टी लें, जबकि बागवानी फसलों के लिए अधिक गहराई से नमूना लेना चाहिए। बुवाई से लगभग एक से डेढ़ माह पूर्व नमूना प्रयोगशाला में भेज देना चाहिए, ताकि समय पर रिपोर्ट प्राप्त हो सके। यदि खेत की मिट्टी क्षारीय, लवणीय या सफेद परत वाली दिखाई दे, तो उसका नमूना सामान्य मिट्टी से अलग लेकर परीक्षण हेतु भेजना चाहिए। इन सावधानियों को अपनाकर किसान अधिक सटीक मृदा परीक्षण रिपोर्ट प्राप्त कर सकते हैं और संतुलित उर्वरक प्रबंधन द्वारा बेहतर उत्पादन हासिल कर सकते हैं।

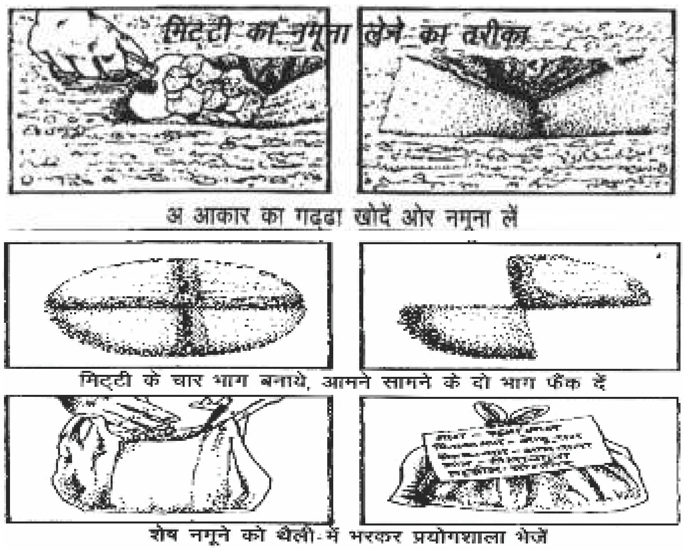

मृदा परीक्षण कहाँ कराएँ

किसान भाइयों के लिए मृदा परीक्षण कराना आज के समय की सबसे महत्वपूर्ण कृषि आवश्यकता बन चुका है। अच्छी बात यह है कि अब यह सुविधा गाँव से लेकर जिले तक अनेक स्थानों पर उपलब्ध है। किसान अपनी सुविधा अनुसार नजदीकी संस्थान में जाकर मृदा परीक्षण करा सकते हैं। जिला एवं विकासखंड स्तर पर कृषि विभाग द्वारा संचालित सरकारी मृदा परीक्षण प्रयोगशालाएँ किसानों को वैज्ञानिक जांच सुविधा प्रदान करती हैं। यहाँ मिट्टी की जांच कर पोषक तत्वों की स्थिति तथा उर्वरक उपयोग की सही सलाह दी जाती है।

इसके अतिरिक्त प्रत्येक जिले में स्थापित कृषि विज्ञान केंद्र (KVK) किसानों के लिए विशेष सहयोग केंद्र के रूप में कार्य करते हैं। यहाँ मृदा नमूना लेने की विधि, परीक्षण रिपोर्ट की जानकारी तथा फसलवार पोषण प्रबंधन की सलाह दी जाती है। राज्य कृषि विश्वविद्यालय एवं अनुसंधान संस्थानों में आधुनिक उपकरणों से उन्नत मृदा परीक्षण सुविधाएँ उपलब्ध रहती हैं, जहाँ विस्तृत विश्लेषण कराया जा सकता है। कुछ निजी मान्यता प्राप्त प्रयोगशालाएँ भी शुल्क लेकर यह सेवा उपलब्ध कराती हैं। कई राज्यों में मोबाइल मृदा परीक्षण प्रयोगशाला या चलित वैन के माध्यम से गाँवों तक यह सुविधा पहुँचाई जा रही है, जिससे किसानों को दूर जाने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

निष्कर्ष

मृदा जांच केवल एक परीक्षण नहीं, बल्कि सफल खेती की पहली सीढ़ी है। यह किसान को बताती है कि उसकी भूमि को क्या चाहिए और कितनी मात्रा में चाहिए। यदि किसान मृदा परीक्षण रिपोर्ट के अनुसार उर्वरकों का उपयोग करें, तो उत्पादन बढ़ेगा, लागत घटेगी और मिट्टी की सेहत भी बनी रहेगी। इसलिए हर किसान को समय–समय पर अपने खेत की मृदा जांच अवश्य करानी चाहिए।

राहुल कुमार सिंह, श्रीप्रकाश सिंह, मनीष पाण्डेय, प्रतीक्षा सिंह, पूजा सिंह एवं नवीन कुमार सिंह
कृषि विज्ञान केंद्र, कल्लीपुर, वाराणसी–221307 (उ.प्र.)

खेती-बाड़ी

भारतीय कृषि- स्वर्णिम विरासत से विकसित भारत की ओर

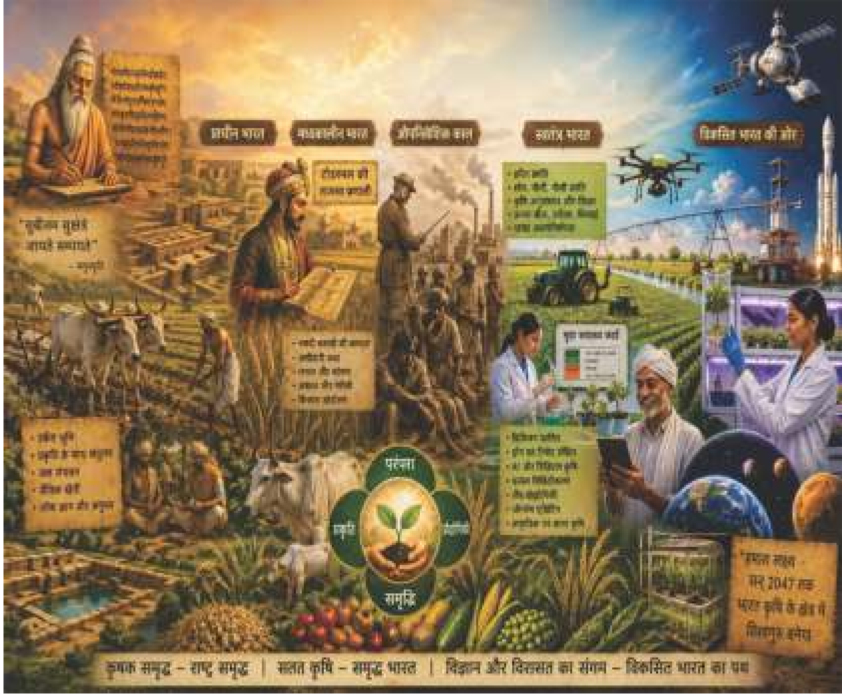

भारत युगों से ऋषि और समृद्ध कृषि का देश रहा है। वर्तमान युग में जहाँ सम्पूर्ण विश्व औद्योगीकरण की अंधी होड़ में है, भारत अभी भी वह देश है जिसकी आत्मा गाँवों और खेतों में ही बसती है। यहां की मिट्टी में वह शक्ति है जो न केवल अन्न उपजाती है, बल्कि संस्कृति, परंपरा और चेतना को भी पोषित करती है। भारत की असली ताकत न तो उद्योगों में है ना ही बाजार में, असली शक्ति तो उसके खेतों की उर्वरता और उस बीज में है जो किसान श्रद्धा से भूमि को समर्पित करता है और सम्पूर्ण देश की खाद्य सुरक्षा को सुनिश्चित करता है।

वेदों से लेकर आधुनिक विज्ञान तक भारतीय कृषि ने सैकड़ों युगों की यात्रा की है। समय के थपेड़ों, विदेशी आक्रमणों, प्राकृतिक आपदाओं और नीतिगत विफलताओं के बावजूद यह आज भी करोड़ों लोगों के जीवन का आधार है। आज जब हम विकसित भारत की बात कर रहे हैं, तब यह आवश्यक है कि हम अपनी कृषि विरासत को समझें, उसे सम्मान दें और उसे आधुनिकता से जोड़ें।

प्राचीन भारत में कृषि की गौरवशाली परंपरा

वैदिक युग में कृषि को ईश्वरीय कार्य माना गया है। उर्वरा भूमिः की स्तुति करते हुए ऋषियों ने भूमि को माता कहा, और कृषक को उसका पुत्र। कृषि को धर्म का अंग मानते हुए अनेक यज्ञ व अनुष्ठान कृषि समृद्धि के लिए किए जाते थे। ऋग्वेद में वर्षा, सूर्य, वायु और भूमि की सामूहिक स्तुति में यह स्पष्ट होता है कि भारत की कृषि प्रणाली प्रकृति के साथ संतुलन बनाए रखने में विश्वास रखती थी।

प्राचीन भारत में ग्रहों की गति एवं मौसम के पूर्वानुमान के लिए कई राजाओं ने ऐसी वेधशालाओं का निर्माण किया जिससे कि ससमय और मौसम के अनुरूप कृषि कार्य संपादित किये जा सकें। घाघ और भड्डरी जैसे लोक कवियों की कृषि आधारित रचनाएँ विज्ञान और अनुभव का संगम हैं जो आज भी ग्रामीण भारत में गूंजती हैं। वैज्ञानिकता के इस दौर में भी ये लोकोक्तियाँ उतनी ही प्रासंगिक हैं।

मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की खुदाई में मिले अनाज भंडार, हल के अवशेष और सिंचाई की व्यवस्थाएँ दर्शाती हैं कि भारतीय कृषि प्रणाली अत्यंत सुव्यवस्थित थी। सरस्वती क्षेत्र में दोहरी फसल प्रणाली, बैलों द्वारा खेत जोतने की पद्धति और जल संचयन के उपाय अत्याधुनिक प्रतीत होते हैं।

कौटिल्य के अर्थशास्त्र में कृषि कर, सिंचाई कर, बीज भंडारण और कृषि उत्पादन के मूल्य निर्धारण की स्पष्ट नीतियाँ थीं। खेतिहर श्रमिकों की सुरक्षा, भूमि की उर्वरता बनाए रखने हेतु नीति और कृषि उपकरणों का प्रयोग तत्कालीन शासन की कृषि के प्रति संवेदनशीलता को दर्शाता है। चरक संहिता और सुश्रुत संहिता में खेती, मृदा गुणवत्ता और औषधीय पौधों की जानकारी न केवल कृषि बल्कि आयुर्वेदिक विज्ञान के लिए भी महत्वपूर्ण सिद्ध हुई हैं। हमारी कृषि, रसायन प्रयोग से परे गौ–वंश आधारित थी जिससे हम अन्नोपार्जन एवं जीविकोपार्जन के साथ–साथ अपनी संस्कृति से भी जुड़े थे। मृदा के अनुरूप फसल एवं फसल के अनुरूप मृदा का चयन किया जाता था। जैसा कि मनुस्मृति में भी वर्णित है– "सूबीजम सुक्षेत्रे जायते संपद्यते"। न जाने ऐसी कितनी ही विधाएं प्रचलित थीं जिससे प्राप्त समृद्धि से हम सोने की चिड़िया कहलाते थे।

मध्यकालीन भारतीय कृषि

भक्ति आंदोलन और संत परंपरा में भूमि, अन्न और कृषक को ईश्वर के समकक्ष माना जाता था। कबीर, तुलसी, रहीम और सूरदास की कविताओं में कृषक जीवन की पीड़ा और गौरव दोनों की झलक मिलती है। अकबर के राजस्व मंत्री टोडरमल ने जाब्ता प्रणाली द्वारा भूमि का मूल्यांकन कर स्थायी भू–राजस्व प्रणाली की नींव रखी थी। यह यद्यपि प्रशासनिक दृष्टि से सशक्त था, परंतु धीरे–धीरे कृषकों पर बोझ बढ़ता गया और आत्मनिर्भरता संकट में आ गई।

औपनिवेशिक भारत में किसानों पर नील, अफीम और कपास जैसी नकदी फसलों की खेती को थोपा गया। परिणामस्वरूप, देश के कई भागों में अकाल, भुखमरी और कृषि संकट उत्पन्न हुए। दीनबन्धु मित्र द्वारा रचित 'नील दर्पण' नाटक और प्रेमचंद की 'गोदान' जैसी साहित्यिक कृतियों में भी किसानों की विवशता और कृषि शोषण का मार्मिक चित्रण किया गया है। जमींदारी प्रथा, महाजनों का कर्ज और लूट आधारित कर प्रणाली ने भारतीय कृषकों को गुलाम बना दिया जिसके परिणामस्वरूप संथाल विद्रोह, नील विद्रोह और अनेकों किसान आंदोलन हुए।

वर्तमान भारत में कृषि की चुनौतियाँ

तकनीकी विकास की ओर अग्रसर भारतीय कृषि आज अनेक जटिल और गहरी चुनौतियों से जूझ रही है। जलवायु परिवर्तन ने भारतीय कृषि की पारंपरिक स्थिरता को प्रभावित किया है जिससे

असामयिक मानसून, दीर्घकालिक सूखा और अचानक आने वाली बाढ़ की घटनाएँ सामान्य सी हो चुकी हैं। देश के लगभग 85% किसान सीमांत या लघु श्रेणी में आते हैं, जिनके पास भूमि, संसाधन, तकनीक और पूंजी की भारी कमी होती है। वे हर बार एक नई आशा के साथ बीज बोते हैं, परंतु समय पर सिंचाई, उर्वरक और तकनीकी जानकारी के अभाव में फसल उत्पादन प्रभावित होता है एवं आशातीत कृषकीय लाभ प्राप्त नहीं हो पाता है। कृषि बाजारों में भी किसानों का मूल्य निर्धारण पर कोई नियंत्रण नहीं होता है। फसल कटने के बाद किसानों का मंडियों में बिचौलियों और आढ़तियों की जकड़ से मुक्त होना असंभव सा प्रतीत होता है। इन सभी सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय दबावों का परिणाम यह होता है कि किसान निरंतर मानसिक तनाव, अवसाद और विवशता के दलदल में धँसता चला जाता है। देश में हर वर्ष हजारों किसान आत्महत्या करते हैंकृयह केवल आँकड़ों का विषय नहीं, बल्कि भारत के आत्मा के क्षरण की कहानी है। यह स्थिति एक राष्ट्रीय त्रासदी बन चुकी है, जो हमें बार–बार झकझोरती है और यह सोचने को विवश करती है कि क्या भारत का "विकास" सचमुच समावेशी और न्यायसंगत है, यदि उसका अन्नदाता ही सुरक्षित नहीं है?

स्वतंत्र भारत में कृषि की पुनर्रचना

धीरे–धीरे समय बदला, युग बदले और काल चक्र की गति के बीच कृषि की आवश्यकताएं भी बदलीं। जनसँख्या में उतरोत्तर वृद्धि और कृषि योग्य भूमि के संकुचन से जनित आवश्यकताओं के कारण पुरातन कृषि ने करवट बदली और हमने अपनी पुरातन कृषि पद्धतियों में परिमार्जन करते हुए उसका स्वरुप बदला। हमने सन 1923 में तत्कालीन कृषि अनुससंधान संस्थान, पूसा में कृषि में परास्नातक डिप्लोमा में हुई शुरुआत को और सशक्त बनाते हुए कला और विज्ञान की तरह कृषि शिक्षा को विद्यालयी और विश्वविद्यालयी शिक्षा में समावेशित किया। आजादी के दुसरे दशक में कृषकों, कृषि वैज्ञानिकों एवं सरकार की कृषि नीतियों के सहयोग से भारत में हरित क्रांति आई। हरित क्रांति का बीज–सूत्र उन्नत फसल प्रभेद, रासायनिक उर्वरक और सिंचाई का साधन रहा जिससे देश अन्न उत्पादन में पुनः आत्मनिर्भर हुआ। कालांतर में भारतीय कृषि ने श्वेत क्रांति, नीली क्रांति, पीली क्रांति तथा ऐसे अनेकों क्रांतियों के विभिन्न रंग देखे और भारत इन्द्रधनुषी क्रांति का ध्वजवाहक बना। हालांकि, इन क्रांतियों ने कृषि क्षेत्र को बहुआयामी बनाया परंतु, इनके लाभ विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में असमान हुए एवं हमें भूजल स्तर में ह्रास, मृदा स्वास्थ्य पर कुप्रभाव, जल–थल–नभ प्रदूषण आदि के रूप में इसकी पारिस्थितिक कीमत भी चुकानी पड़ रही है।

विकसित भारत के दौर में कृषि की संभावनाएं

हमने कृषि शिक्षा का उपयोग करते हुए मृदा प्रबंधन, जलवायु अनुकूल कृषि प्रबंधन, फसल प्रबंधन, फसलों में प्राकृतिक संसाधन एवं रोग–कीट प्रबंधन इत्यादि का समेकित एवं समसामयिक प्रबंधन कर कृषि उत्पादन एवं उत्पादकता में गुणात्मक वृद्धि की। परन्तु, जनसँख्या का दवाब इस कदर बढ़ता गया कि कृषि में किये गए ये उन्नयन पर्याप्त नहीं थे। इसीलिए हमने कृषि विकास को और भी गति प्रदान की और हमने अपनी पुरातन बौद्धिक संपदाओं को लोकोक्तियों और आई.टी.के. (देशज तकनीकि ज्ञान) के माध्यम से एवं पारंपरिक बीजों को जीन बैंक के माध्यम से सहेजना शुरू किया ताकि फसल प्रभेद के विकास में तीव्रता लायी जा सके। हमने प्राकृतिक संसाधनों के बेहतर सदुपयोग के लिए मृदा स्वास्थ्य कार्ड और प्रिसिजन फार्मिंग को अपनाया। बात इससे भी न बनी तो हमने जीनोम एडिटिंग करके अपनी समयानुकूल आवश्यकताओं की पूर्ती हेतु ऐसे गुण वाले प्रभेदों का विकास किया जो श्रृष्टि में थे ही नहीं, मानो मनुष्य ने ब्रम्हा से सृजन करने की कला सीख ली हो। इसी पद्धति का प्रयोग कर भारत ने विश्व की प्रथम जीनोम एडिटेड धान की दो प्रभेदों (डी.आर.आर. धान–100 और पूसा डी.एस.टी. धान–1) का विकास किया।

हमने जलवायु परिवर्तन को दृष्टिगत रखते हुए फसल सघनीकरण, फसल विविधिकरण, हाइड्रोपोनिक्स एवं एरोपोनिक्स को अपनाया। जलवायु अनुकूल खेती को अपनाते हुए फसल चक्र में पुनः श्री अन्न एवं ऐसे अन्य फसलों को शामिल किया जिससे विवेकहीन एवं अन्धाधुन्ध रसायनों के प्रयोग से ग्रसित मृदा एवं पर्यावरण, पोषण विहीन खाद्य सुरक्षा आदि जैसी समस्याओं को संबोधित किया जा सके। हमने कृषकों को और भी समृद्ध एवं खुशहाल बनाने के लिए उनके क्षेत्र विशेष के अनूठे कृषि उत्पादों को भौगोलिक उपदर्शन के माध्यम से पंजीकरण का कार्य शुरू किया। किसानों एवं वैज्ञानिकों द्वारा विकसित किये गए एवं किये जा रहे प्रभेदों के गैर मालिकाना दुरुपयोग से बचाने के लिए पी. पी. वी. एंड एफ.आर. कानून बनाया।

आज भारतीय कृषि एक बार फिर अंगराई लेते हुए कृषि के क्षेत्र में नित नए नवाचार कर रही है और अपने आप को भविष्य में भी स्थापित करने के लिए कटिबद्ध है। हमने कृषि के क्षेत्र में बड़े पैमाने पर रिमोट सेंसिंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, रोबोटिक्स, ड्रोन आधारित कृषि आदि का प्रयोग करके कृषि में डिजिटल क्रान्ति का बिगुल फूंक दिया है। अब वो दिन दूर नहीं जब हम घर बैठे यंत्रों के माध्यम से दूरस्थ कृषि कर सकेंगे। इसी प्रकार हम कृषि योग्य भूमि का विस्तार धरती ही नहीं अपितु चन्द्रमा और मंगल तक भी कर सकेंगे और यदि ऐसा हुआ तो बेशक धरती और चन्द्रमा के बीच अंतरिक्ष में कृषि की अनंत संभावनाएं होंगी। हाल ही में इसरो के एक्सिओम–4 मिशन पर भारतीय विज्ञान समुदाय के सात माइक्रोग्रेविटी प्रयोग किए जा रहे हैं, जिनमें कृषि एवं खाद्य सुरक्षा प्रमुख है। अंतरिक्ष कृषि में यह भारत की पहली कोशिश है जहां पारंपरिक भारतीय फसलों जैसे मूंग, मेथी, बीन्स, तिल, टमाटर, बैगन, चावल आदि को अंतरिक्ष में अंकुरण के लिए भेजा गया जिससे नाभिकीय गुरुत्वहीनता का, अंकुरण, जीन अभिव्यक्ति, पोषक तत्व संरचना आदि पर प्रभाव का अध्ययन किया जा सके। साथ ही स्पिरुलिना और क्लोरेल्ला जैसे सूक्ष्म शैवाल की वृद्धि, पोषण और जीन गतिविधि का अध्ययन कर इन्हें ऑक्सीजन उत्पादन, कचरा पुनर्चक्रण एवं पौष्टिकता के लिए संभावित जीवन–सहायक के रूप में उपयोग करने का प्रयास किया जा रहा है। सन 2047 के सूर्योदय तक भारतीय कृषि पुनः अपनी कृषि विरासत को चरम स्वरुप में प्राप्त कर, सोने की चिड़िया बन संभावनाओं के अनंत आकाश में उड़ान भरेगा। इस प्रकार हम अब उस राह पर चल पड़े हैं कि सन 2047 तक भारत कृषि के क्षेत्र में विश्वगुरु के रूप में पुर्स्थापित होगा। परन्तु हम यह ना भूलें कि समस्त कृषि विकास का मूल आधार किसी न किसी रूप में पुरातन भारतीय कृषि विरासत ही है।

मिथिलेश कुमार सिंह, सुधा नंदिनी, सुमीत कुमार सिंह, पुष्पा सिंह एवं सरिता कुमारी

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर, बिहार

डिजिटल क्रांति और उच्च मूल्य वाली खेती से समृद्ध होता भारतीय किसान– केंद्रीय कृषि बजट–2026

भारत सरकार की विकास रणनीति प्रमुख स्तंभों पर आधारित है,जिनमें आर्थिक विकास को बनाए रखना, विकास की नींव को सुदृढ़ करना, जन–केंद्रित विकास, विश्वास–आधारित शासन, व्यवसाय करने में सुगमता तथा जीवनयापन में सरलता, और राजकोषीय संतुलन शामिल हैं (GoI, 2026)। ये सभी स्तंभ मिलकर यह सुनिश्चित करते हैं कि देश संतुलित और समावेशी तरीके से आगे बढ़े तथा विकास दीर्घकालिक बना रहे। केंद्रीय बजट अनुमान 2026–27 (चित्र I) (GoI, 2026b) के अनुसार, भारत सरकार ने कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों के लिए ₹162.7 हजार करोड़ का प्रावधान किया है। यह बजट 2024–25 के वास्तविक व्यय तथा 2025–26 के संशोधित बजट अनुमान की तुलना में क्रमशः 5.21% और 7.12% की वृद्धि दर्शाता है, जो बढ़ती लागतों का संकेत देता है। यद्यपि कृषि बजट में कुल मिलाकर वृद्धि हुई है, फिर भी कुल केंद्रीय बजट में इसकी हिस्सेदारी पिछले वर्ष की तुलना में लगभग 0.39% कम हो गई है। केंद्रीय बजट 2026–27 भारत की कृषि नीति में उच्च मूल्य वाली फसलों, मूल्य संवर्धन, निर्यात प्रतिस्पर्धा, लॉजिस्टिक्स की दक्षता तथा सरल नियामकीय प्रक्रियाओं की दिशा में क्रमिक परिवर्तन को दर्शाता है।

वैश्विक भू–राजनीतिक तनाव, आपूर्ति श्रृंखला की समस्याएँ और कड़े सैनिटरी एवं फाइटोसैनिटरी (SPS) मानक कृषि विकास को प्रभावित कर रहे हैं। कृषि की वृद्धि काफी हद तक पोस्ट–हार्वेस्ट अवसंरचना, व्यापार–सक्षम सुविधाओं, शासन तंत्र और संस्थागत नीति ढांचे पर निर्भर करती है। कृषि के लिए केंद्रीय बजट उत्पादन–केंद्रित दृष्टिकोण से मांग–केंद्रित दृष्टिकोण की ओर परिवर्तन का संकेत देता है और उच्च मूल्य वाली कृषि, चंदन, मत्स्य पालन, भारतीय कोको और काजू कार्यक्रमों तथा भारत–विस्तार को विशेष महत्व देता है। इसके साथ ही, यह पशुपालन और बागवानी पर भी ध्यान केंद्रित करता है, विशेष रूप से कम उत्पादन देने वाले पुराने बागानों के पुनर्जीवन तथा अखरोट, बादाम और पाइन नट जैसी फसलों की उच्च घनत्व वाली खेती को प्रोत्साहित करने पर (चित्र II)।

भारत–विस्तार

भारत–विस्तार, जिसकी घोषणा केंद्रीय बजट 2026–27 में ₹150 करोड़ के प्रावधान के साथ की गई, एक बहुभाषी AI-संचालित प्लेटफॉर्म है जिसका उद्देश्य किसानों को व्यक्तिगत सलाह प्रदान करके बेहतर निर्णय लेने, कृषि उत्पादकता बढ़ाने और जोखिम कम करने में सहायता करना है। इसका फेज–I संस्करण 17 फरवरी 2026 को प्रारंभ किया गया, और यह विभिन्न सरकारी डिजिटल प्लेटफॉर्मों तथा ICAR और अन्य संस्थानों द्वारा विकसित वैज्ञानिक विधियों के संयोजन से विश्वसनीय, वास्तविक समय और स्थान–विशिष्ट कृषि सलाह प्रदान करता है। यह प्लेटफॉर्म दस महत्वपूर्ण केंद्रीय योजनाओं को एक साथ जोड़ता है, जैसे PM&KISAN, PMFBY, सॉइल हेल्थ कार्ड, किसान क्रेडिट कार्ड, एग्रीकल्चर इंफ्रास्ट्रक्चर फंड, पीएम कृषि सिंचाई योजना, पीएम–आशा, संशोधित ब्याज सबवेंशन योजना, पर ड्रॉप मोर क्रॉप तथा कृषि यंत्रीकरण उप–मिशन। यह सेवा हिंदी और अंग्रेजी में एक समर्पित हेल्पलाइन (155261), वॉयस–आधारित AI चौटबॉट, वेब पोर्टल और मोबाइल ऐप के माध्यम से उपलब्ध है।

उच्च मूल्य वाली कृषि की ओर सुदृढ़ीकरण

केंद्रीय बजट 2026–27 उच्च मूल्य वाली कृषि को लक्षित समर्थन प्रदान कर उत्पादकता बढ़ाने, फसल विविधीकरण और किसानों की आय में वृद्धि पर विशेष जोर देता है। नारियल, चंदन, कोको और काजू जैसी बागानी फसलों के लिए विशेष रूप से ₹350 करोड़ का प्रावधान किया गया है, खासकर तटीय क्षेत्रों में। सरकार ने नारियल संवर्धन योजना जैसे कार्यक्रम शुरू किए हैं, जिनका उद्देश्य कम उत्पादक वृक्षों को बेहतर पौधों से प्रतिस्थापित करना है, तथा भारत कोको और काजू कार्यक्रम के माध्यम से उत्पादन और निर्यात को अधिक प्रतिस्पर्धी बनाना है। इसके अतिरिक्त, भारतीय चंदन पारिस्थितिकी तंत्र को पुनर्जीवित करने हेतु एक नई परियोजना शुरू की गई है, जिसमें राज्य सरकारों के सहयोग से खेती में सुधार, उत्पादन लागत में कमी और पोस्ट–हार्वेस्ट प्रोसेसिंग को बेहतर बनाने पर जोर दिया गया है। बजट क्षेत्र–विशिष्ट उच्च मूल्य वाली फसलों को भी बढ़ावा देता है, जिनमें अगरवुड तथा उत्तर–पश्चिमी और उत्तर–पूर्वी पहाड़ी क्षेत्रों में बादाम, अखरोट और पाइन नट शामिल हैं, ताकि मूल्य संवर्धन को बढ़ावा मिले और युवाओं की भागीदारी को प्रोत्साहित किया जा सके। पुराने, कम उत्पादक बागानों के पुनर्जीवन और उच्च घनत्व खेती के विस्तार के लिए एक समर्पित कार्यक्रम भी प्रस्तावित किया गया है, जिससे उत्पादकता और किसानों की आय में वृद्धि होगी।

मत्स्य पालन में सतत उत्पादन को सशक्त बनाना– FPOs] स्टार्टअप्स और महिला–नेतृत्व वाले उद्यम

केंद्रीय बजट 2026–27 मत्स्य क्षेत्र को सुदृढ़ करता है, जिसमें अवसंरचना निर्माण, बाजारों से जुड़ाव और स्टार्ट–अप्स, महिला–नेतृत्व वाले समूहों तथा फिश एफपीओ (FPOs) के लिए मूल्य श्रृंखला के विकास पर विशेष ध्यान दिया गया है। 500 जलाशयों और अमृत सरोवरों का विकास अंतर्देशीय मत्स्य पालन को बढ़ावा देने में सहायक होगा। समुद्री निर्यात अत्यंत महत्वपूर्ण है, इसलिए इस प्रकार का युक्तिकरण स्रोत को अधिक प्रतिस्पर्धी बनाता है। समुद्री खाद्य प्रसंस्करण में उपयोग होने वाले कुछ इनपुट्स पर शुल्क–मुक्त आयात सीमा 1% से बढ़ाकर 3% कर दी गई है। योजना–वार आवंटन के अनुसार, प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY) का बजट 2025–26 (संशोधित अनुमान) में ₹1,500 करोड़ से बढ़कर 2026–27 (बजट अनुमान) में ₹2,500 करोड़ हो गया है। यह लगभग 66.67% की उल्लेखनीय वृद्धि है (GoI, 2026b)। यह महत्वपूर्ण वृद्धि दर्शाती है कि सरकार मत्स्य क्षेत्र के लिए अधिक अवसंरचना निर्माण, उत्पादकता बढ़ाने और किसानों की आय तथा निर्यात में इस क्षेत्र के समग्र योगदान को बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है।

आय वृद्धि और ग्रामीण रोजगार के लिए पशुपालन को सुदृढ़ करना

केंद्रीय बजट 2026–27 पशुपालन क्षेत्र पर विशेष ध्यान देता है, जिसे किसानों की आय बढ़ाने और ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन का एक महत्वपूर्ण माध्यम माना गया है। सरकार पशुधन क्षेत्र में उद्यमिता को प्रोत्साहित करने के लिए क्रेडिट–लिंक्ड सब्सिडी प्रदान करना, पशुधन व्यवसायों का आधुनिकीकरण करना तथा डेयरी, पोल्ट्री और पशुधन क्षेत्रों में एकीकृत मूल्य श्रृंखलाओं का निर्माण करना चाहती है। पशुधन

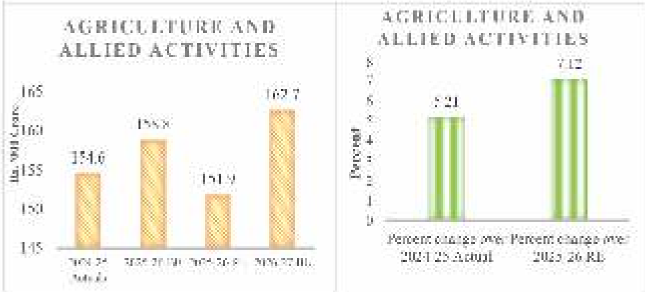

नोट– BE: बजट अनुमान, RE: संशोधित अनुमान
चित्र 1: कृषि बजट अनुमान तथा 2024–25 एवं 2025–26 (RE) के सापेक्ष परिवर्तन

किसान उत्पादक संगठनों (FPOs) को सशक्त बनाने और निजी क्षेत्र की भागीदारी के माध्यम से अवसंरचना के विस्तार पर विशेष जोर दिया गया है, जिसमें पशु चिकित्सा महाविद्यालय, अस्पताल, डायग्नोस्टिक प्रयोगशालाएँ और प्रजनन सुविधाएँ शामिल हैं। इसके साथ ही, ऋण–आधारित पूंजी सब्सिडी और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के माध्यम से 20,000 पशु चिकित्सा पेशेवर तैयार करने का लक्ष्य रखा गया है।

योजना–वार आवंटन के संदर्भ में, पशुधन स्वास्थ्य एवं रोग नियंत्रण कार्यक्रम 2025–26 (RE) के ₹1,980 करोड़ से बढ़कर 2026–27 (BE) में ₹2,010 करोड़ हो गया है, जो रोग निवारण, टीकाकरण और पशु स्वास्थ्य सेवाओं पर निरंतर ध्यान को दर्शाता है। डेयरी विकास में भी उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है, जो 2024–25 के ₹294 करोड़ से बढ़कर 2026–27 (BE) में ₹1,055 करोड़ हो गई है। यह दूध उत्पादन बढ़ाने, डेयरी अवसंरचना को सुदृढ़ करने और मूल्य संवर्धन को बढ़ावा देने के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। ये सभी उपाय सामूहिक रूप से उत्पादकता बढ़ाने, पशु स्वास्थ्य सुनिश्चित करने और ग्रामीण तथा अर्ध–शहरी क्षेत्रों में सतत आजीविका के अवसर सृजित करने का लक्ष्य रखते हैं।

कुशल कृषि परिवहन और बाजार पहुंच हेतु सतत लॉजिस्टिक्स को बढ़ावा देना

केंद्रीय बजट 2026–27 पर्यावरणीय रूप से टिकाऊ माल परिवहन पर जोर देता है, जिसके लिए लॉजिस्टिक्स अवसंरचना को मजबूत करने हेतु डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर (डंकुनी से सूरत को जोड़ते हुए), अगले पाँच वर्षों में 20 नए राष्ट्रीय जलमार्गों का संचालन, तथा वाराणसी और पटना में शिप रिपेयर इकोसिस्टम के विकास जैसी पहलें शामिल हैं। कोस्टल कार्गो प्रमोशन योजना का उद्देश्य सड़क और रेल परिवहन से अंतर्देशीय जलमार्गों और तटीय शिपिंग की ओर परिवहन के माध्यम में बदलाव को प्रोत्साहित करना है, जिससे उनकी हिस्सेदारी 2047 तक

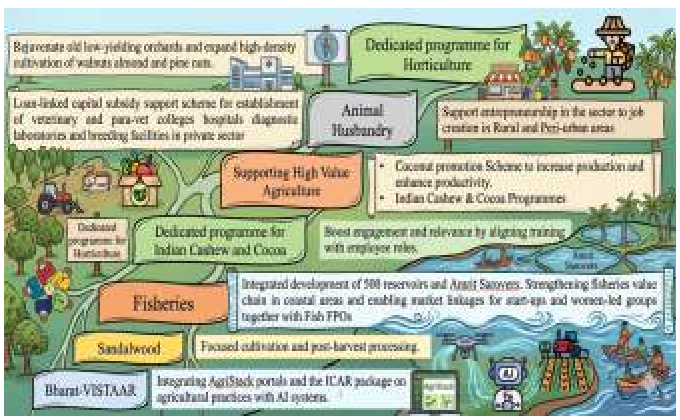

6% से बढ़ाकर 12% की जा सके।

ये उपाय विशेष रूप से नाशवंत कृषि उत्पादों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, जहाँ लॉजिस्टिक्स की दक्षता बाजार में सफलता निर्धारित करती है। वर्तमान में, कृषि उपज का बड़ा हिस्सा सड़क मार्ग से परिवहन किया जाता है, जो अक्सर समय लेने वाला, महंगा और विलंब के प्रति संवेदनशील होता है, जिससे बर्बादी और गुणवत्ता में गिरावट होती है। अंतर्देशीय जलमार्गों को बढ़ावा देकर तथा उत्पादन केंद्रों, प्रसंस्करण हब और निर्यात द्वारों के बीच बेहतर संपर्क स्थापित कर, यह बजट लॉजिस्टिक्स लागत को कम करने, विश्वसनीयता बढ़ाने और वैश्विक कृषि बाजारों में भारत की प्रतिस्पर्धात्मकता को सुदृढ़ करने का लक्ष्य रखता है।

निष्कर्ष

कृषि को अधिक प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए हमें एक समग्र दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है, जो उच्च मूल्य वाली फसल प्रणालियों पर केंद्रित हो तथा कृषि उत्पादन को आपूर्ति–आधारित से मांग–आधारित प्रणाली की ओर परिवर्तित करे। इसका अर्थ है नारियल, काजू, कोको, चंदन और विभिन्न नट्स जैसी फसलों में उत्पादन, उत्पादकता और मूल्य संवर्धन को बढ़ाना। साथ ही, निर्यात को अधिक प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए क्षेत्र–विशिष्ट सुधार करना भी आवश्यक है। भारत–विस्तार जैसे डिजिटल कृषि प्लेटफॉर्म का बढ़ता उपयोग किसानों को वास्तविक समय, स्थान–विशिष्ट और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) आधारित सलाह प्रदान कर सकता है, जिससे वे बेहतर निर्णय ले सकें, जोखिमों का प्रबंधन कर सकें और अपने खेतों में अधिक उत्पादकता प्राप्त कर सकें। इसके साथ ही, पोस्ट–हार्वेस्ट प्रबंधन, खाद्य प्रसंस्करण और गुणवत्ता प्रमाणन में निवेश के माध्यम से मूल्य संवर्धन को बढ़ावा देना आवश्यक है, ताकि कच्चे उत्पादों के निर्यात से उच्च मूल्य वाले प्रसंस्कृत उत्पादों की ओर बढ़ा जा सके। बेहतर अवसंरचना का निर्माण, फिश एफपीओ (FPOs), स्टार्ट–अप्स और महिला–नेतृत्व वाले उद्यमों को समर्थन, तथा एकीकृत मूल्य श्रृंखलाओं के विकास के माध्यम से मत्स्य पालन और ब्लू इकोनॉमी को सशक्त बनाया जा सकता है। इससे उत्पादकता और निर्यात क्षमता में वृद्धि होगी।

उद्यमिता, आधुनिकीकरण और रोग नियंत्रण पशुपालन एवं डेयरी क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं, जिससे लोगों को स्थिर रोजगार और आय सुनिश्चित हो सके। लागत कम करने और कटाई के बाद होने वाले नुकसान को घटाने के लिए लॉजिस्टिक्स और आपूर्ति श्रृंखला की दक्षता में सुधार करना आवश्यक है, जिसमें मल्टीमॉडल परिवहन प्रणालियों जैसे फ्रेट कॉरिडोर, अंतर्देशीय जलमार्ग और तटीय शिपिंग को शामिल करना होगा। इसके अतिरिक्त, गुणवत्ता, मानकों और SPS अनुपालन को मजबूत करने वाली परीक्षण, प्रमाणन और ट्रेसबिलिटी प्रणालियाँ वैश्विक बाजारों तक पहुंच बनाए रखने में सहायक होंगी। क्रेडिट–लिंक्ड सब्सिडी, पब्लिक–प्राइवेट पार्टनरशिप (PPP) और नीतिगत प्रोत्साहन निजी क्षेत्र की भागीदारी बढ़ाने में मदद कर सकते हैं, जिससे अवसंरचना और मूल्य श्रृंखलाओं में निवेश बढ़ेगा। साथ ही, समावेशी कृषि विकास को बढ़ावा देना आवश्यक है, जिसमें महिलाओं, युवाओं और एफपीओ को कृषि–व्यवसाय और मूल्य संवर्धन गतिविधियों में शामिल किया जाए। अंततः, केंद्र और राज्य सरकारों के बीच बेहतर समन्वय और उन्नत बाजार सूचना प्रणाली यह सुनिश्चित करेगी कि किसानों को कीमतों, मांग के रुझानों और व्यापार नीतियों के बारे में समय पर जानकारी मिल सके।

परदीप सिंह और लक्ष्मी रानी दुबे
कॉलेज ऑफ एग्रीबिजनेस मैनेजमेंट, सरदारकृष्णनगर दांतीवाड़ा कृषि विश्वविद्यालय, सरदारकृष्णनगर, बनासकांठा, भारत

जून महीने के कृषि कार्य

खरीफ ऋतु में ली जाने वाली फसलों के लिए जून का महीना बहुत महत्वपूर्ण है। जून माह के अंत तक विभिन्न भागो में वर्षा प्रारम्भ हो जाती है तथा खरीफ ऋतु में ली जाने वाली विभिन्न फसलों की बुवाई की तैयारी प्रारम्भ हो जाती है। जून माह में वर्षा प्राप्त होने पर खेत की प्रारम्भिक जुताइ कर देनी चाहिये तथा धान के लिये नर्सरी के लिये उचित स्थान का चुनाव करके क्यारियां बना लेनी चाहिये एवं उन्नत किस्मों की बुवाई की जा सकती है। निकास का उचित प्रबंधन भी आवश्यक है। मक्का, ज्वार, बाजरा, अरहर, उड़द और मूंग आदि की बुवाई के लिये भी उन्नत किस्मो के बीज की वयवस्था कर लेनी चाहिये। सब्जियों, फूल वाली फसलों की रोपाई और कुछ फल वृक्षों में कई प्रकार के सस्य कार्यो को भी किया जा सकता है। इस लेख में जून माह में किए जाने वाले विभिन्न प्रकार के कृषि कार्यो का विवरण प्रस्तुत है।

खरीफ फसलों की बुवाई हेतु भूमि की तैयारी

जून माह में विभिन्न फसलों की बुआई के लिये वर्षा आने या सिंचाई की सुविधा होने पर खेत की तैयारी प्रारम्भ कर देनी चाहिये।

भूमि की एक प्रथम जुताई डिस्क हैरो से करने के बाद फसलो की बुवाई हेतु एक या दो जुताई हैरो या कल्टीवेटर से करके पाटा लगाकर भूमि समतल कर देनी चाहिए।

अंतिम जुताई के साथ 5–10 टन कंपोस्ट या अच्छी प्रकार से सड़ी हुई गोबर की खाद एवं 25 किलोग्राम क्लोरोपाइरीफास पाउडर./हे. की दर से भूमि में अच्छी प्रकार से मिला कर विभिन्न फसलों की बुवाई हेतु जून माह मे तैयार कर लेना चाहिए।

धान की नर्सरी की तैयारी एवं बुवाई

- जून माह के शुरू मे धान की पौधशाला की तैयारी प्रारम्भ कर देनी चाहिये। उचित स्थान का चुनाव करके प्रत्येक क्यारी की 10 मीटर लंबाई और 1.25 मीटर चौड़ाई तथा दो क्यारी के बीच में लगभग 30 सेमी चौड़ाई की नाली रखनी चाहिए।
- क्यारी भूतल से 10 से 15 से. मी. ऊंचाई पर बनानी चाहिए तथा प्रत्येक क्यारी में 15 किलोग्राम कम्पोस्ट या गोबर की अच्छी सडी खाद के अतिरिक्त 100 ग्राम यूरिया, 225 ग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट तथा 40 ग्राम म्यूरेट ऑफ़ पोटाश प्रयोग करना चाहिये।
- बुआई के लिए किसी उन्नत किस्म का प्रमाणित बीज प्रयोग करना चाहिए। एक हेक्टेयर भूमि में रोपाई के लिए20–25 किलोग्राम पतला बीज (बासमती), 30–32 किलोग्राम माध्यम आकार का तथा 38–40 किलोग्राम मोटे आकार का बीज, तथा संकर धान के बीज की मात्रा 18–20 किग्रा. प्रति हे. रखनी चाहिए।
- धान की विभिन्न किस्में जैसे पूसा बासमती 1121, 1509, 1718, 1612, 1592, 1886, 1847, 1885, पी॰ आर॰ 115, 120, 121, 122, 123, 126, 127 पंजाब बासमती 3, 4, 5 आदि की बुवाई की जा सकती है।
- बुवाई से पहले बीज को कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत डब्लू.पी. की 3 ग्राम मात्रा से प्रति किलो बीज दर से उपचारित करें। इसके बाद पी.सी. बी. की 5 ग्राम तथा एजेटोबैक्टर कल्चर की 5 ग्राम मात्रा से प्रति किलो बीज दर से उपचारित करके 24–36 घंटे के लिए भिगोकर पूर्व अंकुरित बीज को स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 1 ग्राम तथा 10 ग्राम जेमिसन प्रति 10 किग्रा बीज की दर से उपचारित करके हिस्सा नर्सरी या पौधशाला में बुवाई करें।
- उगने तक नर्सरी को पुवाल से ढक देना चाहिए एवं समय–समय पर फुव्वारे से हल्का पानी देते रहे।
- पौधशाला में खरपतवार नियंत्रण के लिए बीज बुवाई के एक या दो दिन बाद तक ब्यूटाक्लोर 50 ईसी या पेंडीमेथालिन 30 ईसी की बाज़ार में उपलब्ध 3 लीटर मात्रा को 400 लीटर पानी में घोल बनाकर सामान रूप से छिडकाव करें।
- यदि पौधशाला में कीटों एवं बीमारियों का प्रकोप दिखाई दे तो आवश्यकतानुसार उचित कीट एवं व्याधिनाशक का छिड़काव करें। पौधशाला में कीटों का प्रकोप होने पर क्लोरपायरिफास अथवा फोसोलान कीटनाशी की 2 मिली मात्रा को प्रति लीटर की दर से छिडकाव करें।
- पौधशाला में यदि ऊपरी पत्तियाँ पीली होने के बाद सफ़ेद रंग की होकर सूख जाएँ तो यह लौह (आयरन) तत्व की कमी के लक्षण होते है। इसके उपचार हेतु 1 प्रतिशत फैरस सल्फेट + 0.5 प्रतिशत चूने के घोल का एक सप्ताह के अंतराल पर 2–3 बार छिडकाव करें यदि पौधों में जस्ते (ज़िंक) की कमी के लक्षण प्रतीत हों तो 0.5 प्रतिशत ज़िंक सल्फेट + 0.25 प्रतिशत बुझे हुए चूने के घोल का जरूरत के हिसाब से छिडकाव करें।

धान की पौध की रोपाई

1. धान की पौध 20–25 दिनो की होने पर रोपाई प्रारम्भ की जा सकती हैं। पौध की रोपाई के लिए लगभग 15 दिन पहले खेत में कम्पोस्ट या गोबर की खाद 8–10 टन प्रति हेक्टेयर की दर से भूमि में अच्छी प्रकार मिला देनी चाहिए तथा धान के लिये 150 किलोग्राम नाइट्रोजन, 60 कि.ग्रा. 150 किलोग्राम नाइट्रोजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस और 60 कि.ग्रा. पोटाश की आवश्यकता होती है।

- धान की रोपाई 20 से.मी. पर पंक्ति से पंक्ति की दूरी तथा 10–15 से. मी. पौधे से पौधे की दूरी रखते हुए करनी चाहिये। जिन कतारों मे पौधे मरे हो वहाँ दोबारा पौधा लगा देना चाहिए। इसके अतिरिक्त रोपाई के दो सप्ताह के बाद यूरिया की एक तिहाई मात्रा का प्रयोग करने से किल्लो की संख्या मे बढ़ोत्तरी होती है।

धान की सीधी बुवाई द्वारा खेती

- धान की खेती सीधी बुवाई विधि द्वारा करने से पौध तैयार करने व रोपाई करने की आवश्यकता नहीं होती है जिससे कम श्रम की जरुरत पड़ती है।
- भूमि की जुताई कम होने के कारण उसकी गुणवत्ता में गिरावट नहीं आती तथा इसके द्वारा पानी की लगभग 30 से 35 प्रतिशत तक बचत की जा सकती है।
- सीधी बुवाई द्वारा धान की खेती करने से फसल रोपाई द्वारा उगाने की अपेक्षा 10 से 15 दिन का कम समय लगता है। जिससे अगली फसल को बोने के लिए अधिक समय मिल जाता है।
- धान की सीधी बुवाई तैयार की गई भूमि में या संरक्षित खेती द्वारा पंक्तियों में करनी चाहिए। सीधी धान की बुवाई एरोबिक (वायवीय) विधि से धान उगाने के लिए उत्तरी भारत में इसकी बुवाई का उपयुक्त समय जून का महीना है।
- अधिक उपज देने वाली किस्मो को सीड ड्रिल अथवा देसी हल से सीधे खेत में बुवाई की जाती हैं। इस विधि द्वारा पंक्तियों में बुवाई करने पर 25–30 कि.ग्रा./हैक्टेयर बीज की आवश्यकता होती है, तथा बीज को पंक्ति से पंक्ति की दूरी 25 सें.मी. रखते हुवे बुवाई करनी चाहिए।

- फसल में आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहना चाहिए। यदि खेत में नमी पर्याप्त न हो तो फसल को पलेवा करने के बाद बोया जाना चाहिए अथवा बुवाई के तुरंत बाद एक हल्का पानी लगाना चाहिए।
- इसके उपरान्त जब फसल 20 से 25 दिन की हो जाए तो 2,4– डी (58:)की 1.72 लीटर मात्रा या बिस्पाइरीबैक की 250 ग्राम+अज़ीम सलफुरोन की 35 ग्राम बाज़ार में उपलब्ध मात्रा का छिड़काव करना चाहिए।
- यदि फिर भी खरपतवारो की समस्या हो तो फसल के 40–45 दिनों की होने पर हाथ द्वारा गुड़ाई कर देनी चाहिए।
- एरोबिक धान में सूत्र क्रमियों (निमैटोड्स) द्वारा फसल में होने वाली हानि को रोकने के लिए कार्बेफ्यूरॉन 3 जीकी 25–30 कि.ग्रा./है. मात्रा का प्रयोग करना चाहिए।
- यदि फसल के पौधों में पत्तियों की शिराओं के बीच पीलापन आना, धीरे–धीरे संपूर्ण पत्तियों का पीला हो जाना और अंततः पौधों के शेष भागों का पीला हो जाना आदि लक्षण दिखाई दे तो उनमे लौह तत्व की कमी को पूरा करने के लिए 2 प्रतिशत फेरस सल्फेट के घोल का कल्ले फूटने के उपरांत 15 दिन के अंतराल पर 2–3 बार छिड़काव करना चाहिए।

खरीफ ऋतु मे बाजरे की बुवाई

- जून माह मे वर्षा प्रारम्भ होने पर बाजरा कीफसलकी बुवाई प्रारम्भ की जा सकती है। दाने के लिये विभिन्न उन्नत किस्मों जैसे पूसा कम्पोज़िट 701, 612, 443, 383, पूसा 1201(एम् एच 1849), एच एच बी 299, ए एच बी 1200, एम् पी 7878, आर एच बी 233, 234, पी बी 1756 , जी के 1116, राज 171, जी आई सी के वी 96752, पी सी बी 164, एच सी 10, 20, एच एच बी 94 ,117, 121,146, आर एच बी 121, एम् पी एम् एच 17, एच एच बी 67 इम्प्रोवेड को बुवाई के लिए प्रयोग किया जा सकता है।
- चारे के लिए पूसा कम्पोज़िट 701, 612, 443, 383, पूसा 322, 323, 1201 (एम् एच 1849),राज बाजरी चरी –2, पी सी बी –141, नरेंद्र चारा बाजरा –3, जी एफ़ बी –3, ए वी के बी–19 इत्यादि किस्में उपयुक्त है।
- बाजरे की फसल दाने के लिए उगाने हेतु बीज की मात्रा 3 से 5 कि. ग्रा./हे तथा चारे हेतु 5–7 कि.ग्रा./हे.पर्याप्त होती है।
- बीज की बुआई सीडड्रिल या हल के द्वारा पंक्ति से पंक्ति की दूरी 45से60 सेमी एवम पौधे से पौधे की दूरी 10–15 से मी रखते हुवे पंक्तियों में करनी चाहिए।
- सिंचित फसल में उर्वरकों की मात्रा मे नाइट्रोजन60 कि.ग्रा./हे., फॉस्फोरस 60 कि.ग्रा./हे. तथा पोटाश 40 कि.ग्रा./हे. प्रयोग करनी चाहिए। वर्षा आधारित फसल के लिए 40 कि.ग्रा./हे नाइट्रोजन, 50 कि.ग्रा./हे. फॉस्फोरस तथा 40 कि.ग्रा./हे पोटाश की मात्रा पर्याप्त होती है ।
- इसके बाद जब फसल 25 –30 दिन की जब फसल हो जाए तो एक गुड़ाई या 2 ,4–डी (58 प्रतिशत) की बाज़ार में उपलब्ध 1.70 लीटर मात्रा को 400 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हेक्टेयर की दर से सामान रूप से छिड़काव करना चाहिए।

मक्का की बुआई

- मक्का की बुआई के लिए उन्नत किस्मों जैसे दाने के लियेः हाइब्रिडः ए एच 421, ए एच 58, पी एम एच 1, 7, 8, 10, पूसा कम्पोज़िट 4 ,3,एच क्यू पी एम 1,5 , 7, शक्तिमान 1 ,2, 3 ,4 तथा बेबी कॉर्न की एच एम् 4, जी 5414,5416,5417 (हाइब्रिड), वी एल बेबी कॉर्न 1,एवं स्वीटकॉर्न की एच एस सी 1 (हाइब्रिड), माधुरी, विन ऑरेंज , प्रिया (संकुल) तथा एवं किस्मों को बुवाई के लिए प्रयोग किया जा सकता है।
- इसके अतिरिक्त पॉपकॉर्न के लिए जवाहर, अम्बर, पर्ल एंड वी एल पॉपकॉर्न तथा चारे के लिए अफ्रीकन टाल,जे 1006, प्रताप चरी–6 आदि उपयुक्त किस्में है।
- मक्का की बुआई के लिए विभिन्न प्रजातियों के लिए अलग–अलग बीज की मात्रा अलग अलग होती है जैसे दाने एवं भुट्टे हेतु20 कि. ग्रा./हे. स्वीटकॉर्न हेतु 8 कि.ग्रा./हे., बेबी कॉर्न हेतु 25 कि.ग्रा./हे जैसे, पॉपकॉर्न हेतु 12 कि.ग्रा./हे. तथा चारे हेतु 40–50 कि.ग्रा. /हे. बीज की मात्रा प्रयोग करनी चाहिए।
- बुआई से पहले बीजोपचार के लिए कार्बेन्डाजिम 3ग्राम/कि. ग्रा. या एप्रन 35 एस डी 4 ग्रा. या एग्रोसन जी एन की 4 ग्राम तथा इमिडाक्लोप्रिड 3 मि.ली./कि. ग्रा.बीज की दर से उपचारित करना चाहिए।
- फसल को फ्लैट सरफेस यारिज एंड फोर्रो, या ब्रॉड बेड़ एंड फोर्रो पद्धति में सीड ड्रिल या हल के द्वारा पंक्ति से पंक्ति की दूरी 60 सेमी एवम पौधे से पौधे की दूरी 20 से मी रखते हुवे पंक्तियों में बुवाई करनी चाहिए। मक्का के लिए उचित पोषक तत्वों का प्रबंधन बहुत ही आवश्यक है।
- खेत में बुवाई से पहले 10 टन गोबर या कम्पोस्ट की खाद को मिट्टी में अच्छी प्रकार मिला देना चाहिए। इसके बाद मक्का की फसल को 150 कि.ग्रा./हे. नाइट्रोजन,80 कि.ग्रा./हे.फॉस्फोरस एवं 60 कि. ग्रा./हे पोटेशियम की आवश्यकता होती है।
- नाइट्रोजन की आधी, फॉस्फोरस एवं पोटैशियम की सम्पूर्ण मात्रा को बुवाई के साथ तथा शेष आधी नाइट्रोजन को दो भागों में बुवाई के 30–35 एवं 50–55 दिन बाद खेत में उचित नमी होने पर देनी चाहिए।

सब्जियां

- अगेती गोभी की नर्सरी की बुवाई जून के प्रथम सप्ताह में करने के उपरान्त उसकी रोपाई जून माह के अंतिम सप्ताह में पूर्ण कर लेनी चाहिए। रोपाई पूर्व खेत में 300 कुंतल कम्पोस्ट या गोबर की खाद, 60 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 50 कि.ग्रा. फास्फोरस और 50 कि.ग्रा. पोटाश/है. की दर से प्रयोग करे। रोपाई मेड़ों के ऊपर 40 से.मी. X 30 से.मी. के अंतराल पर करनी चाहिए। अगेती फूल गोभी की किस्मे में पूसा दिपाली, अर्ली कुवारी, अर्ली पटना, पन्त गोभी– 2, पन्त गोभी– 3, पूसा कार्तिक, पूसा अर्ली सेन्थेटिक, पटना अगेती, सेलेक्सन 327 एवं सेलेक्सन 328 आदि प्रमुख है।
- जिन किसानों ने मिर्च की नर्सरी तैयार कर ली है और वह लगभग 40 से 45 दिन की हो गई है तो उसकी रोपाई पंक्ति से पंक्ति की दूरी 60 सेंटीमीटर तथा पौधे से पौधे की दूरी 60 सेंटीमीटर रखते हुवे करनी चाहिए।
- जून के माह में प्याज की पौध की बुवाई करने के बाद इसकी रोपाई जून के अंतिम सप्ताह तक अवश्य सम्पन्न कर लेनीं चाहिए। रोपाई सामान्यत 15 से.मी. X 30 से.मी. पौधे से पौधे एवं पंक्ति से पंक्ति के अंतराल पर करना अधिक उपयोगी होगा और रोपाई के समय 50 कि.ग्रा. फास्फोरस और 50 कि.ग्रा. पोटाश/है. का प्रयोग करना चाहिए।

राज सिंह – मंजेश कुमार गौतम
सस्य विज्ञान संभाग
भा.कृ.अनु.प.–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली110012

रसोई

ठंडी और हेल्दी आम पन्ना

गर्मी और लू से बचाव का देसी उपाय

गर्मी के मौसम में शरीर को ठंडक देने और लू से बचाने के लिए आम पन्ना एक बेहद लोकप्रिय और पारंपरिक भारतीय पेय है। कच्चे आम से बनने वाला यह ड्रिंक स्वादिष्ट होने के साथ शरीर में पानी और ऊर्जा की कमी भी पूरी करता है। गांवों से लेकर शहरों तक, गर्मियों में आम पन्ना को प्राकृतिक एनर्जी ड्रिंक माना जाता है।

सामग्री

कच्चे आम– 3

चीनी या गुड़– 4 से 5 चम्मच

भुना जीरा पाउडर– 1 चम्मच

काला नमक– स्वादानुसार

पुदीना पत्तियां– थोड़ी सी

ठंडा पानी– 4 से 5 गिलास

बर्फ– जरूरत अनुसार

बनाने की विधि

सबसे पहले कच्चे आमों को अच्छी तरह धो लें। अब इन्हें कुकर या बर्तन में तब तक उबालें जब तक आम पूरी तरह नरम न हो जाएं। ठंडा होने के बाद आम का छिलका हटाकर उसका गूदा निकाल लें।

अब मिक्सर में आम का गूदा, चीनी या गुड़, पुदीना पत्तियां, भुना जीरा और काला नमक डालकर अच्छी तरह पीस लें। तैयार मिश्रण को एक बड़े बर्तन में निकालें और उसमें ठंडा पानी मिलाएं। स्वाद के अनुसार पानी कम या ज्यादा किया जा सकता है।

इसके बाद गिलास में बर्फ डालकर ठंडा–ठंडा आम पन्ना सर्व करें। चाहें तो ऊपर से थोड़ा भुना जीरा और पुदीना डालकर सजाएं।

क्यों फायदेमंद है आम पन्ना?

आम पन्ना शरीर को ठंडक पहुंचाने के साथ डिहाइड्रेशन से बचाता है। इसमें मौजूद विटामिन C और मिनरल्स शरीर की ऊर्जा बनाए रखने में मदद करते हैं। यह पाचन को भी बेहतर बनाता है और गर्मियों में लू लगने के खतरे को कम करने में सहायक माना जाता है।

गर्मी के दिनों में रोज एक गिलास आम पन्ना शरीर को तरोताजा रखने का आसान और स्वादिष्ट तरीका हो सकता है।

भीषण गर्मी में लू से बचाव के आसान और असरदार उपाय

गर्मी का मौसम अपने साथ तेज धूप, गर्म हवाएं और कई स्वास्थ्य समस्याएं लेकर आता है। मई–जून में तापमान लगातार बढ़ने से लू लगने का खतरा काफी बढ़ जाता है। खासकर किसान, मजदूर, बाहर काम करने वाले लोग, बच्चे और बुजुर्ग इसकी चपेट में जल्दी आते हैं। कई बार लू सामान्य कमजोरी से शुरू होकर गंभीर बीमारी का रूप भी ले सकती है। ऐसे में जरूरी है कि समय रहते सावधानी बरती जाए और शरीर को गर्मी के दुष्प्रभाव से बचाया जाए।

लू तब लगती है जब शरीर लंबे समय तक तेज धूप और गर्म हवाओं के संपर्क में रहता है। अधिक गर्मी के कारण शरीर का तापमान संतुलित नहीं रह पाता और शरीर में पानी व जरूरी लवणों की कमी होने लगती है। इससे सिर दर्द, चक्कर, कमजोरी, उल्टी, तेज बुखार और बेहोशी जैसी समस्याएं हो सकती हैं।

गर्मी में सबसे जरूरी है शरीर को हाइड्रेट रखना। दिनभर पर्याप्त मात्रा में पानी पीना चाहिए, भले ही प्यास कम लगे। घर से बाहर निकलते समय पानी की बोतल साथ रखना अच्छी आदत है। नींबू पानी, छाछ, लस्सी, बेल का शरबत और नारियल पानी जैसे पेय शरीर को ठंडक देने के साथ पानी की कमी भी पूरी करते हैं। ओआरएस का सेवन भी फायदेमंद माना जाता है।

तेज धूप से बचना लू से सुरक्षा का सबसे आसान तरीका है। दोपहर 12 बजे से शाम 4 बजे के बीच धूप सबसे अधिक तेज होती है, इसलिए इस समय बाहर निकलने से बचना चाहिए। यदि जरूरी काम हो तो सिर को गमछे, टोपी, दुपट्टे या छाते से ढककर ही बाहर जाएं। हल्के रंग और सूती कपड़े पहनने से शरीर को आराम मिलता है और पसीना जल्दी सूखता है।

खानपान का भी गर्मी में विशेष महत्व होता है। ज्यादा तला–भुना और मसालेदार भोजन शरीर में गर्मी बढ़ा सकता है। इसके बजाय तरबूज, खरबूजा, खीरा, ककड़ी, दही और मौसमी फलों का सेवन करना चाहिए। खाली पेट धूप में निकलने से भी बचना चाहिए, क्योंकि इससे शरीर जल्दी कमजोर हो सकता है।

किसानों और खेतों में काम करने वाले लोगों को गर्मी में अतिरिक्त सावधानी बरतने की जरूरत होती है। सुबह और शाम के समय खेतों में काम करना ज्यादा सुरक्षित माना जाता है। लगातार काम करने के बजाय बीच–बीच में आराम करना चाहिए और शरीर में पानी की कमी नहीं होने देनी चाहिए। ट्रैक्टर या मशीनों के साथ काम करते समय सिर ढककर रखना और हल्के कपड़े पहनना लाभदायक होता है।

यदि किसी व्यक्ति को लू लग जाए तो उसे तुरंत छायादार या ठंडी जगह पर ले जाना चाहिए। शरीर पर ठंडे पानी की पट्टी रखनी चाहिए और धीरे–धीरे पानी या ओआरएस पिलाना चाहिए। गंभीर स्थिति होने पर तुरंत डॉक्टर से संपर्क करना जरूरी है।

गर्मी के मौसम में थोड़ी सी सावधानी बड़ी परेशानी से बचा सकती है। सही खानपान, पर्याप्त पानी, धूप से बचाव और नियमित आराम जैसी छोटी–छोटी आदतें शरीर को स्वस्थ रखने में मदद करती हैं। जागरूकता और सतर्कता ही लू से बचने का सबसे बड़ा उपाय है।

प्युपॉन
एक तगड़ा वार...
खत्म सोयाबीन के खरपतवार
BAYER
PUPON
लंबे समय तक असरकारक बहुआयामी खरपतवार नियंत्रण
बेहतरीन फसल सुरक्षा वाले गुण
सहुलियत भरा आसान इस्तेमाल
बेहतरीन फॉर्म्युलेशन
3
तरीके से काम करनेवाला बहुआयामी खरपतवार नियंत्रण

ट्रान्स
परिवर्तन में आपका साथी
BAYER
Trance
माहू
हरा तेला
सफेद मक्खी निम्फ
चिंताओं का विश्वास में
एक संपूर्ण समाधान
उम्मीदों का हकीकत में
बेहतर स्वस्थ फसल
मेहनत का सफलता में
किफायती
चूसक कीटों का स्पेशलिस्ट

तनजोर
Saffire
GROW TOGETHER
तनजोर सब संभाल लेगा
सही है
BENSULFURON METHYL 4.8% +
PRETILACHLOR 48% OD
TANJOR™
तनजोर
HERBICIDE
Saffire
खरपतवारों को रोकने की सबसे खास तकनीक
खरपतवारों पर लंबा नियंत्रण
धान में ज़्यादा फूटाव और अधिक पैदावार
धान का नया ताकतवर खरपतवार नाशक
powered by
Banyan
Technology
विश्वसनीय तकनीक पर आधारित
आइये बढ़ें
सबके साथ, एक साथ

आपकी मेहनत और जीत का सच्चा साथी।
खरपतवारों पर नियंत्रण
हरे-भरे और स्वस्थ तने
वजानदार और चमकदार दाने
Novlect®
Pexalon®
Be1
Galileo® Way
नोवलेक्ट®
रिनस्कोर® एक्टिव
खरपतवारनाशक
पेक्सालोन®
पायराक्साल्ट® एक्टिव
कीटनाशक
गैलीलियो® वे
ऑनमिश™ एक्टिव
फफूँदीनाशक
CORTEVA®
agriscience
www.corteva.in
™ ® Trademarks of Corteva Agriscience and its affiliated companies. © 2026 Corteva.

Supported By:
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
Indian Council of Agricultural Research
Ministry of Agriculture and Farmers' Welfare

Organized By
Radeecal
communications

In Association with

International Year of the
WOMAN FARMER
2026

Agritech Bharat

Tech-Driven Farming for Tomorrow's Bharat

02 03 04 05 DEC 2026

Yashobhoomi,
IICC Dwarka, New Delhi, India

Focused Sector

- Tractors & Harvesting Equipment
- Agri Drones, Robotics & Precision Farming Tools
- Irrigation & Water Management Systems
- Soil Testing & Crop Monitoring Solutions
- Seed, Fertilizer & Crop Nutrition Technologies
- Post-Harvest Machinery & Packaging
- Cold Chain, Logistics & Storage
- Agri-Tech Startups & Innovations
- Livestock, Poultry, and Dairy Equipment
- Tech based Farming Using IoT, AI & Automation

Participate As:
Sponsor | Exhibitor | Delegate

Concurrent Events
AGRI COMPONENTS ASIA
DLP EXPO ASIA
Grainmach

BOOK YOUR STALL NOW !

+91 90990 91102
sales@agritechbharat.com
www.agritechbharat.com

Supported By
GPDFA
IGMA

RNI No. DELHIN/2014/59516

Delhi Postal Regd. No.:DL(E)-20/5477/2024-26
Published on 5th & Posted on 7th - 8th of Every Month

जिंक की महत्वता

फसल उत्पादन में जिंक तत्व का महत्वपूर्ण योगदान है। पौधों में जिंक की कमी से फसल उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है जिससे अनाज उत्पादन कम होता है। जिंक की कमी वाले क्षेत्रों में फसल उत्पादन में 40 प्रतिशत तक की कमी देखने को मिली है जिसके कारण किसान भाइयों की आर्थिक स्थिति पर भी असर पड़ता है।

संतुलित उर्वरक उपयोग में जिंक को बढ़ावा देने की आवश्यकता है क्योंकि इससे मृदा स्वास्थ्य व फसलों के उत्पादन में बढ़ोत्तरी होती है जिसके फलस्वरूप खाद्य व पोषण सुरक्षा सुनिश्चित होती है।

जिंक पोषक तत्व को बढ़ावा देने से मृदा, फसल व मनुष्यों में जिंक की कमी की पूर्ति होती है। इस सन्दर्भ में दीर्घकालीन स्थायी समाधान के लिए जिंक युक्त उर्वरक अनाज उत्पादन में अति आवश्यक है।

जिंक उर्वरक के बारे में अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:–

Zinc ...essential for life

जिंक न्यूट्रियंट इनिशिएटिव
इंटरनैशनल जिंक एसोसिएशन
G1 & G5, ग्राउंड फ्लोर, एलाइड भवन
लोकल शॉपिंग कॉम्पलैक्स, कम्यूनिटी सेंटर, पुष्प विहार
नई दिल्ली – 110 062, भारत
+91-29960040 I sdas@zinc.org I www.zinc.org/crops

Zinc Nutrient Initiative